शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 171 पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 17 जुलाई 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

भाजपा ने पहली बार देश को पिछड़ा वर्ग का प्रधानमंत्री दिया: शाह

हरियाणा कांग्रेस अगर सत्ता में आई तो पिछड़ा वर्ग का आरक्षण छीनकर मुस्लिमों को दे देगी: शाह

सामूहिक निकाह का एलान कर बैकफुट पर आए तौकीर रजा खां

बरेली

इत्तेहाद ए मिल्लत काउंसिल (आईएमसी) के अध्यक्ष मौलाना तौकीर रजा खां की ओर से प्रस्तावित 'मतांतरितों के सामूहिक निकाह कार्यक्रम' ने नया विवाद खड़ा कर दिया। मंगलवार को हिंदू संगठनों ने मौलाना के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया। पदाधिकारियों ने कहा कि खुलेआम हिंदुओं के मतांतरण और निकाह का दावा कर मौलाना तौकीर माहौल खराब कर रहे हैं। उनकी गिरफ्तारी की मांग करते हुए प्रदर्शन हुए, डीएम रविंद्र कुमार को ज्ञापन सौंपे गए। दूसरी ओर, शासन ने स्थानीय अधिकारियों से पूरे प्रकरण की रिपोर्ट मांगी है। गहमाहगमी के बीच एसएसपी अनुराग आर्य ने बयान जारी किया कि जिले का माहौल खराब करने का प्रयास हुआ तो सख्ती से निपटेंगे। खुफिया टीमें भी जांच कर रही हैं। शाम को आयोजक बैकफुट पर आए और कार्यक्रम स्थगित कर दिया। मौलाना तौकीर रजा खां ने सोमवार को कहा था कि 23 हिंदू युवक-युवतियां संपर्क में हैं। इनमें से अधिकतर युवा मतांतरण कर अपनी मर्जी से लिव इन इन रिलेशनशिप में रह रहे हैं। अब वे सार्वजनिक रूप से इसे स्वीकारना चाहते इसलिए सामूहिक निकाह कराएंगे। पहले चरण में 21 जुलाई को पांच जोड़े निकाह करेंगे।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने महेंद्रगढ़ में पिछड़ा वर्ग सम्मेलन को किया संबोधित

हरियाणा में कांग्रेस आई तो छीन लेगी पिछड़ा वर्ग का आरक्षण: शाह

नारनौल

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आरक्षण के मुद्दे पर कांग्रेस को घेरते हुए कहा है कि हरियाणा कांग्रेस अगर सत्ता में आई तो पिछड़ा वर्ग का आरक्षण छीनकर मुस्लिमों को दे देगी। कांग्रेस कनार्टक में भी यही कर रही है और अब अगला निशाना हरियाणा है। शाह ने कहा कि भाजपा ने देश को पहली बार पिछड़ा वर्ग से प्रधानमंत्री दिया है। केंद्रीय मंत्री अमित शाह मंगलवार को केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में पिछड़ा वर्ग सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। शाह ने कहा कि कांग्रेस के मंसूबों को हरियाणा में किसी भी सूरत में कामयाब नहीं होने दिया जाएगा। भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता बीसी समाज की रक्षा करेगा। उन्होंने कहा कि भाजपा ने देश को पहली बार पिछड़ा वर्ग से प्रधानमंत्री दिया है। शाह ने कहा कि हरियाणा के जवान, किसान और खिलाड़ियों की जितनी तारीफ की जाए कम है। हरियाणा के युवा सेना में जाते हैं। सबसे ज्यादा मेडल यहीं के धाकड़ युवा लाते हैं। देश का अन्न भंडार भरने वाला भी हरियाणा का किसान है। आज जिस भूमि पर मैं हूं इस भूमि की माताओं ने सबसे ज्यादा अनुपात में युवाओं को सेना में भेजने का काम किया है।

दस में से सात मेडल यहां का युवा लेकर आता है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की जनता ने वर्ष 2014 और वर्ष 2019 में दोनों बार कमल खिलाकर आशीर्वाद दिया और वर्ष 2024 में भी दिया।

पिछड़ा वर्ग ने हमेशा भाजपा का साथ दिया है: शाह

अब विधानसभा चुनाव में भी आशीर्वाद मिलेगा, यह मुझे पूरा विश्वास है। पिछड़ा वर्ग ने हमेशा भाजपा का साथ दिया है। भाजपा का कर्तव्य बनता है कि हम उससे काम ज्यादा आपके लिए करें। उन्होंने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने तीन निर्णय लिए हैं। क्रीमी लेयर की सीमा 6 से बढकर 8 लाख किया है। 8 लाख में वेतन भी नहीं गिना जाएगा और कृषि से आय भी नहीं गिनी जाएगी। पंचायत में रिजर्वेशन बदलने का फैसला किया है। पंचायत में 8 प्रतिशत रिजर्वेशन आठ ग्रुप ए के लिए थी, अब ग्रुप डी के लिए 5 प्रतिशत शुरू हो जाएगा। केन्द्रीय मंत्री शाह ने कहा कि गांव में लाल डोरे के भीतर मालिकाना हक देने वाला पहला राज्य हरियाणा बना। पढ़ी-लिखी पंचायत देने वाला हरियाणा बना। पंचायत में महिलाओं को आरक्षण देने वाला पहला राज हरियाणा बना। इसी प्रकार पानी के नल कनेक्शन देने वाला पहला राज्य हरियाणा बना। उन्होंने कांग्रेस पर प्रहार करते हुए कहा कि कांग्रेस की सरकार में भ्रष्टाचार और गुंडाराज बढ़ जाता है। हरियाणा में हुड्डा आते हैं तो बीसी की बात करते हैं, लेकिन कांग्रेस हमेशा ओबीसी व पिछड़े की विरोधी रही है। शाह ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र हुड्डा को चैलेंज देते हुए कहा कि आजकल कांग्रेस वाले हिसाब मांग रहे हैं। मैं पाई-पाई का हिसाब लाया हूं। वे आंकड़ों के साथ मैदान में आएं। हमारे कार्यकर्ता राज्य की हर पंचायत में जाकर सरकार का हिसाब देंग

कांग्रेस को भी अपने कुशासन और विकास न करने का हिसाब देना होगा।

दीपेंद्र ने प्रदेश में शुरू की यात्रा तो सोनिया गांधी से मिले भूपेंद्र हुड्डा

चंडीगढ़

कांग्रेस के लोकसभा सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने प्रदेश में हिसाब मांगों यात्रा शुरू की है।वहीं हरियाणा की राजनीति पर चर्चा करने के लिए मंगलवार को पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने दिल्ली में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी से मुलाकात की। सोनिया गांधी से मुलाकात के बाद मीडिया से बातचीत में हुड्डा ने कहा कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ मुलाकात होती रहती है। इस मुलाकात को शिष्टाचार भेंट बताते हुए उन्होंने कहा कि हरियाणा के राजनीतिक हालात पूरी तरह से कांग्रेस के फेवर में हैं। इस बार के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाएगी। लोकसभा चुनाव के नतीजों से स्पष्ट कर दिया है कि हरियाणा के लोगों ने भाजपा को सत्ता से बाहर करने का मन बना लिया है। उन्होंने कहा कि हरियाणा की प्रत्येक लोकसभा सीट पर ही नहीं बल्कि सभी विधानसभा सीटों पर भी कांग्रेस का वोट प्रतिशत बढ़ा है। भाजपा को हर मोर्चे पर विफल बताते हुए हुड्डा ने कहा कि भाजपा ने 2014 और 2019 में किए अपने चुनावी वादों को भी पूरा नहीं किया। कांग्रेस ने 2005 और 2009 में किए अपने सभी वादों को तो पूरा किया ही था। इससे भी बढकर हरियाणा के लोगों के लिए फैसले किए थे। प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति निवेश में हरियाणा देशभर में पहले पायदान पर था।

नगालैंड सरकार की याचिका पर केंद्र को नोटिस

नई दिल्ली

नगालैंड में नागरिकों की हत्या के आरोपित 30 सैन्यकर्मियों के विरुद्ध अभियोजन की अनुमति दिए जाने से इन्कार पर राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। ये सैन्यकर्मी 2021 में उग्रवादियों के विरुद्ध एक अभियान में 13 नागरिकों की हत्या के आरोपित हैं। राज्य सरकार की याचिका पर शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार और रक्षा मंत्रालय से जवाब मांगा है।

सरकार ने नहीं दी थी अभियोजन की अनुमति

प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पाडीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने प्रदेश सरकार की दलीलों पर गौर किया और केंद्र एवं रक्षा मंत्रालय को नोटिस जारी किया। पीठ ने नगालैंड की याचिका अब तीन सितंबर के लिए सूचीबद्ध की है।

पंतनगर हो या इंद्रप्रस्थनगर, हर निवासी की सुरक्षा और संतुष्टि हमारी जिम्मेदारी : मुख्यमंत्री

नदी पुनर्जीवन परियोजना से प्रभावित परिवारों से बोले मुख्यमंत्री योगी, निश्चिंत रहें, खुश होकर घर जाएं

लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बीते एक माह से अपने सपनों के घर को तोड़े जाने की भ्रामक खबरों से

परेशान पंतनगर, इन्द्रप्रस्थनगर एवं रहीमनगर आदि क्षेत्रों के लोगों की समस्या का समाधान कर दिया है।

मंगलवार को मुख्यमंत्री आवास पहुंचे प्रभावित परिवारों के भय और भ्रम का समाधान करते हुए ने मुख्यमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि पंतनगर हो या इंद्रप्रस्थ नगर, वहां निवासरत लोगों की सुरक्षा और शांतिपूर्ण जीवन के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। संबंधित प्रकरण में एनजीटी के आदेशों के क्रम में नदी के फ्लड प्लेन जोन का चिह्नांकन किया गया है। फ्लड प्लेन जोन में निजी भूमि भी सम्मिलित है लेकिन निजी भूमि को खाली कराने की न तो वर्तमान में कोई आवश्यकता है और न ही कोई प्रस्ताव है। निजी भूमियों में बने निजी भवनों के ध्वस्तीकरण का कोई विषय विचाराधीन नहीं है। यही नहीं, उन्होंने कहा कि फ्लड प्लेन जोन चिह्नीकरण के दौरान भवन निमार्णों पर लगाये गये संकेतों से आमजन में भय और भ्रम फैला है।

केंद्रीय बजट 2024 से पहले सीतारमण की मौजूदगी में हलवा सेरेमनी का आयोजन

नई दिल्ली

केंद्रीय बजट 2024-25 के लिए बजट तैयार करने की प्रक्रिया का अंतिम चरण मंगलवार को यहां वित्त मंत्रालय (नॉर्थ ब्लॉक) में केंद्रीय वित्त और कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण की उपस्थिति में पारंपरिक हलवा सेरेमनी शुरू हुआ। सीतारमण 23 जुलाई को केंद्रीय बजट 2024-25 संसद में पेश करेंगी। वित्त मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि हलवा सेरेमनी का आयोजन केंद्रीय वित्त और कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण की उपस्थिति में नॉर्थ ब्लॉक में किया गया। सीतारमण ने इस अवसर पर उपस्थित बजट प्रेस

के सदस्यों और वित्त मंत्रालय के कर्मचारियों को हलवा वितरित किया। बजट को अंतिम रूप देने से पहले हर वर्ष एक परंपरा के तहत हलवा समारोह (हलवा सेरेमनी) का आयोजन किया जाता है।

बजट से पहले क्यों होता है हलवा सेरेमनी-

केंद्रीय बजट पेश करने से ठीक पहले एक हलवा सेरेमनी का आयोजन किया जाता है। यह हलवा समारोह इस बात का परिचायक होता है कि बजट को अंतिम रूप दिया जा चुका है और इसके छपने का काम शुरू हो चुका है। इस समारोह में वित्त मंत्री की ओर से बजट तैयार करने वाले वित मंत्रालय के अधिकारी और कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है। मंत्रालय के मुताबिक 23 जुलाई, 2024 को संसद में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा बजट पेश करने के उपरांत भाषण पूरा होने पर केंद्रीय बजट 2024-25 का बजट दस्तावेज एंड्रॉइड और एप्पल ओएस दोनों प्लेटफार्मों पर उपलब्ध होगा। इसके साथ ही यह "यूनियन बजट मोबाइल एप" पर अंग्रेजी और हिंदी में भी उपलब्ध होंगे।

'जज साहब 16 महीने से जेल में हूं और आपने कहा था कि...', सिसोदिया की दलील

नई दिल्ली

दिल्ली आबकारी नीति घोटाले में मनी लॉन्ड्रिंग और भ्रष्टाचार के आरोपी दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की जमानत अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और सीबीआई को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। कोर्ट मामले में 29 जुलाई को फिर सुनवाई करेगा। मनीष सिसोदिया पिछले 16 महीने से जेल में हैं।

सिसोदिया को 26 फरवरी को सीबीआई ने गिरफ्तार किया था और उसके बाद नौ मार्च को ईडी ने गिरफ्तार किया था। वह तभी से जेल में हैं। मंगलवार को न्यायमूर्ति बीआर गवई, संजय करोल और केवी विश्वनाथन की पीठ ने मामले की सुनवाई के दौरान ये आदेश दिये।

मनीष सिसोदिया ने कोर्ट से लगाई गुहार

मनीष सिसोदिया की ओर से वकील अभिषेक मनु सिंघवी और विवेक जैन पेश हुए थे। मनीष सिसोदिया ने जमानत की मांग करते हुए कहा है कि जज साहब मैं 16 महीने से जेल में हैं और केस में कोई प्रगति नहीं हुई है, केस उसी चरण में है जहां अक्टूबर 2023 में था। कोर्ट ने केस में प्रगति न होने पर दोबारा कोर्ट आने की छूट दी थी।

अलग-अलग विशेष अनुमति याचिकाएं

मनीष सिसोदिया की दलील सुनने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने याचिका पर ईडी सीबीआई को नोटिस जारी कर 29 जुलाई तक जवाब दाखिल करने को कहा है। मनीष सिसोदिया ने सीबीआई और ईडी दोनों ही मामलों में अलग-अलग विशेष अनुमति याचिकाएं दाखिल कर दोनों मामलों में जमानत देने की मांग की है।

ई-श्रम पोर्टल पर रजिस्टर्ड प्रवासी मजदूरों के वेरिफिकेशन में देरी करने वाले राज्यों को सुप्रीम कोर्ट की फटकार

एक महीने के भीतर सभी राज्यों को वेरिफिकेशन पूरा करने का आदेश

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने ई-श्रम पोर्टल पर रजिस्टर्ड प्रवासी मजदूरों के वेरिफिकेशन में देरी करने वाले राज्य सरकारों को फटकार लगाई है। जस्टिस सुधांशु धुलिया की बेंच ने सभी राज्यों को एक महीने के अंदर ई-श्रम पोर्टल पर रजिस्टर्ड प्रवासी मजदूरों का वेरिफिकेशन पूरा करने का आदेश दिया, ताकि प्रवासी मजदूरों का राशन कार्ड जारी किया जा सके। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि उन राज्य सरकारों को राशन जारी करें जिन्होंने प्रवासी मजदूरों का वेरिफिकेशन कर लिया है। कोर्ट ने कहा कि ये काफी दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ राज्यों ने प्रवासी मजदूरों का वेरिफिकेशन नहीं किया है। कोर्ट ने कहा कि चार महीने में वेरिफिकेशन क्यों नहीं किया गया। कोर्ट ने साफ किया कि अगर एक महीने के अंदर प्रवासी मजदूरों का वेरिफिकेशन पूरा नहीं किया गया तो वे संबंधित राज्य के मुख्य सचिव को तलब करेंगे। कोर्ट ने इस बात पर गौर किया कि बिहार और तेलंगाना ऐसे दो राज्य हैं, जिन्होंने प्रवासी मजदूरों का सौ फीसदी वेरिफिकेशन कर लिया है।

डिजिटल अटेंडेंस स्थगित नहीं निरस्त करने की मांग... कई मांगों को लेकर अभी प्रदर्शन जारी रखेंगे शिक्षक

लखनऊ

यूपी सरकार ने डिजिटल अटेंडेंस व्यवस्था को दो महीने के लिए स्थगित कर दिया है और कहा है कि इसे लेकर आ रही समस्याओं के समाधान के लिए एक कमेटी का गठन किया जाएगा। इस फैसले के बाद भी शिक्षक, शिक्षामित्र व अनुदेशक संयुक्त मोर्चा अपनी अन्य मांगों को लेकर विरोध जारी रखने का निर्णय लिया है। उनका कहना है कि डिजिटल अटेंडेंस व्यवस्था को निरस्त कर दिया जाए। इसे लेकर 29 जुलाई को बेसिक शिक्षा निदेशालय पर प्रदर्शन किया जाएगा। इसके पहले मंगलवार को बेसिक शिक्षक संगठनों व मुख्य सचिव के बीच हुई वार्ता के बाद डिजिटल अटेंडेंस व्यवस्था को स्थगित करने का निर्णय लिया गया।

अनुसंधान किसानों के खेतों तक पहुंचाएं और तकनीकी का इस्तेमाल कर कृषि लागत को घटाया जाए : शिवराज सिंह चौहान

नई दिल्ली

अन्न के उत्पादन में तो हमने प्रगति की ही है। साथ ही पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व कार्य हुआ है, लेकिन जरूरी है कि अनुसंधान किसानों के खेतों तक पहुंचाए जाएं और तकनीकी का इस्तेमाल कर कृषि लागत को घटाया जाए। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान मंगलवार को पूसा परिसर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीआर) के 96वें स्थापना एवं प्रौद्योगिकी दिवस समारोह में ये बातें कहीं।

केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान ने अपने संबोधन में कहा कि किसान व खेतों को वैज्ञानिकों से

जोड़ देंगे, तो लाभ मिलेगा, उत्पादन भी बढ़ेगा और टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए हम लागत भी घटा पाएंगे। उन्होंने अधिकारियों व विज्ञानियों से कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पास 5,500 वैज्ञानिक हैं। दो-दो वैज्ञानिक की टीम बनाकर कृषि विज्ञान केंद्र में तीन दिन के लिए भेजिए। ताकि वे इसका लाभ उठा सकें। केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि हम एक सीमांत किसान हैं और हमारे पास जमीन के छोटे छोटे टुकड़े हैं। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। देश की आधी आबादी कृषि पर निर्भर हैं। ऐसे में छोटी जोत के किसानों के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए। माडल फार्म बनाएं। उन्होंने कहा कि जब मध्य प्रदेश की कमान संभाली, तब मध्य प्रदेश का कुल बजट 21 हजार करोड़ था। यहां पर अनाज का उत्पादन महज 100 लाख मीट्रिक टन था। यह उत्पादन बढ़कर 619 लाख मीट्रिक टन हो गया। किसानों ने जरूरत की चीजें खरीदी तो कारखानों के चक्के चले, पूंजी का निवेश होने लगा। कृषि क्षेत्र में क्रांति से मध्य प्रदेश बीमारू से विकसित राज्य बन गया। इस दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान ने कृषि और पशु व मत्स्य विज्ञान तथा कृषि अभियांत्रिकी के क्षेत्र में नवाचार करने वाले विभिन्न कृषि वैज्ञानिकों व संस्थानों को सम्मानित किया।

मांडा- मेजा मे ट्रेनों का जल्द शुरू हो संचालन: प्रमिल यादव

सांसद ने ट्रेनों के ठहराव को लेकर रेलवे महाप्रबंधक को लिखा पत्र, मांडा के सपा नेता ने सांसद को सौपा था ट्रेन संचालन हेतु ज्ञापन, यात्रियों मे खासा आक्रोश

अखण्ड भारत संदेश

मांडा। दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग के मेजा रोड़ व मांडा रोड़ रेलवे स्टेशन पर एक्सप्रेस ट्रेनों के अलावा लोकल ट्रेनों के संचालन बंद किए जाने से यात्रियों मे खासा आक्रोश व्याप्त है। यात्रियों को प्रयागराज व मिजार्पुर साहित नजदीकी स्टेशनों तक आने जाने के लिए कोई भी ट्रेन का संचालन नहीं होने से यात्री काफी परेशान हैं। बतादे की मांडा के चिलबिला गाव निवासी प्रमिल यादव(जिला पंचायत सदस्य) व सपा नेता ने मंगलवार को इलाहाबाद के सांसद उज्ज्वल रमन सिंह को ट्रेनों के ठहराव हेतु ज्ञाओं सौपा है। उक्त नेता ने कहा है की दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग के बीच मेजा रोड़ व मांडा रोड़ रेलवे स्टेशन पर एक्सप्रेस ट्रेनों के अलावा मेमो आदि ट्रेनों का ठहराव पुरी तरह से बंद कर दिया गया है। इससे यात्रियों को खासी परेशानी उठानी पड़ रही है। उन्होंने बताया की उक्त दोनो स्टेशनों से रोजाना हजारों की तादात मे सरकारी कर्मचारियों के साथ यात्रियों का प्रयागराज,नैनी,मिजार्पुर, पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्टेशन के लिए अवगमन होता है। लेकिन ट्रेनों का संचालन पुरी तरह से बंद कर दिया गया है। इससे यात्री काफी परेशान हैं। वहीं उक्त नेता के पत्र को संज्ञान मे लेकर प्रयागराज के रेलवे महाप्रबंधक को पत्र भेजकर समस्या निस्तारण की बात कही है।

इन ट्रेनों का संचालन जरूरी : सपा नेता के पत्र के मुताबिक सूबेदारगंज से पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्टेशन तक आवागमन के लिए ट्रेन संख्या 03333/03334 मेमो पेसेंजर व ट्रेन संख्या 15483/15484 सिक्किम महानन्दा एक्सप्रेस का ठहराव उक्त स्टेशनों पर होना अनिवार्य है।

मांडा रोड रेलवे स्टेशन को किया नजर अंदाज, यात्री परेशान

यात्री की समस्याओं का निस्तारण के लिए सांसद ने ट्रेनों के ठहराव को लेकर रेलवे महाप्रबंधक को लिखा पत्र

मांडा। पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह राजा मांडा के गृह नगर के मांडा रोड रेलवे स्टेशन से होकर गुजरने वाली दो ट्रेन को छोड़कर शेष सभी ट्रेनें बन्द हो गई है। जिससे लोगों में यह चर्चा है कि मांडा रोड रेलवे स्टेशन यात्रियों के लिए उपेक्षित हैं। ट्रेन चल भी रही है वह लेट लतीफ का शिकार रहती हैं यह स्थिति तब जब डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर पर ट्रेनों का संचालन शुरू हो चुका है और 75 फीसदी मॉल गाड़ियों को पुराने ट्रैक से हटा दिया गया है। जो कि ब्रिटिश काल में भी था ट्रेनों का ठहराव आज मांडा रोड रेलवे स्टेशन कभी अपने आप पर रिक्स करता था ब्रिटिश समय में बने इस रेलवे स्टेशन पर कई ट्रेनों का ठहराव हुआ करता था ।यहां से हजारों की संख्या में सैकड़ों गांव के अलावा मांडा खास, भारतगंज व तहसील कोरांव तथा मध्यप्रदेश व गंगापार तक के लोग ट्रेन पकड़ने आते थे इसी के चलते मांडा रोड कानपुर कोलकाता और मुंबई जैसे ट्रेड सेंटर से जुड़ गया। यहां के लोगों ने रेडीमेड गारमेंट से लेकर तमाम अन्य व्यापारी ने संसाधन व्यवस्था होने से कदम रखा और सफलता हासिल की थी। लेकिन आज व्यापारी वर्ग भी मांडा रोड स्टेशन पर ट्रेनों का ठहराव बंद किए जाने से परेशान हैं ।यहां से सीसीएम पैसेंजर गोमो से चोपन , त्रिवेणी एक्सप्रेस शक्तिनगर से टनकपुर, लाल किला एक्सप्रेस दिल्ली से सियालदह, जनता एक्सप्रेस हावड़ा से दिल्ली ,इंटरसिटी एक्सप्रेस विंध्याचल से लखनऊ, मुगलसराय बरेली पैसेंजर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन से बरेली आदि कई ट्रेनें बंद कर दी गई हैं मुंबई जनता एक्सप्रेस पटना से लोकमान्य तिलक टर्मिनस जो प्रयागराज नहीं जाकर छिवकी स्टेशन से ही डायवर्ट हो जाती है तथा मेमो पैसेंजर चुनार से प्रयागराज हमेशा अप हो या डाउन लेट ही रहती है। इससे सुबह प्रयागराज जाने के लिए दैनिक मजदूर ,विद्यार्थी, नौकरी पेशेवर के साथ ही अधिवक्ता एवं दैनिक यात्री परेशान रहा करते हैं। समस्या का समाधान करने के लिए सरकार व शासन, प्रशासन से उक्त ट्रेनों को अतिशीघ्र ठहराव करने की मांग की थी।

मऊआइमा में मोहर्रम का आठवीं का जुलूस बडी शान शौकत से निकला

मऊआइमा। नगर पंचायत मऊआइमा में आठवीं मोहर्रम का जुलूस देर रात में निकला तथा नवीं का मेंहदी का जुलूस देर रात में निकलेगा। नगर पंचायत मऊआइमा के मोहल्ला अबू हलीम पटटी दिलाशा बीबी का जुलूस बडी शान शौकत के साथ निकला तमाम भ्रमण करने के बाद अपने गन्तव्य को देर रात पहुंचा। नवीं का मेंहदी का जुलूस देर रात में निकलेगा। सभी ताजिया ताजिया स्थल पर रख कर अकीदतमंद अपने अपने तरह से सिन्नी मलीदा आदि वितरण किए।और ताजिया पर फूल अगरबत्ती जला कर मन्नतें मांगी गयी। मोहर्रम का दशवीं का जुलूस बुधवार को देर रात में हर ताजिदार निकालेंगें।

जेई व लाइनमैन के साठगांठ से हो रही अवैध वसूली, उपभोक्ता परेशान

माण्डा। माण्डा रोड विद्युत सब-स्टेशन में तैनात जेई व लाइनमैनों द्वारा की जा रही अवैध वसूली से उपभोक्ताओं की कमर टुट गयी है। उपभोक्तओ ने आरोप लगाया जा रहा है कि दिन ,रात के समय जो चेकिंग की जा रही है उससे अधिकारी अपनी जेबें भरने का काम करते हैं। जेई प्राईवेट कर्मचारियों के साथ मिलकर लोगों के घरों में घुसकर वीडियो बना रहे है और बाद में सीधे साधे गरीब उपभोक्ताओं से वीडियो डिलीट करने के नाम पर अवैध वसूली करते हैं। धनराशि चुकाना उनकी मजबूरी बन गयी है। गरीब उपभोक्ता सुविधा शुल्क के अभाव में अंधेरे में गुजारा करने को विवश हैं। हालात यह है कि जेई व लाइनमैनों की मनमानी के चलते कभी-कभी पूरा मुहल्ला ही अंधेरे में डूबा रहता है। जिससे लोगों में काफी आक्रोश व्याप्त है। **उपभोक्ताओं छः घण्टे भी नही मिल पा रही बिजली :** माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ग्रामीण क्षेत्रों में बाइस घण्टे बिजली आपूर्ति को लेकर निर्देश दिये गये हैं। विद्युत अधिकारियो ने उनके आदेशों की धज्जियां उड़ाते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र छः घण्टे भी बिजली आपूर्ति नहीं की जा रही है। उपभोक्ताओं ने बताए कि सम्बंधित अधिकारी कभी भी विद्युत सब-स्टेशन पर दिखाई नहीं देते। दिन में कही भी तार टूटने की समस्या आने पर उसे दुरूस्त करा दिया जाता है । लेकिन यहीं हाल अगर रात को कही बिजली तार को लेकर समस्या आती है तो कोइ भी कर्मचारी फोन नही उठाता। उपभोक्ता को बिना बिजली के ही रात गुजारने मजबूर होना पड़ता है। मांडा जेई के इस कार्य प्रणाली को लेकर मांडा के उपभोक्ताओ में काफी नाराजगी जाहिर की। उपभोक्ताओं ने मांडा जेई प्रदीप कुमार मिश्रा को सम्बन्धित अधिकारियो से हटवाने की मांग की।

जिला सैनिक बंधु की बैठक 20 जुलाई को

प्रयागराज। जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी ग्रुप कैप्टन श्री अशोक पाण्डेय (अ0प्रा0) ने अवगत कराया कि जिला सैनिक बन्धु की मासिक बैठक दिनांक 20.07.2024 को अपराहन 12.00 बजे संगम सभागार, कलेक्ट्रेट, प्रयागराज में जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय, प्रयागराज के तत्वाधान में आयोजित की जायेगी। यह बैठक उ0प्र0 शासन के निदेर्शानुसार जिलाधिकारी महोदय की अध्यक्षता में आहुत की जानी है, जिसमें जिले के नामित पदाधिकारी एवं समस्त विकास खण्डों के भूतपूर्व सैनिक एवं उनके आश्रित अपनी-अपनी समस्यायें जिलाधिकारी महोदय के समक्ष रखते हैं। जिलाधिकारी महोदय द्वारा उन समस्याओं का निराकरण उसी समय या पत्राचार के माध्यम से किया जाता है। जनपद के समस्त पूर्व सैनिकों/उनकी वीर नारियों एवं उनके आश्रितों से आग्रह है कि उपर्युक्त आयोजन का अधिक से अधिक लाभ उठायें।

मुरादपुर में छत के रास्ते से घुसे चोरों ने जेवरात व नगदी किये पार

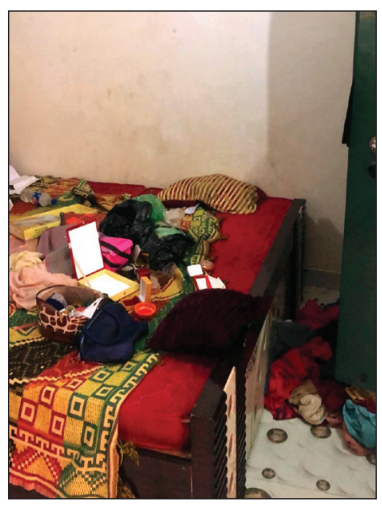

अखंड भारत संदेश

नैनी। नैनी अरैल मुरादपुर में बीती रात चोरों ने घर में घुसकर अलमारी को तोड़कर अलमारी में रखें जेवरात व नगदी को चोरों ने किया पार। सुबह परिजनों को जानकारी हुई तो उनके होश उड़ गए। घटना की जानकारी नैनी पुलिस को दी गई। पुलिस जांच पड़ताल कर वापस चली गई। मिली जानकारी के अनुसार नैनी थाना क्षेत्र के मुरादपुर निवासी उजमा अख्तर पुत्री लियाकत अली के अनुसार रविवार देर रात घर में सभी सो रहे थे उसी दौरान घर के अंदर छत के रास्ते से घुसे चोरों ने अलमारी में रखें जेवरात व नगदी लेकर फरार हो गए। घटना के दौरान अलमारी के कपड़े सारे फेके हुए थे। भुक्तभोगी के अनुसार एक जोड़ी झुमका दो जोड़ी पायल मंगलसूत्र अंगूठी मांग टीका नथिया तथा 29 हजार कैश चोरों ने चोरी करके भाग निकले। घटना की जानकारी नैनी पुलिस को हुई तो मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल कर वापस चली गई। भुक्तभोगी ने चोरी की तहरीर नैनी कोतवाली में दे दी है।

गुरु नानक नगर में डॉक्टर के मकान में चोरी का प्रयास

नैनी। नैनी क्षेत्र के गुरु नानक नगर में पुलिस प्रशासन से गश्त बढ़ाने की मांग किया संजय श्रीवास्तव जिला उपाध्यक्ष भाजपा पूर्व कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख ने नैनी कोतवाल से गश्त बढ़ाने की मांग किए हैं। जिससे चोरों पर शिकंजा कसा जा सके। बीती रात गुरु नानक नगर में चोरो ने मौका पाकर एक डॉक्टर के मकान का ताला तोड़ रहे थे तभी। पड़ोसियों के शोर मचाने पर चोर फरार हो गए। जानकारी के मुताबिक नैनी क्षेत्र के गुरु नानक नगर निवासी डॉक्टर आशुतोष राय के घर पर रविवार रात चोर मौका पाकर बाउंडीवाल फांदकर अंदर दाखिल हो गए और ताला तोड़ दिए। इससे पहले वह अपने मकसद में कामयाब होते। खटपट की आवाज सुनकर पड़ोसियों ने जब शोर मचाना शुरू कर दिया। चोर मौके से फरार हो गए। वहां पर लगे सीसीटीवी कैमरे में चोरों की करतूत कैंद हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल की।

नकदी सहित लाखों का आभूषण चोरी

करछना। थाना क्षेत्र के लहर पतेरे गांव में चोरों ने धावा बोलते हुए चोरी की घटना को अंजाम दिया है। गांव निवासी राजमणि पटेल पुत्र देवकरण पटेल का पूरा परिवार बीती रात खाना पीना करने के बाद रोजाना की तरह सो गया था। उसी दरमियान देर रात अज्ञात चोरों ने धावा बोलते हुए पीछे के रास्ते से घर के अंदर घुस गए। जहां आलमारी में रखा गया 50 हजार रुपए नगदी समेत 5.50 लाख रुपए तक का सोने चांदी के आभूषण उठा ले गए। सुबह घटना की जानकारी हुई तो हड़कंप मच गया। सूचना होने पर करछना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल कर चली गई।

न्यूज झरोखा

सम्पर्क मार्ग के मरम्मत हेतु राज्य मंत्री से मिले भाजपा नेता

सहसों। प्रयागराज-गोरखपुर राजमार्ग स्थित सहसों बाईपास से बगई चौराहे तक लगभग चार किलोमीटर तक संपर्क मार्ग पूरी तरह से बेहद क्षतिग्रस्त हो चुकी है। हालत यह है कि सड़क पर उखड़ी गिट्टियां एवं बड़े-बड़े गड्ढों के कारण आए दिन राहगीर गिरकर चोटिल हो रहे हैं। गड्ढों में जल जमाव के चलते आवागमन में लोगों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। सम्पर्क मार्ग से लगभग दर्जनों गांव के किसान, व्यापारी एवं स्कूल कॉलेज आने जाने के लिए बच्चों का प्रतिदिन आवागमन होता है। वर्षों से खराब संपर्क मार्ग के संबंध में भाजपा नेता एवं सहसों ब्लॉक प्रमुखपति राकेश बहादुर सिंह प्रदेश के लोक निर्माण राज्य मंत्री बृजेश सिंह से मिलकर समस्या से अवगत कराते हुए मरम्मत कराए जाने की मांग की। इसके अतिरिक्त क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में क्षतिग्रस्त विभिन्न सम्पर्क मार्गो की भी चर्चा करते हुए समस्या से अवगत कराते हुए समाधान का आग्रह किया।

कांग्रेस कार्यकताओं ने प्रमोद तिवारी का मनाया जन्मदिन

करछना। जगदीशपुर चौराहे पर कांग्रेस के अजेय नेता सदन के उप नेता राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी को कांग्रेसियों ने दी बधाई।जिला कांग्रेस कमेटी के जिलाअध्यक्ष अरुण तिवारी ने कहा कि प्रमोद तिवारी ने राजनीतिक और सामाजिक जीवन में जिस उत्कृष्ट उदाहरण को प्रस्तुत किया है वह अद्वितीय है अनुकरणीय है। जिलाध्यक्ष ने आगे बोलते हुए कहा की प्रमोद तिवारी जिनको देखकर शिकस्त अपना रास्ता बदल देती है और मंजिल खुद कर उनका कदम चूमती है उसके बावजूद उनके व्यक्तित्व में जो दया करुणा और सहिष्णुता का भाव है वह कहीं और देखने में नहीं मिलेगा। लोग थोड़ी सी पद प्रतिष्ठा के बाद अहंकार में आ जाते हैं लेकिन अहंकार ने जैसे पूरे जीवन प्रमोद तिवारी को न छूने का मन बना लिया है। प्रमोद तिवारी उत्तर भारत भी नहीं पूरे देश में संसदीय व्यवस्था की परंपरा और मयार्दा के लिए जाने जाते हैं हम कांग्रेस जन ईश्वर से उनके लंबे उम्र और स्वस्थ जीवन की प्रार्थना करते हैं। अरूण तिवारी, डॉ शीतला प्रसाद पाण्डेय,रंगराज सिंह, डॉ दिनेश कुमार सोनी,रामछबीले मिश्र, प्रकाश चन्द्र पाण्डेय, नागेश पाण्डेय, अनिल मिश्रा,माताम्बर मिश्र, आशाराम मिश्र, धर्मेन्द्र दुबे, मोहम्मद राशिद, मोहम्मद जूनैद, धर्मराज रत्नाकर,नाहर मिश्रा, आशीष मिश्रा,राजेश तिवारी, नीरज मिश्रा,अतुल तिवारी,अर्चना यादव, पवनेश सोनी, आदि लोग मौजूद रहे।

पत्रकार के चाचा के निधन पर व्यक्त किया गया शोक

मऊआइमा। इलाके के बालाडीह निवासी पत्रकार जय प्रकाश सिंह के 62 वर्षीय चाचा वीरेंद्र कुमार सिंह उर्फ मुन्ना का इलाज के दौरान निधन हो गया। निधन की खबर सुनते ही स्थानीय लोगों ने शोक व्यक्त की। जिसमें डा. रामजी सिंह,डा. प्रदीप सिंह,गोपाल सिंह,प्रधान प्रमोद कुमार सिंह,मनोज सिंह,विवेक सिंह,डा.शुभम सिंह,धीरज सिंह, पत्रकार जय प्रकाश सिंह, नदीम इंतेखाब,उबैद उल्ला, साजिद खान, राकेश मौर्य,हसीन मुस्ताक, जितेंद्र प्रसाद , सुरेश मौर्य, रुहुल फैयाज आदि लोग रहे।

प्रयाग इंस्टीट्यूट बेंदौ करछना में जाब फेयर में 16 छात्रों का चयन हुआ

करछना। बेंदो स्थित प्रयाग इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट मे कॉलेज परिसर मे बी. टेक(इंजीनियरिंग) के सभी ब्रांच के छात्रों के लिए जॉब फेयर 2024 का आयोजन किया गया जिसमें ऑम्फा रबर लि, एमकैम सर्नेलॉन लि,हिताची, ब्रिजस्टोन आदि कंपनियों ने भाग लिया । जॉब फेयर मे कॉलेज के 16 छात्रो का चयन हुआ जिसमे इलेक्ट्रिकल ब्रांच के 4 छात्र हरिओम मिश्रा, गुंजन यादव आदि का चयन एम्बिट स्विचगियर एवं ईआरडी टेक्नोलॉजी मे, मैकेनिकल के 2 छात्र आजाद कुमार एवं कुंदन कुमार का ब्रिजस्टोन एवं हिताची मे सिविल ब्रांच के 4 छात्र मांसी तिवारी ,पल्लवी गुप्ता, गौरव मिश्रा आदि का चयन न्यू नोइडा इंडस्ट्रीज एवं ओरीमन सर्वे एंड इंजीनियर्स प्रा लि मे , कम्प्यूटर साइंस के 5 छात्र चंद्र कांत, प्रीति मिश्रा, प्राची मिश्रा, मंजीत सिंह, सूर्य प्रकाश का निप्पन डेटा सिस्टम आदि मे चयन हुआ। चयनित छात्रों को संस्थान के चेयरमैन ज्ञान सिंह पटेल एवं सचिव विकास सिंह पटेल ने बधाई दी।कुलसचिव आशीष तिवारी ने छात्रों को उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। संस्थान के प्रधानाचार्य राम रक्षा त्रिपाठी ने सभी छात्रों को ऑफर लेटर प्रदान किया और ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफिसर सुप्रिया श्रीवास्तव एवं उनकी टीम के इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा की। इस मौके पर कॉलेज के डीन एच एल पटेल ,डिपार्टमेंट के विभागाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह ,रवींद्र सिंह , मनीष सिंह, मोमिश पांडे , भोला पांडे,अरविंद पांडे, प्रेम चंद,विवेक सिंह, हिमांशु दिवेदी, अनिल सिंह , श्वेता सक्सेना शुभम शुक्ला आदि मौजूद रहे।

नैनी का मशहूर चाट विक्रेता ई-रिक्शा की टक्कर से घायल

नैनी। नैनी क्षेत्र के शंकर ढाल के पास ई-रिक्शा चालक ने चाट विक्रेता की बाइक में पीछे से टक्कर मार दी। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने उन्हें नजदीकी अस्पताल में भरती कराया। उनकी हालत चिंताजनक बताई जा रही है। वहीं, आरोपी ई रिक्शा चालक भाग निकला। नैनी शंकर ढाल के पास रहने वाले 55 वर्षीय रामभवन गुप्ता की गुप्ता चाट कॉर्नर दुकान है। मंगलवार की सुबह वह घर से निकले। शंकर ढाल पर सड़क पार किया तभी पीछे से ई-रिक्शा चालक ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। गिरने से उन्हें चोटें आई। आननफानन में उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। उधर, इस दुर्घटना से नाराज नैनी के व्यापार मंडल अध्यक्ष एवं पार्षद राकेश जायसवाल, मंगल प्रसाद केसरवानी, वरिष्ठ भाजपा नेता संजय श्रीवास्तव, बबलू, शशि शर्मा, रमेश पटेल समेत दर्जनो व्यापारियों ने ई-रिवशा चालकों के खिलाफ अभियान चलाने की मांग की है। कार्रवाई नहीं होने पर सड़क पर उतरकर प्रदर्शन करने की चेतावनी भी दी गई है।

असाध्य रोगों के उपचार में कारगर है होम्योपैथी: डा. विपिन कुमार

सप्ताह में दो दिन सोमवार और गुरुवार को श्यामा होम्योपैथी क्लीनिक पर करवाएं इलाज

शंकरगढ़। होम्योपैथी चिकित्सा की एक ऐसी पद्धति है, जिसमें बहुत सी असाध्य बीमारियों का भी जड़ से इलाज संभव है। इसमें वह बीमारियां भी शामिल हैं, जिनके लिए एलोपैथ में आजीवन दवाओं का सेवन करना पड़ता है। यह बातें प्रभारी चिकित्साधिकारी डा. विपिन कुमार यादव ने कही। डा. विपिन कुमार यादव नगर पंचायत शंकरगढ़ के रामभवन चौराहा के समीप स्थित श्यामा होम्योपैथिक क्लीनिक में आयोजित चिकित्सा शिविर में मरीजों का इलाज कर रहे थे। इस दौरान स्किन, सर्दी-जुकाम, बुखार, पेट से जुड़ी समस्याओं के तमाम मरीज आए। सभी को सलाह के साथ दवाएं प्रदान की गईं। डा. विपिन कुमार यादव ने कहा, सामान्यतः लोगों में आम धारणा है कि होम्योपैथी की मीठी गोलियां असाध्य रोगों या फिर किसी भी प्रकार की बीमारी पर उतना असर नहीं करती हैं, जितना कि एलोपैथ की दवाएं करती हैं। यह कहना और मानना गलत है। होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति पूरी तरह से वैज्ञानिक है और होम्योपैथी की दवाएं बीमारी के रूट पर असर करती हैं। इसका असर जरूर धीरे होता है, लेकिन इससे स्थाई समाधान मिलता है। उन्होंने कहा कि होम्योपैथिक चिकित्सा के सिद्धांत के मुताबिक, होम्योपैथिक दवाएं शरीर के अपने आप ठीक होने की क्षमता को बढ़ा देती हैं। होम्योपैथ की दवाओं का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता है, बशर्ते इसे डाक्टर के परामर्श के अनुसार लिया जाए। होम्योपैथ में दी जाने वाली दवाएं पूरी तरह से नेचुरल होती हैं, इसमें किसी भी प्रकार के केमिकल का प्रयोग नहीं होता है।

जल जीवन मिशन प्रशिक्षण में आशा बहनों एवं स्वास्थ्य कर्मी संगिनी को वितरित किया किट बैग

करछना। ब्लॉक सभागार करछना में चल रहे जल जीवन मिशन प्रशिक्षण कार्यक्रम में मंगलवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र करछना में कार्यरत आशा बहनों एवं संगिनी स्वास्थ्य कर्मियों को जज जीवन मिशन प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन किट बैग जल जीवन मिशन की ओर से वितरित किया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम में जल आपूर्ति योजनाओं को योजना बनाना उसकी रूपरेखा बनाना क्रियान्वयन प्रचलन और रखरखाव करना और मौसमी आपूर्ति का समय तय करना तथा दूषित जल के पुनर प्रयोग जल उपाय आदि सहित और संरचना के पर्यवेक्षक करना सामुदायिक अंशदान के लिए और प्रचलन एवं रखरखाव सेवा शुल्क जमा करने के लिए तमाम सारी जानकारियां दी गई मानव जीवन? को खुशहाल जीवन व्यतीत करने के लिए जल संसाधनों को संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। यूनोप्स के जिला सलाहकार शिवाकांत द्विवेदी ने दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान उक्त बातें विस्तार पूर्वक बताई इस मौके पर धीरेंद्र द्विवेदी राकेश सिंह दिवाकर पटेल मीना सिंह संतोष सिंह प्रदीप पटेल संगीता सतेन्द्र सिंह एवं सहित बड़ी संख्या में स्वास्थ्य कर्मियों ने सहभागिता की।

मानव जीवन के लिए भुजल को संरक्षित करना बड़ी जिम्मेदारी है : बृज भुवन मौर्य

करछना। विकास खंड करछना सभागार में मंगलवार को भूजल सप्ताह दिवस के अवसर पर एक गोष्ठी आयोजित की गई कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जे ई एम आई बृज भुवन मौर्य ने किसानों को बताया कि मानव जीवन? में पानी की समस्या से लोगों को जूझना पड़ सकता है इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को भूजल स्तर को संरक्षित करना अति आवश्यक है पानी का सदुपयोग करना चाहिए जरूरत से ज्यादा पानी को बर्बाद होने से बचाएं जिससे भूजल स्तर सदैव तत्पर रहने से पेयजल आपूर्ति योजनाओं को आप सभी तक आपूर्ति मिलती रहे, उक्त कार्यक्रम में भूजल स्तर पर उन्होंने वृस्तित जानकारी किसानों को दी, इस मौके पर प्रमुख लोगों में अनिल सिंह रामचंद्र मौर्य दिनेश श्रीवास्तव प्रधान प्रतिनिधि अशोक कुमार सिंह रोजगार सेवक जलज शर्मा आशुतोष सिंह धर्मेंद्र यादव , इंद्र कुमार त्रिपाठी, मोहम्मद गुलाम गौस सहित दर्जनों लोग भूजल स्थल गोष्ठी में सहभागिता की।

कार्यालय जिला पंचायत, कौशाम्बी।

पत्रांकः 485/ निविदा-जि०पं० कौ0 / 2024-25 दिनांकः-16.07.2024

संशोधित निविदा सूचना

जिला पंचायत कौशाम्बी व पंचायतीराज अनुभाग-2 के शासनादेश संख्याः 1488 (1)/33-2- 2020 दिनांकः 24 जुलाई 2020 द्वारा जिला पंचायत कौशाम्बी व लोक निर्माण विभाग एवं सिंचाई विभाग के समस्त पंजीकृत ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि कार्यालय पत्र संख्याः, 325 / निविदा-जि०पं० कौ०/2023-24 दिनांकः 28.06.2024 के द्वारा आमंत्रित 39 निर्माण कार्यों की ऑफलाइन निविदा फार्म की बिकी दिनांकः 18.07.2024 को सांय 05.00 बजे तक एवं दिनांक 19.07.2024 को अपराह्न 02:00 बजे तक निविदा बाक्स में डालने के उपरान्त इसी तिथि में अपराह्न 02:30 बजे खोले जाने की सूचना प्रकाशित की गयी थीं, लेकिन अपरिहार्य कारणों से निविदा तिथि को संशोधित करते हुए निम्नानुसार निर्धारित किया जाता है,

निविदा से सम्बन्धित निविदा प्रपत्र दिनांक 25.07.2024 को सायं 05.00 बजे तक कार्यालय द्वारा बिकी की जायेगी तथा दिनांक 26.07.2024 को अपराह्न 02:00 बजे तक निविदा बाक्स में डालने के उपरान्त इसी तिथि में अपराह्न 02:30 बजे निविदा समिति के समक्ष खोला जायेगा। निविदा से सम्बन्धित शेष शर्ते पूर्वत रहेगी।

अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत कौशांबी।

अधिवक्ता संरक्षण कानून में बदलाव होगा

● प्रयागराज में कानून मंत्री मेघवाल बोले-बीमा पॉलिसी से जोड़ने पर भी विचार हो रहा

अखंड भारत सदेश

प्रयागराज। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल मंगलवार को प्रयागराज पहुंचे। उन्होंने कहा-संविधान के तीन अंग विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका का संगम होने से ही देश आगे बढ़ेगा। इनमें से कोई सर्वोच्च नहीं है केवल संविधान ही सर्वोच्च है। आपसी समरसता होनी चाहिए। वह इलाहाबाद मेडिकल एसोसिएशन के सभागार में आयोजित हमारा संविधान-हमारा सम्मान कार्यक्रम में भी शामिल हुए। इसके पूर्व उन्होंने अधिवक्ताओं से मुलाकात की। कहा-उनकी सरकार अधिवक्ता संरक्षण कानून लागू करने पर चर्चा कर रही है। इसके लिए अधिवक्ता कानून में बदलाव किया जाएगा। इस पर अमल किया जाना चाहिए। अधिवक्ताओं को बीमा पालिसी से जोड़ने की दिशा में विचार चल रहा है। वकीलों द्वारा कोर्ट में घसीटे जाने के डर से बीमा कंपनियां आगे नहीं आ रही। वकीलों को आयुष्मान योजना से बाहर रखा गया है। उनका स्वास्थ्य ठीक रहे सरकार इसकी चिंता कर रही है। अधिवक्ताओं के लिए डिजिटल लाइब्रेरी की सुविधाएं उपलब्ध कराने में सांसद निधि या अन्य तरीके से मदद की जाएगी। उन्होंने अंत में कवि सूरदास का भजन गाया कि ₹प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो। एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो।

9 अगस्त को दिल्ली में मिलेंगे बार के पदाधिकारी : इन सभी मुद्दों पर विस्तृत चर्चा के लिए बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों को 9 अगस्त शाम चार बजे का समय दिया और कहा वे दिल्ली आये। वहां का खर्च सरकार उठाएगी और गहन चर्चा के लिए समय लेकर दिल्ली आएं।मेघवाल ने पत्नी के साथ जीवन अनुभवों को संजोकर लिखी किताब एक सफर हम सफर के साथ₹ का जिक्र किया और कहा कि शादी भौतिक सुखों के लिए नहीं है यह आध्यात्मिक लगाव है।उन्होंने कुटुंब प्रबोधन की दिशा में एक टीम के रिसर्च के आधार पर दूसरी किताब का भी हवाला दिया। केंद्रीय कानून मंत्री मेघवाल हाईकोर्ट बार एसोसिएशन द्वारा ऐतिहासिक पुस्तकालय हाल में उनके सम्मान में आयोजित स्वागत एवं अभिनन्दन समारोह में अधिवक्ताओं के बीच बोल रहे थे।बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल तिवारी व महासचिव विक्रांत पांडेय ने कानून मंत्री मेघवाल को शाल व स्मृति चिन्ह भेंटकर अभिनंदन किया। न्यायमूर्ति एम सी त्रिपाठी व? न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा का भी बार ने शाल भेंटकर स्वागत किया। सभा का संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश खरे ने किया।इस पर केंद्रीय कानून मंत्री ने कहा बार भले ही कुछ मांग नहीं रही किंतु वह यहां कुछ देने आये है। मेरे साथ विधि सचिव राज कुमार गोयल जो इंफ्रास्ट्रक्चर देखते हैं,भी आये हुए हैं। उन्होंने तीन विषयों पर सरकार की गंभीरता बताई। सुझाव मांगने पर एक महिला अधिवक्ता ने अधिवक्ताओं के आवास की समस्या उठाई।अध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि वकीलों के लिए जजों ,अधिकारियो, आदि के जैसे जमीन अधिग्रहण कर सस्ती दर पर प्लाट या आवास उपलब्ध कराने की योजना बनाई जाय। इस पर मंत्री जी ने पी डी ए की सहायता से ऐसी योजना पर चर्चा करने का आश्वासन दिया। कहा कि सरकार जमीन देगी वकीलों की सोसायटी बनाकर आवास योजना पर अमल करना होगा। उन्होंने अंत में कवि सूरदास का भजन गाया कि ₹प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो। एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो। पुस्तकालय हाल अधिवक्ताओं से खचाखच भरा था।तालियों की गड़गड़ाहट के साथ मंत्री जी का स्वागत किया गया। मंत्री सहित न्यायमूर्तियों का पूरी बार कार्यकारिणी ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यक्रम में सुभाष यादव, नीरज त्रिपाठी, अखिलेश मिश्र, नीलम शुक्ला, सुमित श्रीवास्तव, पुनीत शुक्ल, सहित पूरी कार्यकारिणी, अधिवक्ता मृत्युंजय तिवारी, मुख्य स्थाई अधिवक्ता मनोज कुमार सिंह, एन के चटर्जी, संजय यादव, भानु देव पांडेय, संजय यादव, अशोक सिंह, सभाजीत सिंह आदि ने अपना योगदान दिया।

न्यूज झरोखा

नैनी औद्योगिक क्षेत्र पुलिस द्वारा तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कब्जे से 25 किलो 400 ग्राम अवैध गांजा व एक स्विफ्ट कार बरामद

नैनी। नैनी औद्योगिक क्षेत्र पुलिस द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थानाध्यक्ष औद्योगिक क्षेत्र महेश मिश्र के कुशल नेतृत्व में थाना औद्योगिक क्षेत्र पुलिस द्वारा 03 अभियुक्त गिरफ्तार 1. चित्रकांत साहू पुत्र मैकलाल साहू निवासी बोइल कांपा, थाना कवर्धा, छत्तीसगढ़ 2. धीरज सिंह पुत्र शिव नरेश सिंह निवासी हसनपुर कसार मोहम्मदपुर गांती, थाना सुल्तानपुर घोष, जनपद फतेहपुर 3. लक्ष्मी नारायण मंडावी पुत्र स्व कान्तीलाल मंडावी, निवासी ग्राम अंडाम, थाना डोंगर गांव जनपद राजनादगांव, छत्तीसगढ़ को मंगलवार को चेकिंग के दौरान ओमेक्स सिटी चौकी के पास थाना औद्योगिक क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। कब्जे से 25 किलो 400 ग्राम अवैध गांजा व घटना में प्रयुक्त स्विफ्ट कार बरामद किया गया। उक्त गिरफ्तारी बरामदगी के सम्बन्ध में थाना औद्योगिक क्षेत्र में विभिन्न धाराओं में पंजीकृत किया गया। नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

मिलेट्स को बढ़ावा देने के लिए मोटा अनाज का वितरण

सोरांव। मंगलवार को राजकीय कृषि बीज भंडार सोराव में एडीओ (कृषि) विषय वस्तु विशेषज्ञ सत्य प्रकाश यादव की अध्यक्षता में ज्वार एवं बाजरा का मिनी किट का वितरण किया गया। कृषि विभाग में पंजीकृत दर्जनों किसान दोपहर में राजकीय बीज गोदाम प्रभारी शैलेंद्र यादव के पास वितरण मशीन में फिंगर लगाकर मिनी किट को प्राप्त किए। वहीं विषय वस्तु विशेषज्ञ सत्य प्रकाश यादव ने बताया कि ज्यादा से ज्यादा किसान मिलेट्स को बढ़ावा देने के साथ ही मोटा अनाज की खेती करें। जिससे लोगों को भरपूर पौष्टिक आहार मिल सके। यदि किसानों को कृषि के क्षेत्र में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही है तो तत्काल राजकीय कृषि बीज भंडार पर आकर बीज गोदाम प्रभारी शैलेंद्र यादव सहित कृषि विभाग के कर्मचारियों से संपर्क कर अच्छी खेती के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस मौके पर जन प्रतिनिधि ग्राम प्रधान राम अचल यादव, राजेश कुमार एडवोकेट, समर बहादुर पटेल कोटेदार (उसरही), किसान शिव प्रकाश पटेल,राज कुमार, विजय कुमार संग कृषि विभाग से पूनम वर्मा,सुधीर सिंह,सागर,अंकित मिश्रा,कामदार लालता प्रसाद आदि लोग रहे।

सचिव को दिया चिंतन शिविर में पारित प्रस्ताव

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व एमएलसी सुरेश कुमार त्रिपाठी ने मंगलवार को यूपी बोर्ड के नवनियुक्त सचिव भगवती सिंह से मिलकर उन्हें संगठन के ग्रीष्मकालीन चिंतन शिविर में पारित प्रस्ताव तथा साहित्य भेंट किया। प्रतिनधिमंडल में मंडलीय मंत्री अनुज कुमार पांडेय, सदस्य प्रदेश कार्यकारिणी अनय प्रताप सिंह, उपाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश शर्मा, कोषाध्यक्ष रविंद्र कुमार त्रिपाठी, सुधीर मिश्र, डॉ. चन्द्र मणि शुक्ला व जय प्रकाश मिश्रा शामिल रहे।

श्री नारायण आश्रम बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज में मनाया गया मैंगो डे

प्रयागराज। श्री नारायण आश्रम बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज शिवकुटी प्रयागराज में मंगलवार को मैंगो डे मनाया गया । इसमें नर्सरी और केजी के बच्चों ने आम के आकार व पीले रंग की सुंदर पोशाक पहनकर स्कूल पहुंचे । वहीं नन्हें मुन्ने बच्चों ने अपने प्रतिभा के माध्यम से आम के बारे में बताया । वे अपने साथ तरह-तरह के आम भी लाए थे ।मैंगो डे सेलिब्रेशन एक फन एक्टिविटी होने के साथ बच्चों में लैंग्वेज डेवलपमेंट का भी माध्यम बना। प्रधानाचार्य श्रीमती विभा मिश्रा ने बच्चों की सराहना की और उन्हें फलों के राजा आम के गुणों से अवगत कराया। बच्चों ने कविता, नृत्य और राइम्स भी प्रस्तुत किया ।कक्षा अध्यापिका शिखा कुशवाहा मौजूद रही।

फूल बेचने वाली महिला की थी कछार में मिली लाश

परिजनों ने झूंसी थाने पर पहुंच कपड़ो से की पहचान

झूंसी। थाना क्षेत्र के पूरे सूरदास कछार में रविवार को मिला महिला का शव सरायइनायत के सीहीपुर की लक्ष्मीना पत्नी ननकऊ की थी। वह झूंसी के लाल चौक पर फूल बेचती थी। 10 जुलाई से घर से लापता थी। पहचान होने के बाद मंगलवार को पुलिस ने महिला के शव का पोस्टमार्टम कराया तब पता चला कि मौत के चार दिन बाद उसके शव को कछार में ठिकाने लगा कर कातिल फरार हो गए।

रविवार की दोपहर झूंसी थाना क्षेत्र के पूरे सूरदास कछार में स्थित पुलिया के नीचे एक अज्ञात महिला की भिभत्स लास मिली थी। उसकी हत्या कर बोर में भर कर कातिल यहा ठिकाने लगा गए थे। पुलिस महिला के शव की शिनाख्त व कातिलों की तलाश में जुटी हुई थी कि मंगलवार को कुछ लोग समाचार पत्रों में खबर पढ़कर झूंसी थाने पहुंचे जहा महिला के कपड़े व चप्पल को देख कर सरायइनायत के सीहीपुर निवासी राहुल पुष्कर ने महिला की पहचान अपनी माँ लक्ष्मीना 45 के रूप में की राहुल ने पुलिस को बताया कि वह अपनी माँ के साथ झूंसी हवेलिया मालियान टोला स्थित मकान में रहता था। वह लाल चौक पर फूल बेचती थी। 10 जुलाई की दोपहर घर से निकली थी उसको लगा कि वह गांव गई है। महीने भर से उसका फोन भी खराब था। इस लिया बात नही हो पाई। उसने बताया कि पहले भी उसकी माँ बिना बताये कही न कही चली जाती थी। थाना प्रभारी झूंसी ने बताया कि पोस्टमार्टम में रिपोर्ट में मौत का कारण स्पस्ट नही हो पाया पर यह बताया जा रहा है कि शव पुराना है बिसरा प्रिजर्व किया गया है। पुलिस सूत्रों की माने तो 10 को ही महिला की हत्या कर कातिल शव को कही छुपा रखे थे। शनिवार की रात कछार में फैक गए। चर्चा है कि महिला का पति ननकऊ भी डेढ़ साल पहले अचानक गायब हो गया था। जिसका आज तक पता नही चला।

अखाड़ा परिषद से 13 महामंडलेश्वर और संत निष्कासित,112 को नोटिस

प्रयागराज। संगम के तट पर आयोजित होने वाले महाकुंभ-2025 को लेकर सिर्फ शासन-प्रशासन ही नहीं, बल्कि साधु-संत भी सक्रिय हो गए हैं। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद लगातार ऐसे साधु-संतों को चिह्नित करने में जुटा है, जो धार्मिक कार्यों के बजाय धनार्जन और अन्य दूसरी गतिविधियों में लिप्त हैं। गोपनीय जांच के बाद परिषद ने ऐसे 13 महामंडलेश्वर और संत निष्कासित कर दिए हैं। वहीं, 112 संतों को नोटिस थमाया गया है। अगर ये सही जवाब नहीं देते हैं, तो इन्हें भी निष्कासित कर दिया जाएगा। निष्कासित किए गए महामंडलेश्वर और संत निष्कासित अखाड़ों की आंतरिक जांच में खरे नहीं उतरे। इसके बाद यह एक्शन लिया गया। निष्कासित हुए महामंडलेश्वर और संत महाकुंभ के लिए बैन हो गए हैं। इन्हें कुंभ में एंट्री नहीं मिलेगी।

30 सितंबर तक जवाब देना होगा : करीब 112 के संतों को नोटिस देकर जवाब मांगा गया है। जिन्हें नोटिस मिली है, उन्हें 30 सितंबर तक जवाब देना होगा। संतोषजनक जवाब न मिलने पर निष्कासन की कार्रवाई की जाएगी।ऐसे संतों को महाकुंभ-2025 में प्रवेश नहीं मिलेगा। अखाड़े सनातन धर्मावलंबियों की आस्था व समर्पण का केंद्र हैं। मौजूदा समय 13 अखाड़े हैं। उन्हें अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के माध्यम से संगठित किया गया है। अखाड़े से जुड़े संतों में कोई दोष न आए इसके लिए दो-तीन वर्ष के अंतराल पर समस्त अखाड़े अपने महामंडलेश्वर, मंडलेश्वर, महंत, श्रीमहंतों की कार्यप्रणाली की गोपनीय जांच करवाते हैं। जांच अखाड़े के पदाधिकारी करते हैं। इसमें उनका रहन-सहन, कार्यप्रणाली, किस प्रकार के लोगों से संबंध हैं? देखा जाता है। अपेक्षा के अनुरूप कार्यप्रणाली न मिलने पर नोटिस देकर जवाब मांगा जाता है, जिनमें ज्यादा दोष मिलता है उन्हें तत्काल अखाड़े से निष्कासित कर दिया जाता है। अप्रैल महीने में यह जांच शुरू की गई थी। जांच अभी भी जारी है। अब तक जूना अखाड़ा ने 54, श्री निरंजनी अखाड़ा ने 24, निमोर्ही अनी अखाड़ा ने 34 संतों को नोटिस दिया है। इसमें 13 महामंडलेश्वर, 24 मंडलेश्वर सहित महंत शामिल हैं। निर्मोही अनी अखाड़ा के अध्यक्ष व अखाड़ा परिषद (महानिर्वाणी गुट) के महामंत्री श्रीमहंत राजेंद्र दास ने आधा दर्जन संतों को अखाड़े से निष्कासित किया है। इसमें नासिक के महामंडलेश्वर जयनेंद्रानंद दास, चेन्नई के महामंडलेश्वर हरेंद्रानंद, अहमदाबाद के महंत राम दास, उदयपुर के महंत अवधूतानंद, कोलकाता के महंत विजयेश्वर दास शामिल हैं।इनके अलावा नासिक के 8, उज्जैन के 7, हरिद्वार के छह, द्वारिका के 10 व रांची के एक संत को नोटिस देकर जवाब मांगा गया है। वहीं, श्री निरंजनी अखाड़ा ने महामंडलेश्वर मंदाकिनी पुरी को निष्कासित करके उनके खिलाफ पुलिस की रिपोर्ट दर्ज करवाई है। इनके अलावा सात संतों को निष्कासित किया गया है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद व श्री नरंजनी अखाड़ा के अध्यक्ष श्रीमहंत रवींद्र पुरी ने कहा- 6 संतों की आंतरिक जांच में कई महामंडलेश्वर और संत खरे नहीं उतरे। निरंजनी अखाड़ा की महामंडलेश्वर मंदाकिनी पुरी को निष्कासित करके पुलिस की कार्रवाई कराई गई है। जो गलत होगा, उसके खिलाफ आगे भी कार्रवाई होगी। अखाड़े से निष्कासित लोगों को महाकुंभ-2025 में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। जूना अखाड़ा के अंतरराष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमहंत नारायण गिरी ने कहा- संतों की कार्यप्रणाली की जांच चल रही है। कुछ की स्थिति संदेहास्पद हैं, उन्हें नोटिस देकर जवाब मांगा गया है। उचित जवाब न मिलने पर निष्कासित किया जाएगा।

पंच परमेश्वर करते हैं महामंडलेश्वर का फैसला : हर अखाड़े का संचालन अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, उप सचिव, मंत्री, उप मंत्री, कोतवाल, थानापति आदि पदाधिकारियों के जरिए होता है। अखाड़े में 15-20 वर्ष समर्पित भाव से काम करने वाले पदाधिकारी बनाए जाते हैं।इनका चयन चुनाव के जरिए होता है। वहीं, पांच वरिष्ठ व विद्वान सदस्यों को पंच परमेश्वर की उपाधि दी जाती है। अखाड़े के आश्रम, मठ-मंदिर, गुरुकुल का संचालन यही करते हैं। महामंडलेश्वर किसे बनाना है किसे नहीं? उसका निर्णय यही लेते हैं। अखाड़ों के पदाधिकारी व पंच समस्त संतों पर नजर रखते हैं। जिन संतों की शिकायत मिलती है और उनकी गतिविधि संदेहास्पद रहती है। वहां संबंधित अखाड़े के सचिव, मंत्री, संयुक्त मंत्री स्तर के पदाधिकारी को भेजा जाता है। जहां का मामला होता है, वहां 15 से 20 दिन प्रवास करते हैं। बाहर रहकर सारी जानकारी एकत्र करते हैं।फिर संदिग्ध संत के आश्रम में कुछ दिनों तक प्रवास करके समस्त गतिविधियों पर नजर रखते हैं। इसके बाद रिपोर्ट अखाड़े के प्रमुख को देते हैं। इस रिपोर्ट को अखाड़े के पंच परमेश्वर के समक्ष रखा जाता है। सारे पहलुओं पर चर्चा करने के बाद निष्कासन अथवा नोटिस देने की कार्रवाई की जाती है।

21 से वाराणसी प्रयागराज मार्ग एक माह के लिए हो जाएगा वनवे

अखंड भारत संदेश

झूंसी। सावन माह 22 जुलाई से प्रारम्भ हो रहा है। कावरियों के लिए वाराणसी प्रयागराज मार्ग को एक माह के लिए वनवे कर दिया जाएगा। वाराणसी, जौनपुर, गोरखपुर सहित पूर्वांचल की ओर जाने वाली सभी बसों के रूट को डायवर्ट कर दिया जाएगा। मंगलवार को सीडीओ, डीसीपी गगां नगर मातहतों के साथ मार्ग का निरीक्षण किया और बताया कि 21 जुलाई से मार्ग को वनवे कर दिया जाएगा। बैरिकेटिंग का कार्य शुरू कर दिया गया है। सावन मास में कांवरियों का जत्था भोले बाबा पर जलाभिषेक के लिए प्रयागराज से जल भर कर काशी जाता है। कावरियों के सुरक्षा को देखते हुए 21 जुलाई से शास्त्री पुल से वाराणसी तक जीटी रोड को वनवे कर दिया जाएगा। सभी रोडवेज व प्राइवेट बसों के साथ बड़े वाहनो को झूंसी के बजाय फाफामऊ की ओर से भेजा जाएगा। डायवर्जन के दौरान एक माह तक वाराणसी मार्ग से गुजरने वालो को परेशानी का सामना करना पड़ता है। कांवड़ मार्ग पर डायवर्सन के लिए बांस बल्ली लगाकर मंगलवार से बैरिकेडिंग का काम शुरू कर दिया गया सोमवार को पुलिस कमिश्नर तरुण गाबा के साथ डीसीपी नगर दीपक भूकर, डीसीपी गंगानगर अभिषेक भारती ने शास्त्री पुल से हंडिया बरौत तक मार्ग का निरीक्षण किया था। मंगलवार को सीडीओ गौरव कुमार, डीसीपी गंगा नगर अभिषेक भारती ने एक बार फिर मार्ग का निरीक्षण कर मातहतों को कावरियों के सुरक्षा के दृष्टिगत दिशा निर्देश दिया।

झूंसी में बिजलीं कटौती से लोग परेशान

झूंसी। करवट बदल बदल कर बीती रात झूंसी। क्षेत्र में इन दिनों अधिक बिजलीं कटौती होने से लोग बेहद परेशान है। सोमवार की रात झूंसी में रहने वाली लाखों की आबादी को बिजलीं ने खूब रुलाया। उमस भरी गर्मी में इन्वर्टर भी दगा दे गए। बिजलीं न आने से मंगलवार की सुबह लोगो के घरों में पानी नही आया। सारी रात लोग बिजलीं विभाग के जेई, एसडीओ को फोन करते रह गए पर किसी का फोन नही उठा। कुम्भ मेले को लेकर झूंसी में सड़कों का चौड़ीकरण किया जा रहा है। जिसकी वजह से बिजलीं के पोल भी हट रहे है। पोल शिफ्टिंग व बंच केबल लगने की वजह से महीनों से दिन में किसी न किसी मोहल्ले की बिजलीं आपूर्ति बाधित रहती और रात में लोकल फाल्ट की वजह से लोगो की समस्या और बढ़ जाती है। सोमवार को रात में अंदावा में केबल में आग लगने की वजह से झूंसी के आवास विकास कालोनी योजना दो, तीन, छतनाग, आजाद नगर, हवेलिया, उस्तापुर महमूदा बाद, सरायतकी सहित कई मोहल्लों की बिजलीं गुल हो गई और जिम्मेदारों का फोन नही उठा। लोगो का कहना था कि दिन तो कट जाता है पर रात बिजलीं के बगैर नही कटती।

बदहाल चिकित्सा व्यवस्था पर सरकार से जवाब तलब

याचिकाकर्ता ने एम्स की मांग की, हाईकोर्ट में 1 अगस्त को होगी मामले की सुनवाई

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सचिव से प्रयागराज शहर में एम्स जैसी संस्था स्थापित करने की मांग को लेकर दाखिल जनहित याचिका पर जवाब मांगा है। याचिका की अगली सुनवाई की तारीख 1 अगस्त तय की गई है। यह आदेश न्यायमूर्ति एमके गुप्ता तथा न्यायमूर्ति मनीष कुमार निगम की खंडपीठ ने सहज सारथी फाउंडेशन व एक अन्य की जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए दिया।कोर्ट ने कहा यह कोई प्रतिकूल याचिका नहीं है। विश्वास है कि प्रयागराज शहर की स्वास्थ्य सेवाओं की वास्तविक स्थिति पर विचार करते हुए सरकार इस दिशा में सुधारात्मक उपाय करने पर? विचार करेगी। याचिका पर याची अधिवक्ता सत्येन्द्र चंद्र त्रिपाठी व भारत सरकार की तरफ से अधिवक्ता संजय कुमार ओम ने पक्ष रखा।

प्रयागराज की चिकित्सा सुविधा बदतर

याची अधिवक्ता का कहना था कि प्रयागराज की चिकित्सा सुविधा की हालत सही नहीं है। यहां केंद्रीय विश्वविद्यालय व मेडिकल कालेज है। हाईकोर्ट सहित तमाम केंद्रीय व राज्य की संस्थाएं, लोक सेवा आयोग,डी आर टी ,कैट,एन सी एल टी, रिसर्च इंस्टीट्यूट, तकनीकी कालेज आदि संस्थान है। 2011 की जनगणना के अनुसार प्रयागराज की जनसंख्या 59,54,390 थी। चार जिलों की कमिश्नरी यही है। एक मेडिकल कालेज व एक टी बी सप्रू अस्पताल राज्य सरकार से संचालित है। इनके भवन खस्ता हाल में है। चिकित्सा गुणवत्ता पर सवालिया निशान हैं।याची का कहना है कि प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना 2003 के तहत शहर की स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के लिए एम्स जैसी संस्था का निर्माण प्रयागराज जिला में किया जाना जरूरी है। कोर्ट ने मुद्दा विचारणीय माना और केंद्र सरकार से जवाब मांगा है।

जल जीवन मिशन द्वारा वितरित किया गया किट

सोरांव। स्थानीय तहसील क्षेत्र के विकास खंड होलागढ़ में मंगलवार को जल जीवन मिशन योजना के तहत प्रत्येक ग्राम पंचायत से नौ लोगों जिसमें आशा, एएनएम, आंगनवाड़ी कार्यकत्री, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, समूह सखी महिलाओ को किट वितरण किया गया। सोमवार को जल जीवन मिशन के कर्मचारियों और पदाधिकारियों द्वारा लोगों को प्रशिक्षण दिलाया गया था। जिसके क्रम में मंगलवार को विकास खण्ड होलागढ़ के राम कुमार शुक्ल पीजी कॉलेज सिंहगढ़ में किट वितरण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीजेपी विधायक गुरु प्रसाद मौर्य संग त्रिभुवन सिंह मंडल अध्यक्ष होलागढ़ रहे। मुख्य अतिथि ने उपस्थित सभी लोगों को बताया कि शुद्ध पानी जीवन के लिए जीवन में बहुत ही जरुरी है। इसलिए सभी प्रशिक्षण प्राप्त लोग अपने अपने क्षेत्रों में जाकर शुद्ध और साफ पानी पीने के लिए जागरूक करें। इतना ही नहीं जीवन को सही प्रकार से जीने के लिए पानी की बबार्दी को रोकने की भी बात कही। विधायक ने कहा कि यह योजना प्रधानमंत्री की स्वर्णिम योजना है। ग्राम पंचायत स्तर पर सभी लोगों को जागरूक करने के लिए यह प्रशिक्षण कार्यक्रम करने के पश्चात किट वितरण का सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि पानी का शुद्धिकरण करके लोगों को जागरूक करें। मिशन का यह प्रशिक्षण और किट वितरण कार्यक्रम मेरा पथ एजुकेशन लिमिटेड द्वारा किया गया। जिसमें मुख्य रूप से अभिषेक शुक्ला, डॉक्टर श्रुति शर्मा मास्टर ट्रेनर (रहरट)शिवाजी राठौर, ओमप्रकाश, सुभाष चंद्र, पंकज, सुशील कुमार, चंद्र शेखर आजाद, प्रमोद पटेल,रोली यादव, विजय प्रधान,अभिषेक यादव जिला पंचायत सदस्य होलागढ़, सिमरन, मयंक यादव आदि रहे।

जिला विकास अधिकारी की अध्यक्षतता में हुई जिला स्तरीय सलाहकार/समीक्षा समिति की बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। जिला विकास अधिकारी भोलानाथ कनौजिया की अध्यक्षता में मंगलवार को संगम सभागार में जिला स्तरीय सलाहकार/समीक्षा समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिला विकास अधिकारी ने वार्षिक ऋण योजना, ऋण-जमानुपात, किसान क्रेडिट कार्ड, वित्तीय समावेशन योजना, स्वयं सहायता समूह, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गयी। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए जिला विकास अधिकारी ने शाखा स्तर पर लम्बित समस्त आवेदन पत्रों का शीघ्रता के साथ निस्तारण करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि यदि निस्तारण में किसी भी प्रकार की समस्या आयें, तो डीआईसी को समस्या से अवगत कराते हुए उसका निस्तारण ससमय करा लिया जाये। किसान क्रेडिट कार्ड

बनाये जाने की प्रगति की समीक्षा करते हुए जिला विकास अधिकारी ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप हर किसान परिवार में कम से कम एक केसीसी होना चाहिए। उन्होंने बैंको को अधिक से अधिक लोगो को किसान क्रेडिट कार्ड निर्गत करते हुए जनपद को केसीसी से संतृप्त किए जाने के लिए कहा है। प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना की समीक्षा में कई शाखाओं में योजनान्तर्गत लम्बित आवेदन पत्रों पर उन्होंने आवेदन पत्रों का शीघ्रता के साथ निस्तारण कराते हुए पात्र पथ विक्रेताओं को ऋण वितरित किए जाने के लिए कहा है। ऋण-जमानुपात को बढ़ाने के लिए योजनाओं के अन्तर्गत अधिक से अधिक पात्र लोगो को ऋण दिए जाने के लिए कहा है। उन्होंने सभी बैंको को ज्यादा से ज्यादा पात्र लोगो को कैसे लाभान्वित कराया जा सकता है, के लिए कार्ययोजना बनाये जाने के लिए कहा है। बी0सी0 सखियों को और सशक्त बनाये जाने के लिए भी कहा है। इस अवसर पर एलडीएम, उद्यान अधिकारी ममता मिश्रा सहित सभी बैंको के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

मामा के यहां आये दलित को दौडा दौडा कर पीटा सात के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। अपने मामा के यहां आया दलित युवक को रंजिशन कतिपय लोगों ने दौडा दौडा कर पीटा जाति सूचक गालियां दी। पुलिस ने सात के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्रतापगढ़ के थाना देल्हूपुर खरवई निवासी विद्या सागर पुत्र शिवनाथ अपने मामा के घर मऊआइमा के अलावलपुर घूरघाट आया था। ननिहाल की दुश्मनी को लेकर कतिपय लोगों ने दौड़ा दौड़ा कर मारा पीट जान से मारने की धमकी दी। विद्या सागर ने मऊआइमा थाने में असफाक उर्फ मुंसी,आफाक अहमद, इसरार अहमद, अंसार अहमद, इस्तियाक अहमद,सफात अली, इरफान के विरुद्ध मार पीट तथा एससी एसटी एक्ट में मुकदमा दर्ज करा दिया है।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरा यूपी बोर्ड हाई स्कूल वर्ष 2012 अनुक्रमांक 2110722 का अंक पत्र सह प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है।

मोहम्मद अनस पुत्र श्री मोहम्मद अहमद
निवास- ओल्ड झूंसी हवेलिया प्रयागराज।

बच्चे अपना लक्ष्य निर्धारित कर अपना भविष्य निर्धारित करे: जिविनि

न्यू एन्जिल्स में हाईस्कूल व इण्टर टापर्स को किया गया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। न्यू एंजिल्स सी से स्कूल में वर्ष 2024के हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के टापर्स को सम्मानित करने के लिये विद्यालय प्रांगण में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक ओमकार राणा रहे। विशिष्ट अतिथि डॉ दयाराम मौर्य रत्न जी पूर्व सहायक जिला विद्यालय निरीक्षक, औरआर बी सिंह,पूर्व जिला सूचना अधिकारी, रौशनलाल उमरवैश्य, समाज सेवी, संतोष मिश्रा, प्रवक्ता जी आई सी,

आनन्दमोहन ओझा, सुनील जी के अतिरिक्त छात्र छात्राएं, अभिभावक गण, और एन्जिल्स परिवार कार्यक्रम में उपस्थित थे।कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन सरस्वती पूजन, वंदन

जिला विद्यालय निरीक्षक को सम्मानित करती डा. शाहिदा।

से हुआ। चेयर पर्सन डॉ शाहिदा ने आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। इसी कड़ी में उन्होंने जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़, श्री ओमकार राणा जी को बुके भेंट करके, शाल पहनाकर और मोमेन्टो देकर सम्मानित किया। तत्पश्चात विद्यालय की ओर से हाईस्कूल और इण्टर के टाप 25 छात्र छात्राओं को जिला विद्यालय निरीक्षक के कर कमलों द्वारा मेडल्स पहनाकर और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय प्रबन्धन की ओर से कक्षा दस के टापर अरुणेंद्र सिंह को 5100ध्की पुरस्कार राशि प्रदान की गयी। जिला विद्यालय निरीक्षक ने अपने अभिभाषण में बच्चों को अपना लक्ष्य निर्धारित करके पढ़ने की सलाह दी और हिदायत दी कि जब तक पढ़ाई का दौर चल रहा है मोबाइल का कम उपयोग करें वहीं डॉ दयाराम मौर्य रत्न जी ने सभी छात्र छात्राओं को शुभकामना देते हुए राबर्ट फ्रास्ट की चार लाइनें सुनाकर यह संदेश दिया कि दुनिया में बहुत सी ऐसी चीजें हैं जो आपके लक्ष्य को पाने में रुकावट पैदा करेगी लेकिन आपका अपने लक्ष्य पर ध्यान देना अतिआवश्यक है।प्रधानाचार्य श्री बी के सोनी ने बच्चों को बधाई देते हुए आए हुए सभी अतिथियों का हृदय से आभार प्रकट किया।

मण्डल में प्रथम स्थान पाने पर सम्मानित करते प्राचार्य व शिक्षकगण

युवोत्सव में अव्वल छात्रा सहित 12 को प्रशस्ति पत्र से नवाजा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा आयोजित युवोत्सव में एकल शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता में पीबीपीजी कालेज की बी.एड. विभाग की छात्राध्यापिका ऋचा त्रिपाठी ने मण्डल स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। प्राचार्य प्रो.अमित कुमार श्रीवास्तव ने ऋचा त्रिपाठी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इसके अलावा रंगोली, नृत्य,सुर संधान,भाषण प्रतियोगिता सहित विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में बेहतर प्रदर्शन करने वाली 11 छात्राओं को प्राचार्य ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं से छात्रों की बहुमुखी प्रतिभा निखर कर सामने आती है। इस दौरान प्रो.बृजभानु सिंह,प्रो.ब्रम्हानंद प्रताप सिंह,प्रो.उपेंद्र कुमार सिंह, रश्मि सिंह,डा.भावना सिंह, डा.नीरज त्रिपाठी,डा.भूपाल सिंह आदि मौजूद रहे।

कालाकाकर पावर हॉउस से जुड़े फीडर मे बिजली की कटौती से मचा हुआ हाहाकार

उपभोक्ताओं मे बिजली कटौती को लेकर आक्रोश'

अखंड भारत संदेश

परियावां प्रतापगढ़। लोक सभा चुनाव के खत्म होते ही बिजली की दो शिफ्टो मे 7 घंटे की कटौती को लेकर उपभोक्ताओं मे आक्रोश दिखाई देने लगा है जो कभी भी कोई रुपवले सकता है।

मालूम हो कि कालाकांकर पावर हॉउस से जुड़े फीडर आलापुर, कालाकांकर व बाजिदपुर मे लोक सभा चुनाव के खत्म होते ही बिजली की दो शिफ्ट मे 7 घंटे की कटौती शुरु कर दी गई है। कटौती के अलावा बीच बीच मे लोकल फाल्ट के चलते बिजली चली जाती है दिन व रात को 5-5 मिनट के लिए रह रहकर बिजली की कटौती की जा रही है बिजली की इस मनमानी कटौती से उपभोक्ताओं मे आक्रोश ब्याप्त है जो रह रहकर विभाग के साथ सरकार पर कटाक्ष कर रहे है। स्थानीय उपभोक्ताओं ने प्रदेश के मुख्यमंत्री से 7 घंटे की इस भीषण गर्मी मे कटौती बंद करने की मांग है जिससे भीषण गर्मी से लोगो को राहत मिल सके।

राजनीति के अजेय योध्या के रूप में जाने जाते है प्रमोद तिवारी: श्याम किशोर शुक्ल

सद्भावना दिवस के रूप में मनाया गया प्रमोद तिवारी का जन्मदिन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। वरिष्ठ कांग्रेस नेता, राज्यसभा संसाद, उपनेता राज्यसभा मा० प्रमोद तिवारी जी का जन्मदिन सद्भावना दिवस के रूप में धूमधाम से नगर के शैल श्याम पैलेस में मनाया गया।

सद्भावना दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पं श्याम किशोर शुक्ल, पूर्व प्रदेश महासचिव उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने प्रमोद तिवारी जी को जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा भारतीय राजनीति के एक अजेय योद्धा के रूप में जाने जाते है और जनता की निरंतर सेवा और अपने सतत विकास कार्यों से विश्वास को बनाये रखा है। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो लालजी त्रिपाठी ने प्रमोद के शतायु होने की कामना करते हुए कहा कि हम प्रतापगढ़ के लोग बहुत ही भाग्यशाली है जो हमे ऐसे राजनेता मिले जिनका आज पूरे भारत मे आपका नाम गूंजता है। डॉ नीरज त्रिपाठी जिला अध्यक्ष कांग्रेस ने कहा कि प्रमोद जी एक आदर्श राजनेता के रूप में कार्य कर रहें है, देश प्रदेश में उनके व्यक्तित्व का शायद ही कोई दूसरा राजनेता हो।ज्ञान प्रकाश शुक्ल ने कहा प्रमोद तिवारी जी भारतीय राजनीति के नैतिक सिद्धांतों के प्रतीक है और सच की आवाज के रूप में वो जनता के सच्चे जन प्रतिनिधि है।

इरफान अली शहर अध्यक्ष

समारोह को सम्बोधित करते वरिष्ठ कांग्रेस नेता श्याम किशोर शुक्ल।

ने जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा की नेता जी बहुआयामी व्यक्तित्व के जननेता है जो देश समाज को जोड़ते रहने का काम करते रहते है।डॉ वी. के. सिंह ने कहा नेता जी प्रतिदिन जनसेवा का विचार आत्मसात करते है जो उनके विकास की गाथा से उन्हें अजेय बनाता है।

मौलाना वाहिद ने कहा आज के दौर के गांधी है प्रमोद तिवारी जी क्योंकि वो मोह्हबत, भाईचारे की मिशाल है। डॉ प्रशांत देव शुक्ल संयोजक ने नेता जी को जन्मदिन की बधाई देते हुए कहा नेता जी कि 5 दशक के राजीनीतिक जीवन मे जो विकास कार्यों से जन समर्पण दिखाया है वो अविस्मरणीय है, सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।कार्यक्रम में वक्ता पं श्याम शंकर मिश्र प्रबंधक, महेंद्र शुक्ल, सुनीता पटेल, विधिदेव शुक्ल, लल्लन सिंह, संदीप त्रिपाठी, सूर्य प्रकाश शुक्ल, सरोज कश्यप, सुरेश मिश्रा, चरनजीत सिंह ने प्रमोद जी से जुड़े संस्मरण सुनाए उपस्थित सम्मानित जनों ने नेता जी को जन्मदिन की बधाई दिया और केक काटकर एक दूसरे को खिलाया।कार्यक्रम में भजन गायक रवि शंकर मिश्रा ने सोहर और कजरी का गायन कर सभी को आनन्दित कर दिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पं राम विभूति मिश्रा प्रबंधक, रमेश चंद्र मिश्र प्रधानाचार्य, प्रमोद कुमार तिवारी, रामरतन तिवारी, योगेश यादव, दिलीप गौतम, वेदांत तिवारी, संजय इश्तियाक, इंद्रानंद तिवारी, उमेश तिवारी, आकाश मिश्रा, नागेंद्र पांडेय, सुभाष तिवारी, विवेक पांडेय, ए पी तिवारी, राजेन्द्र वर्मा, अभय त्रिपाठी, अशोक सिंह, आशुतोष तिवारी, मनीष सिंह, शिव कुमार तिवारी, राधेश्याम दुबे, प्रदीप सिंह, अरुण शुक्ल, मनोज मिश्रा, शुभम मिश्रा, मो बिलाल, राहुल मिश्र, मो सईद, प्रमोद मिश्र, मो सलामत, फतेह बहादुर सिंह, सलमान भाई, बीएल वर्मा, राजेन्द्र तिवारी, पृथ्वीराज गौतम, नूर आलम, अनिल मौर्य, रामधन यादव आदि उपस्थित हुए और सभी ने प्रमोद तिवारी जी को जन्मदिन की बधाई दी।

प्रमोद के जन्मदिन पर हवन पूजन, फल वितरण के साथ दीर्घायु की हुई कामना

बाबा घुइसरनाथ धाम समेत विभिन्न स्थानों पर हुआ हवन पूजन व सुन्दरकाण्ड का सामूहिक पाठ, सीएचसी में बंटा मरीजों को फल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उप नेता प्रमोद तिवारी के जन्मदिन पर मंगलवार को कांग्रेसियों व समर्थकों ने बाबा घुइसरनाथ धाम समेत विभिन्न स्थानों पर हवन पूजन सुन्दरकाण्ड के सामूहिक पाठ व अस्पतालों में मरीजों को फल वितरण करते हुए दीर्घायु होने की कामना की। रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र में प्रमोद तिवारी के जन्मदिन को लेकर पूरा दिन खुशनुमा माहौल मे देखा गया।

लालगंज सीएचसी में सांसद प्रमोद के जन्मदिन पर मरीजों को फल वितरित करते समर्थक।

पौराणिक स्थली बाबा घुइसरनाथ धाम में हवन पूजन तथा आरती के साथ समर्थकों व कार्यकर्ताओं ने प्रमोद तिवारी के दीर्घायु होने को लेकर मत्था टेका। यहां कार्यक्रम का संयोजन ब्लाक प्रमुख अशोक सिंह बबलू व प्रभात ओझा ने किया। लालगंज में क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के कैम्प कार्यालय पर आयोजन समिति द्वारा सामूहिक सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संयोजन संयोजक ज्ञानप्रकाश शुक्ल, ब्लाक प्रमुख अमित सिंह पंकज, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी व विकास मिश्र ने किया। जन्मदिन को लेकर कार्यकर्ता व समर्थक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लालगंज भी पहुंचे। यहां चिकित्साधीक्षक डा. अरविन्द गुप्ता की देखरेख में मरीजों व तीमारदारों को फल वितरित किया गया।

निःशुल्क शिविर में दो सौ मरीजों का हुआ नेत्र परीक्षण

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सदगुरू सेवा संस्थान सतना के तत्वाधान में लालगंज के ढिगवस में निशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। संयुक्त अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष बालेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने फीता काटकर शिविर का विधिवत उदघाटन किया। शिविर मे नेत्र विशेषज्ञों ने कुल दो सौ मरीजों की आंख का परीक्षण किया और इस दौरान बीस मरीजों को मोतियाबिंद में चिन्हित कर उन्हें इलाज के लिए एम्बुलेंस से चित्रकूट स्थित अस्पताल भेजवाया। शिविर का संयोजन आचार्य कमलेशचंद्र व छेदीराम ने किया। इस मौके पर रामसजीवन पटेल, बाबूलाल गौतम, सीताराम सरोज, पूर्णेन्द्रमणि त्रिपाठी, बालकृष्ण त्रिपाठी, रईस, अलीरजा, बनवारी लाल गौतम, कामेश्वर शर्मा आदि मौजूद रहे।

बीच सड़क तलवार से काटा केक, फोड़ा बम मचा हड़कंप

ग्राम प्रधान की सूचना पर पहुंची पुलिस जांच में जुटी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़ पट्टी। कोतवाली क्षेत्र के रमईपुर नेवादा गांव में बीच सड़क पर बाइक पर रखकर तलवार से केक काटने व बम फोड़ने का मामला प्रकाश में आया है। सूचना पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। गांव के रहने वाले आशीष पुत्र रामप्रताप के बेटे का जन्मदिन सोमवार को था। जन्मदिन पर वह अपने दोस्तों संग गांव में ही बीच सड़क पर साथियों के साथ बुलेट बाइक पर रखकर तलवार से केक काटा और बम फोड़े जिससे स्वच्छता अभियान के तहत बने भवन का टीन शेड क्षतिग्रस्त हो गया

बीच सड़क पर तलवार से केक काटने के बाद पहुंची पुलिस और लोग

और लगाया गया कूड़ेदान भी क्षतिग्रस्त हो गया। वहीं जोरदार बम धमाके से ग्रामीणों में दहशत फैल गई। मामले की सूचना ग्राम प्रधान द्वारा पुलिस को दी गई। मामले में ग्रामीणों की मानें तो मौके पर पहुंची पुलिस ने बुलेट बाइक के साथ मौके पर मौजूद कई दोपहिया वाहनों का चालान कर दिया साथ ही तलवार कब्जे में लेकर आई है।कोतवाल आलोक कुमार का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है।

पत्नी की प्रताड़ना से परेशान युवक ने पुलिस से लगाई न्याय की गुहार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पत्नी की प्रताड़ना से परेशान होकर युवक ने बीते सोमवार को थाने पहुंचकर अपने जान की रक्षा की गुहार लगाई है।बता दें कि आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के देवरखा गांव निवासी आशीष कुमार यादव की शादी शिवांगी यादव निवासी मुड़िलाडीह कादीपुर जनपद सुल्तानपुर के साथ बीते डेढ़ माह पूर्व हुई थी।पीड़ित युवक का कहना है कि शादी के बाद से ही आए दिन पत्नी द्वारा तरह-तरह से उसे प्रताड़ित कर रही है।फर्जी मुकदमे में फंसा कर उसे व उसके परिवार को बर्बाद करने की धमकी दी है।युवक की पत्नी अपने भाई के साथ अपने मायके बीते शुक्रवार को चली गई। इसकी जानकारी पत्नी ने अपने ससुराल पक्ष के किसी को नहीं दी। जबकि पति का दावा है कि उसके पास पत्नी के मायके जाने का साक्ष्य मौजूद है।यह सब उसके द्वारा इसलिए किया जा रहा है कि पति को अपहरण सहित अन्य मुकदमों में फसाया जा सके।पीड़ित ने आसपुर देवसरा थाने पहुंचकर अपनी पत्नी के विरुद्ध तहरीर देकर अपने परिवार व स्वयं के प्राण रक्षा की गुहार लगाई है। मामले में पुलिस जांच पड़ताल कर रही है।

दिव्यांग सूर न्याय पाने के लिए लगा रहा जिला कचहरी का चक्कर

'संग्रामगढ़ पुलिस प्रधानपति के लिए पढ़ रही कसीदे'

अखंड भारत संदेश

परियावां प्रतापगढ। एक तरफ जिले के पुलिस अधीक्षक डा अनिल कुमार पीड़ितों को थाने पर न्याय दिलाने के लिए अपने मात हतो को कड़े निर्देश दे रखे है तो वही दूसरी तरफ संग्रामगढ पुलिस अपने आला कमान के सारे किये कराये पर पानी फेरर्क गुमराह करने मे कोई कसर बाकी नही छोड़ रहे है ऐसा ही मामला जनपद के संग्रामगढ़ थाना क्षेत्र के उगई का पुरवा मजरे रामापुर का प्रकाश मे आया जंहा के निवासी रामधनी सरोज पुत्र रामदुलारे सरोज जो दोनो आँखो से सूर है न्याय की गुहार में जिला कचहरी का चक्कर काट रहा है दिव्यांग सूर का गुनाह सिर्फ इतना है कि वह अपने मन माफिक मताधिकार का प्रयोग बीते लोकसभा चुनाव में किया था जो कि राजनीतिक रसूख वालो को दिव्यांग सूर का मताधिकार गंवारा नही हुआ और 23 जून 24 सुबह आठ बजे गीता के दुकान पर बेइज्जत होकर चुकाना पड़ा दिव्यांग सूर रामधनी का आरोप है कि रामपुर दाबी प्रधानपति नन्हें लाल यादव पुत्र मंगल यादव ने उसे जातिसूचक गालियां देते हुए धक्का देकर गिरा दिया और लात घूंसो से मारा-पीटा दिव्यांग सूर पुलिस अधीक्षक से न्याय की गुहार लगाई है।प्रधानपति के राजनीतिक रसूख के आगे संग्रामगढ़ पुलिस उसके लिए कसीदे पढ़ रही है।संग्रामगढ़ पुलिस अपने आला अफसर को आधी अधूरी कहानी बताकर प्रधानपति को बचाने में लगी हुई है।अब देखना है कि दिव्यांग सूर को न्याय मिलता है यह प्रधानपति नन्हें लाल के राजनीतिक रसूख के आगे थक हार कर बैठ जाता है। यह तो कार्रवाई होने पर ही पता चलेगा।

परियाँवा मे त्योहार को देखते हुए नालियाँ की हुई सफाई

'ए डी ओ पंचायत कालाकाकर खड़े होकर सफाई कराया'

अखंड भारत संदेश

परियावां प्रतापगढ़। मोहर्रम त्योहार को देखते हुए ब्लाक कालाकांकर की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत परियावां मे मंगलवार को बीडीओ कालाकांकर प्रवीन कुमार श्रीवास्तव व ए डी ओ पंचायत सुशील जायसवाल सोमवार को सदस्य जिला पंचायत अनुज सोनकर की शिकायत व सोशल मीडिया पर वायरल हुई।

परियावां मुस्लिम बस्ती की बज बजा रही नालियाँ को गंभीरता से लेते हुए अपने स्टॉफ के साथ मौके पर पहुँचे और सफाई कर्मियों को निर्देश दिया कि मंगलवार की सुबह नालिया की साफ सफाई मे अपनी टीम के साथ लग जाये जिस पर सफाई कर्मियों की टीम मंगलवार की सुबह से नालियाँ की सफाई मे जुट गई । नाली की साफ सफाई हो जाने से जंहा स्थानीय लोगो ने मोहर्रम को लेकर काफी उत्साहित दिखाई दिये

परियावां में नाली की सफाई करते कर्मचारी।

वही सदस्य जिला पंचायत अनुज सोनकर व हसन असर्क व अन्य लोगो ने बीडीओ व ए डी ओ के प्रति आभार ब्यक्त किया और कहा कि मोहर्रम त्योहार को देखते हुए सराहनीय कार्य किया गया है इसी तरह हिन्दु मुस्लिम के त्योहार पर साफ सफाई का अभियान चलता रहे तो गांव की नालियाँ साफ रहा करे हसन असर्क व मुस्लिम भाइयो ने ब्लाक के सभी स्टॉफ व सफाई कर्मियों को मोहर्रम के त्योहार की शुभकामनाये दिया।

शिक्षकों की एकता के आगे यूपी सरकार हुई मजबूर, ऑनलाइन अटेंडेंस को किया स्थगित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आनलाईन एक्टिविटी कैंसिल करने की बात को लेकर शिक्षक शिक्षामित्र अनुदेशक कर्मचारी संयुक्त मोर्चा उ0 प्र0 ने सचिवालय में उत्तर प्रदेश शासन से वार्ता करने से किया इनकार जिससे शासन और प्रशासन आया दबाव में।जिला संयोजक डा0विनोद त्रिपाठी ने बताया कि जनपदीय शिक्षको एवं कार्मिकों के कचेहरी में जिलास्तरीय धरना एवं प्रर्दशन ने शासन को शिथिलता बरतने पर किया मजबूर । जिससे मुख्य सचिव जी ने ऑनलाइन अटेंडेंस स्थगित करने की बात कही है। संयुक्त मोर्चा के प्रदेश नेतृत्व ने कहा कि मोर्चा ऑनलाइन अटेंडेंस रद्द करने के पक्ष में शुरुआत से ही है। उसके संघर्ष और कार्यक्रम में को ढिलाई नहीं बरती जायेगी। शिक्षकों की समस्याओं पर विस्तार से वार्ता हो तब ही उसका निकलेगा समाधान। साथ ही अगली बैठक में रणनीति बनाने की बात दुहराई है। बता दे कि सूत्रों के हवाले से शिक्षकों से जुड़ी बड़ी खबर फ्लैश हो रही है कि शासन ने डिजिटल अटेंडेंस को किया गया है स्थगित । मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह से मिला शिक्षक संघ, जिसके बाद मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने दिए डिजिटल अटेंडेंस को स्थगित करने के आदेश। जिसमें उन्होंने एक कमेटी बनाकर समस्या का निस्तारण किया जाने की बात कही है।

मारपीट व धमकी को लेकर चार लोगों के खिलाफ दर्ज हुआ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने मारपीट व धमकी की घटना को लेकर चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के जलेशरगंज धारूपुर निवासी मोईन अंसारी के पुत्र शहबान अंसारी ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि चैदह जुलाई की सुबह करीब ग्यारह बजे पुरानी रंजिश को लेकर गांव के बबलू उर्फ एलमुलुददीन, मोईनुददीन, फरीदुददीन पुत्रगण पहलवान उर्फ नुरूल व एक अज्ञात ने गाली देते हुए उसे लाठी डंडे से मारपीट कर घायल कर दिया।

जनपद स्तरीय शादी अनुदान स्वीकृति समिति अनुश्रवण समिति की हुई बैठक

आवेदनों का सत्यापन कराकर पात्र लोगों को लाभान्वित करने के सीडीओ ने दिए निर्देश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ. रवि किशोर त्रिवेदी की अध्यक्षता में उदयन सभागार में जनपद स्तरीय शादी अनुदान स्वीकृति समिति/ अनुश्रवण समिति की बैठक संपन्न हुई बैठक में जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी श्री अश्वनी कुमार ने बताया कि पोर्टल पर शादी अनुदान योजना के तहत 399 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिसमें 91 आवेदनों का सत्यापन हो चुका है तथा 308 आवेदनों का सत्यापन लंबित है। मुख्य विकास अधिकारी ने जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी को संबंधित उप जिला अधिकारियों, खंड विकास अधिकारियों एवं अधिशासी अधिकारियों से समन्वय कर लम्बित आवेदनों का शीघ्र सत्यापन कराकर पात्र लोगों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी ने बताया कि शासन द्वारा शादी अनुदान योजना के तहत अन्य पिछड़े वर्ग के गरीब व्यक्तियों के पुत्री की शादी के लिए रुपए 20 हजार दिए जाने का प्रावधान है। इस योजना के तहत वे व्यक्ति पात्र होंगे,जिनकी वार्षिक आय ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में रू0- एक लाख से अधिक न हो। शादी वर्तमान वित्तीय वर्ष के अन्तर्गत होनी चाहिए। वृद्धावस्था पेंशन/ पति की मृत्युपरान्त निराश्रित महिला पेंशन / दिव्यांग पेंशन पाने वाले आवेदकों को आय प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं होगी। तहसील द्वारा ऑनलाइन निर्गत जाति प्रमाण पत्र का क्रमांक ऑनलाइन आवेदन में अंकित करना अनिवार्य होगा। विवाह के लिए किये गये आवेदन में पुत्री की आयु शादी की तिथि को 18 वर्ष या उससे अधिक होनी अनिवार्य है। पति की मृत्युपरान्त निराश्रित महिला अथवा दिव्यांग को वरीयता प्रदान की जायेगी। एक परिवार में अधिकतम 02 पुत्रियों की शादी के लिए अनुदान अनुमन्य होगा तथा ऑनलाइन भरे गये आवेदन पत्रों की वरीयता साफ्टवेयर के माध्यम से निर्धारित की जायेगी बैठक में उप जिलाधिकारी मंझनपुर आकाश सिंह एवं सिराथू महेंद्र कुमार श्रीवास्तव सहित सभी खंड विकास अधिकारीगण उपस्थित रहे।

हत्या के आरोपी से दरोगा की दोस्ती को एडीजी ने लिया संज्ञान

अपर पुलिस अधीक्षक को एडीजी ने संपूर्ण प्रकरण की सौपी जांच

कौशांबी। पुलिस महकमें में अपराधियों से दोस्ती कर धन वसूली करने के चलते पुलिस महकमें की स्वच्छ छवि पर महकमे के ही कुछ लोग दाग लगा रहे हैं इसी तरह का एक मामला कोखराज थाना क्षेत्र के दरोगा हरीश तिवारी का अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज के सामने पहुंचा है जिस पर उन्होंने दरोगा के कारनामे को गंभीरता से लिया है और पुलिस अधीक्षक कौशांबी बृजेश श्रीवास्तव को पत्र लिखकर संपूर्ण प्रकरण की जांच अपर पुलिस अधीक्षक से कराए जाने का निर्देश दिया है मामले में यदि निष्पक्ष तरीके से जांच हुई तो हत्या के आरोपियों से दरोगा के संबंध उजागर होंगे और दरोगा को कठोर दण्ड मिलेगा। गौर तलब के कोखराज थाना क्षेत्र के साई का पुरवा गांव निवासी अधिवक्ता हेमंत कुमार पुत्र विनय कुमार ने अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज को 09 जुलाई को शिकायती पत्र देकर अवगत कराया कि मुकदमा अपराध संख्या 514 सन 2021 वा मुकदमा अपराध संख्या 515 सन 2023 वा मुकदमा अपराध संख्या 568 सन 2023 वा मुकदमा अपराध संख्या 117 सन 2024 वा हाई कोर्ट के पीआईएल की कॉपी संग्लन करते हुए दरोगा के कारनामे को बताया हत्या की आरोपी महिला को दरोगा अपने कमरे पर बुलाता है और वही साजिश रस के दरोगा महिला के जरिए झूठी शिकायती प्रार्थना पत्र अधिकारियों के यहां दिलवाता है यह दरोगा पुलिस विभाग का कर्मी कम नेता ज्यादा बन चुका है वीरेंद्र कुमार की मौत के मामले में महिला हत्या की नामजद मुलजिम है महिला को जेल भेजने के बजाय हरीश तिवारी दरोगा उसके साथ साजिश रच करके पेश बंदी में उससे झूठी तहरीर दिलवाते हैं जिससे हत्या के नामजद मुलजिम जेल जाने से बच जाए और दरोगा की जेब भर जाए मामला एजी की चौखट पर पहुंचा तो उन्होंने मामले को गंभीरता से लिया और पूरे प्रकरण की जांच एएसपी को सौप दी है।

न्यूज झरोखा

एसडीएम ने रिकार्ड रूम का किया औचक निरीक्षण

अझुवा कौशांबी। उपजिला अधिकारी सिराथू महेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने आज मंगलवार को तहसील के रिकार्ड रूम का औचक निरीक्षण किया इस दौरान रिकार्ड रूम में कार्यरत कर्मचारी हड़बड़ा गए ,रिकार्ड रूम में कार्यरत कर्मचारियों को जरूरी दिशा निर्देश दिया। उन्होंने रिकार्ड रूम में टूटे लगे शीशों को शीघ्र बदलवाने को कहा है,जो भी दस्तावेज इधर उधर लगे हों उन्हें क्रम से सही किया जाय, एस डी एम ने रजिस्टार कानूनगो दफ्तर का भी निरीक्षण कर मातहतों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए हैं मौके पर मौजूद कानून गो और लेखपालो को आने वाले फरियादियों का कार्य वरीयता के क्रम में शीघ्रातिशीघ्र निपटाएं जाने का उप जिला अधिकारी ने निर्देश दिया है

अपर पुलिस अधीक्षक ने ली परेड की सलामी

कौशाम्बी अपर पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी अशोक कुमार वर्मा द्वारा पुलिस लाइन कौशाम्बी में मंगलवार की परेड की सलामी ली गयी तथा परेड का टोली बार निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के दौरान महोदय द्वारा परेड में उपस्थित समस्त पुलिसकर्मियों के टर्नआउट का अवलोकन कर बेहतर टर्नआउट मेंटेन करने हेतु निर्देशित किया गया। पुलिस कर्मियों को फिट रहने हेतु दौड़ लगवाई गई एवं ड्रिल कराई गई परेड के उपरान्त विभिन्न शाखाओं एवं पुलिस लाइन परिसर का निरीक्षण कर संबंधित को साफ-सफाई हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

दो वाहनों को टक्कर मारते हुए बिजली खंभे से टकराई बोलेरो

मनौरी कौशाम्बी पिपरी थाना क्षेत्र के मनौरी बाजार में राम जानकी मंदिर के पास सोमवार की रात लगभग 2:30 बजे दो वाहनों को जोरदार टक्कर मारते हुए बोलेरो बिजली के खम्भे से टकरा गई है हादसे में दोनों वाहन क्षतिग्रस्त हो गए हैं बिजली के दो खंबे भी टूट गए हैं टक्कर इतनी जोरदार थी कि आसपास के घरों के लोगों की नींद खुल गई और वह सड़क पर निकल आए इस हादसे में बोलेरो चालक घायल हो गया है बताया जाता है कि आधी रात को अप्पे गाड़ी और एक कार घर के बाहर खड़ी थी बोलेरो ने जोरदार टक्कर मार दी है जिससे अप्पे कार सहित बोलेरो वाहन क्षतिग्रस्त हो गए घायल चालक को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया है मौके पर आसपास के लोगों की भीड़ लग गयी है मामले की जानकारी मिलने के बाद घटनास्थल पर पुलिस भी पहुंच गई है खबर लिखे जाने तक घायलों का नाम पता नहीं मिल सका है

लाखो खर्च के बाद आम रास्ता मे दलदल कीचड़ से लोगों का निकलना मुश्किल

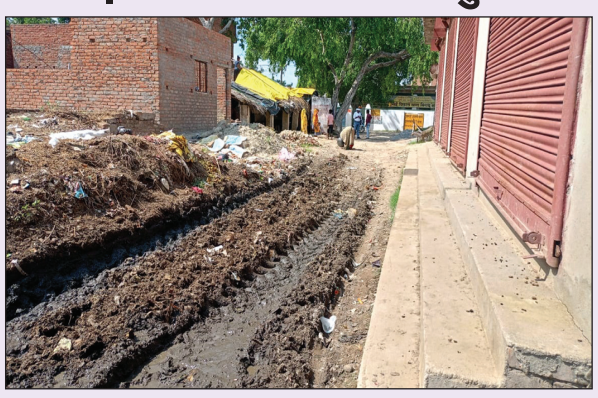

टेढ़ीमोड़ कौशाम्बी सिराथू तहसील के अंतर्गत ग्राम सभा टेगाई में विकास योजनाओं में लाखों रुपए की रकम खर्च किए जाने के बाद आम रास्ता में दलदल कीचड़ से गंदगी का अम्बार लगा रहता है गन्दगी कीचड़ के चलते लोगों को आने जाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता ग्राम प्रधान कुबेर सिंह से ग्रामीणों द्वारा कई बार शिकायत करने के बाद भी अभी तक सड़क वा नाली नहीं बनी है गांव के लोगों ने शासन प्रशासन का ध्यान आकर्षित करते हुए सड़क की व्यवस्था सुधारे जाने की मांग की है। गौरतलब है कि गांव के चन्द्र भवन के घर से राम धनी के घर तक व घसीट के घर से चौधरी के घर तक वर्ष 2010 में इंटरलॉकिंग लगाई गई थी जो नष्ट हो चुकी है सड़क और गली खराब हो जाने से दलदल कीचड़ और गंदगी भरी रहती है जिससे लोगों को आने-जाने में दिक्कतें होती हैं सरकार एक तरफ गांव में विकास का ढिंढोरा पीट रही है लेकिन इस गांव की सड़क की स्थितियां यह है कि सड़क पर दलदल के चलते कीचड़ भरा हुआ है जिससे गांव के लोग चलने पर फिसल कर गिरते हैं पूरी सड़क में दलदल कीचड़ वा गंदगी का हाल यह है कि 10 कदम चलना भी ग्रामीणों को मुश्किल है लेकिन उसके बाद भी सड़क की मरम्मत नहीं कराई गई है जिससे योगी सरकार के विकास योजनाओं की हकीकत का अंदाजा लगाया जा सकता है।

पढ़ने लिखने की उम्र में योजनाओं के प्रचार प्रसार की जिम्मेदारी कहां तक सही

जिलाधिकारी ने जल संचयन जन-जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने भूजल सप्ताह के अवसर पर जल संचयन के संबंध में आयोजित जन-जागरूकता रैली को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।यह रैली कलेक्ट्रेट परिसर से मंझनपुर चौराहा तक निकाली गई। जल संचयन योजना की रैली में स्कूल में पढ़ने लिखने वाले छात्र छात्राओं को रैली में प्रचार प्रसार का जिम्मा सौंपा गया आखिर जिनकी उम्र पढ़ने लिखने की है अपना भविष्य बनाने की है उन्हें सरकार की योजनाओं के प्रचार प्रसार की जिम्मेदारी दे दी गई है प्रचार प्रसार की जिम्मेदारी छात्र-छात्राओं को देना कहां तक सही है आखिर सरकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार के लिए कर्मचारियों की लंबी चौड़ी फौजी अधिकारियों के पास मौजूद है लेकिन कर्मचारियों की फौज से योजनाओं का प्रचार प्रसार नहीं किया जाता है प्रत्येक योजना के प्रचार प्रसार में स्कूल के छात्र-छात्राओं की पढ़ाई चौपट करके उन्हें योजनाओं के प्रचार प्रसार में शामिल कर लिया जाता है जिससे बच्चों की पढ़ाई चौपट होती है उनका भविष्य बर्बाद हो रहा है। जन-जागरूकता रैली के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने जनपदवासियों को भूजल की महत्ता को बताते हुए जल संचयन करने का आवाहन किया। भूजल सप्ताह 16 जुलाई से 22 जुलाई 2024 तक संचालित किया जाएगा छात्र-छात्राओं अपने हाथों में तख्तियां लेकर जिन पर अंकित- ₹जल है तो कल है₹, ₹भूजल बचाओ-जीवन बचाओ₹, जल ही जीवन है -पानी बिना जीवन नहीं₹ तथा ₹पानी की रक्षा-देश की सुरक्षा आदि स्लोगन के माध्यम से जनपदवासियों को जल संचयन के प्रति जागरूक किया इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी, जिला विद्यालय निरीक्षक सच्चिदानंद यादव तथा सहायक अभियंता लघु सिंचाई संजय कुमार जायसवाल सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

लेखपाल ने कहा कि रोज आते रहते है डीएम कमिश्नर के इस तरह के आदेश...

लेखपाल एवं कानूनगो जमीन पैमाइस के लिए कर रहे हैं रुपए की डिमांड

कौशांबी। भूमिधरी जमीन की पैमाइस के लिए कानूनगो सुरेन्द्र सिंह व लेखपाल सुमित पचास हजार रुपए की मांग कर रहे हैं। इस संबंध में जिलाधिकारी को पीड़िता ने शिकायती पत्र देकर अवगत कराया है। चायल तहसील क्षेत्र के चंदीपुर गांव निवासिनी कमला देवी पत्नी बाबूलाल का आरोप है कि मौजा परसरा आ०सं०-291मि० व 297मि० कुल क्षेत्रफल 0.068हे० का पंजीकृत बैनामा जिलेदार पुत्र बातूनी व खुंथी पत्नी जिलेदार निवासिनी गौशाला मजरा परसरा से क्रय करके काबिज दखील चली आ रही है। उसी जमीन की पैमाइस के लिए कमला देवी ने ग्यारह जुलाई को जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र दिया था। इसके पश्चात उपजिलाधिकारी चायल को मामले का निस्तारण कराये जाने हेतु आदेशित किया गया था। जिलाधिकारी के निर्देश के पश्चात कानूनगो सुरेन्द्र सिंह तथा क्षेत्रीय लेखपाल व पड़ोसी गांव मो०पुर असवां का लेखपाल सुमित केशरवानी मौके पर पहुंचे और कानूनगो साहब प्रार्थिनी से कहे कि तुम्हारे गांव के लेखपाल का हांथ फैक्चर है। इसलिए तुम्हारे जमीन की नाप पड़ोसी गांव के लेखपाल सुमित साहब से करायेंगे तुम पचास हजार रूपया दे दो तुम्हारी जमीन की पैमाइश करके तुम्हारा खेत अलग कर दिया जाएगा। प्रार्थिनी ने पैसा देने से इंकार किया तो कानूनगो व लेखपाल साहब कहे कि डीएम कमिश्नर के इस तरह के आदेश हमारे पास रोज आते रहते हैं हम नाप तभी करेंगे जब हमें रुपए मिलेगा।

ग्राम प्रधान और सचिव के खिलाफ मंडल आयुक्त से की गई शिकायत

कौशांबी। मंझनपुर विकासखण्ड क्षेत्र के उमरावा ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव के खिलाफ मण्डल आयुक्त से भ्रष्टाचार से संबंधित शिकायत की गई है। उमरावा गांव निवासी मोती पासी पुत्र पितम्बर ने शिकायती पत्र देकर बताया कि ग्राम प्रधान श्रीमती बन्दना देवी मिश्रा तथा ग्राम विकास अधिकारी अमित कुमार से सांठगांठ कर सन् 2021 से लेकर अब तक गांव में किसी तरह के विकास कार्य नहीं कराये गये तथा कागजों में काम दिखाकर शासकीय धन को निकालकर गबन कर लिए हैं। ग्राम पंचायत में अमृत मान सरोवर तालाब योजना के अन्तर्गत गांव के मान सरोवर तालाब में कोई भी कार्य नहीं कराया गया है। उपरोक्त मद से तालाब के कार्य का 26,00,000/- रु० निकाल लिया गया। राज्य के 14 -15वां वित्त के अन्तर्गत इण्टर लॉकिंग, नाली व नाला, खण्डन्जा व रिबोर सहित आदि फर्जी कार्य दिखाकर करोड़ों रुपए ग्राम विकास की धनराशि का ग्राम प्रधान और ग्राम विकास अधिकारी सांठ - गांठ कर गबन कर लिए है। शिकायत कर्ता सरकारी धन का गबन करने वाले ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव के कारनामें की जांच कराकर कार्यवाही की मांग की है।

मुहर्रम को लेकर संदीपन घाट थाना पुलिस ड्रोन कैमरा से कर रही निगरानी

हर्रायपुर कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निदेशानुसार संदीपन घाट थाना पुलिस मूरतगंज चौकी इंचार्ज मनोज कुमार तोमर हर्रायपुर चौकी इंचार्ज अवधराज यादव पीएसी बल के साथ मूरतगंज कस्बा नादिरगंज कशिया पूर्व शेरगढ़ चिकवन का पुरवा आदि तमाम गांव में मोहर्रम को लेकर ड्रोन कैमरा से निगरानी कर रही है ग्रामीणों को किसी तरीके की अफवाह से सावधान रहने के लिए कहा है पुलिस ने कहा कि किसी प्रकार की दिक्कत होने पर स्थानीय पुलिस को जानकारी दें।

जल कर के बड़े बकायेदारों के खिलाफ नगर प्रशासन का चला चाबुक

अझुवा कौशांबी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा प्रशासन मौजूदा समय एक्शन मोड में दिख रहा है आज मंगलवार को नगर पंचायत अझुवा ने जल कर के बड़े बकायेदारों के खिलाफ कारवाई की 4 बकायेदारों से 8150 रुपए जलकर वसूला गया,6 बकायेदारों को 2 दिन का समय दिया गया वहीं 2 बड़े बकायेदारों का जल कनेक्सन काट दिया गया है अधिशासी अधिकारी रश्मि सिंह ने बताया कि यह कार्रवाई शासन के निदेशानुसार शत प्रतिशत वसूली के लिए की जा रही है।

मोहर्रम त्यौहार के पूर्व जोनल मजिस्ट्रेट तथा सेक्टर मजिस्ट्रेट के साथ बैठक

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने उदयन सभागार में मोहर्रम त्यौहार को शांतिपूर्ण एवं सकुशल संपन्न कराए जाने के लिए नियुक्त जोनल मजिस्ट्रेट तथा सेक्टर मजिस्ट्रेट के साथ बैठक कर आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि पूरी सतर्कता से ड्यूटी करते हुए मोहर्रम त्यौहार को शांतिपूर्ण एवं सकुशल संपन्न कराया जाय बैठक में अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) प्रबुद्ध सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

बड़े धूमधाम के साथ राज्यसभा सांसद का मनाया गया जन्मदिन

कौशाम्बी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता व राज्य सभा सांसद प्रमोद तिवारी का जन्म दिवस नगर पंचायत चरवा के चरवा गांव पेट्रोल पंप पर कौशांबी कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं ग्राम वासियों के साथ जिलाध्यक्ष गौरव पाण्डेय ने केक काटकर व लड्डू वितरण कर बड़े धूमधाम से मनाया और प्रमोद तिवारी के लंबी उम्र की ईश्वर कामना किया। जन्मदिन के उपलक्ष में कांग्रेस पार्टी के प्रदेश सचिव राजेश कुमार शाहनी कांग्रेस नेता राम बहादुर त्रिपाठी निक्की पांडे अमित द्विवेदी 'आजाद उदय यादव अलकमा उस्मानी ,नूरु जमा उज्जवल यादव, मोहम्मद मसरूर उर्फ शाहरुख राम प्रकाश गुड्डू रैदास, अरविंद यादव महेंद्र मिश्रा अशोक पांडेय सभासद ,पवन यादव, सचिन पांडेय विनोद सरोज विकास राजपूत, रमेश छात्र संगठन, युवा कांग्रेस व समस्त विभाग प्रकोष्ठ, जिला कांग्रेस कमेटी कौशांबी के सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता ग्राम वासियों ने बड़े धूमधाम के साथ राज्यसभा सांसद का जन्मदिन मनाया।

गंभीर अपराध के आरोपियों की 23 दिन बाद भी गिरफ्तारी नहीं कर सकी पिपरी पुलिस

कौशांबी पिपरी थाना क्षेत्र के सैदपुर गांव निवासी राम प्रकाश के साथ 25 जून को मारपीट करने के बाद हमलावरो ने उनका नाक काट लिया था नाक की चमड़ी एक हिस्सा काट कर अलग हो गया है 20 दिन से उनका अस्पताल में लगातार इलाज चल रहा है नाक कट जाने से उनके स्वास नाली बाधित हो गई जिससे उन्हें सांस लेने में भी दिक्कतें होती थी बड़ी मुश्किल से चिकित्सकों ने उनके स्वास नाली को ठीक किया है जिससे उनकी जिंदगी बच सकी है वरना उनकी मौत हो जाती लेकिन इस गंभीर मामले में भी पिपरी थाना पुलिस गंभीर नहीं है मामले में कई बार पिपरी थाना से लेकर एसडीएम चायल तहसील दिवस में पीड़ित ने शिकायत की लेकिन जांच के नाम पर चौकी पुलिस बार-बार हमलावरों को संरक्षण देकर धन वसूली कर रही है जिससे हमलावरों को दंड नहीं मिल सका है 16 जुलाई को फिर पीड़ित राम प्रकाश पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचा और संपूर्ण प्रकरण की जानकारी देकर हमलावर पर मुकदमा दर्ज करके उसकी गिरफ्तारी की मांग की है मामले को लेकर पुलिस अधीक्षक ने थानेदार को कड़े निर्देश दिए हैं अब देखिए थानेदार हमलावर की गिरफ्तारी कर उन्हें जेल भेजते हैं या फिर मामले में लीपा पोती होती है चौकी पुलिस के कारनामे से आखिर पीड़ित को कैसे न्याय मिलेगा यह व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

दोपहिया वाहनों की टक्कर एक गंभीर घायल

कौशाम्बी। सराय अकील थाना अंतर्गत बैर गांव का रहने वाला सर्वेश किसी कार्यवश घर से निकला था कि रास्ते में एक अज्ञात दोपहिया वाहन ने उसकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी जिससे सर्वेश अपनी दोपहिया वाहन समेत सड़क पर गिर गया। इस घटना को देख आस पास के लोग मौके पर पहुचे और घायल सर्वेश को 108 एम्बुलेंस द्वारा नजदीकी सीएचसी सराय अकील में भर्ती करवाया जहाँ से प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने एम्बुलेंस द्वारा ही जिला अस्पताल मंझनपुर के लिए रेफर कर दिया घायल की हालत गंभीर बताई जाती है मामले की जानकारी मिलने के बाद परिवार के लोग भी पहुंच गए हैं।

खड़ी डीजे में तोड़फोड़ विरोध करने पर मारपीट

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के बलीपुर टाटा निवासी जितेंद्र कुमार पुत्र बुधराम बीती रात सटाई गांव के प्रताप की लड़की की शादी में डीजे बजाने के बाद अपनी डीजे को सड़क के किनारे खड़ी करके खाना खाने चले गए थे इसी बीच दूसरा डीजे संचालक अमरजीत वा राजकुमार पुत्र पप्पू निवासी सिकंदरपुर आइमा ने सड़क किनारे खड़े डीजे में तोड़फोड़ शुरू कर दी है जिससे जितेंद्र के डीजे में 20000 से अधिक का नुकसान हुआ है जब जितेंद्र ने इस बात का विरोध किया तो अमरजीत वा राजकुमार ने गाली गलौज करते हुए जितेंद्र के साथ मारपीट की है जिससे जितेंद्र को चोट लगी है मामले की सूचना थाना पुलिस को दी गई है

अबोध बालक को छीनकर पत्नी को मारपीट कर भगाया

कौशांबी चरवा थाना क्षेत्र के मिरकुण्डी गांव निवासी कविता पासी पत्नी राम लोटन के तीन माह के अबोध बच्चे को उसके पति ने छीन लिया है 15 जुलाई को कविता पासी अपने अबोध बच्चे को लेकर अपने मां के साथ मायके जा रही थी लेकिन उसके पति ने मारपीट कर अबोध बच्चे को छीन लिया है और कविता को मारपीट कर उसके पति ने घर से भगा दिया है पति के भगाए जाने से पीड़ित महिला अपने मायके पहुंची है और मंगलवार को मामले की सूचना थाना पुलिस को दिया है।

सुविधाओं के होने के बाद भी मरीज को रेफर किए जाने से हो रही लगातार मौत!

चिकित्सकों की बड़ी लापरवाही के चलते घायल मरीजों की लगातार हो रही मौत गंभीर चिंता का विषय

कौशाम्बी। संयुक्त जिला चिकित्सालय के इमरजेंसी क्षेत्र में मरीज के गंभीर मर्ज के इलाज की तमाम सुविधाएं होने के बाद मरीज का इलाज कर उनका मर्ज ठीक करने के बजाए छोटे-छोटे मर्ज के मरीजों को जिला अस्पताल के चिकित्सक प्रयागराज रिफर कर देते हैं दुर्घटना के मरीजों का खून न बंद होने से रास्ते में अधिक खून बह जाने के बाद मरीज की अधिकतर मौत हो जाती है लेकिन इस गंभीर मामले को लेकर शासन प्रशासन गंभीर नहीं है और जिला अस्पताल में लगातार लापरवाही करने वाले चिकित्सकों पर कठोर कार्रवाई नहीं हुई है जिससे जिला अस्पताल का इमरजेंसी मौत का अड्डा बन चुका है यहां मरीजों को इलाज नहीं मिलता है ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक मरीज को अस्पताल से रेफर करने तक अपनी जिम्मेदारी समझते हैं जिला अस्पताल के इमरजेंसी में ड्यूटी देने वाले चिकित्सकों का निजी नर्सिंग होम से लगाव कम नहीं हो रहा है निजी नर्सिंग होम के संचालन में जिला अस्पताल के चिकित्सक लिप्त बताए जाते हैं कुछ चिकित्सक का निजी नर्सिंग होम संचालित हो रहा है तो कुछ दूसरे के नर्सिंग होम में समय देकर मरीजों का इलाज कर रहे हैं जिससे जिला अस्पताल में मरीजों का इलाज करने में अपनी जिम्मेदारी का वह निर्वहन नहीं कर पाते हैं संयुक्त जिला चिकित्सालय मंझनपुर कौशांबी में यदि बीते 6 महीने के बीच इमरजेंसी में पहुंचे मरीजों में कितने मरीज का इलाज जिला अस्पताल में किया गया उनमें कितने मरीज का स्वास्थ्य ठीक हुआ और कितने प्रतिशत मरीजों को प्रयागराज रेफर कर दिया गया कितने मरीज कि रास्ते में मौत हो गई हो कितने मरीज इलाहाबाद पहुंच सके उनमें कितने मरीज ठीक हुए और कितने मरीज की इलाज के दौरान मौत हो गई है यदि इस मामले की सूक्ष्म जांच कराई गई तो चिकित्सकों के चौकाने वाले बड़े कारनामे उजागर होंगे मरीज के इलाज में लगातार लापरवाही करने वाले जिला अस्पताल के इमरजेंसी के चिकित्सकों के कारनामों को मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने गंभीरता से नहीं लिया है यहां तक की स्वास्थ्य मंत्री और प्रमुख सचिव स्वास्थ्य ने भी मामले को गंभीरता से नहीं लिया है जिससे कौशांबी के मरीजों को सरलता से इलाज नहीं मिल पाता है और सरलता से इलाज न मिलने के चलते लगातार मरीजों की मौत हो रही है जो गंभीर चिंतन का विषय है।

छेडखानी की पीड़िता को पीटकर मुकदमा वापस लेने का बनाया जा रहा दबाव

टेढ़ी मोड़ कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के चंदीपुर परसरा गाँव की एक बालिका से छेड़खानी के आरोपियों की गिरफ्तारी न होने से छेडखानी की पीड़िता और उसके भाई को पीट पीटकर मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाया जा रहा है। 23 अप्रैल को घर में घुसकर बालिका से छेड़खानी करने के आरोप में ज्ञानसिंह पुत्र बबलू व उसके सहयोगी के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कराया था। जिसका 164 का बयान चौकी प्रभारी भरवारी ने 15 जुलाई को कराया। लेकिन आरोपियों की गिरफ्तारी पुलिस ने नहीं की है जिससे उनके हौसले बुलंद हैं मजिस्ट्रेट को बयान देने के बाद पीड़िता के घर आने पर आरोपियों ने पुनः घर के अंदर घुसकर पीड़िता को मारा पीटा व पीड़िता के भतीजे को रात आठ बजे गांव से बारात जाते समय पकड़ कर पीट दिया। मुकदमा वापस लेने बयान बदलने का दबाव बनाया जा रहा है। आरोपियों की दबंगई से परेशान पीड़िता ने मंगलवार को कोखराज थानाध्यक्ष को शिकायती पत्र देकर कार्यवाइ की मांग की है।

मंदिर की नींव खुदाई में निकली हजारों वर्ष प्राचीन मूर्ति

कौशाम्बी पश्चिम शरीरा नगर पंचायत के प्राचीन माँ झारखंडी मंदिर की नींव खुदाई में हजारों वर्ष प्राचीन मूर्ति निकली हैं।नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा में स्थित प्राचीन झाड़खण्डी मंदिर का निर्माण कार्य शुरू है।नींव की खुदाई के दौरान हजारों वर्ष प्राचीन मूर्ति निकलने की जानकारी के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई लोगों में कौतूहल का विषय बना है।हजारों वर्ष पुरानी प्राचीन माँ झारखंडी मंदिर का निर्माण पूरब शरीरा निवासी धीरेन्द्र सिंह ने शुरू कराया। बीते दिनों भूमि पूजन होने के बाद मंदिर की नींव की खुदाई का काम शुरू किया गया था स्थानीय लोगों के अनुसार मंगलवार सुबह नींव की खुदाई के दौरान यहां भगवान लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति निकलीं है जिसे मंदिर परिसर में बने चबूतरे में रखकर लोग पूजा अर्चना कर रहे हैं। हजारों वर्ष पुरानी मूर्तियां मिलने के बाद यह पुरातत्व विभाग के सर्वेक्षण का विषय है।

संपादक की कलम से

चातुर्मास है संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर

भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा में चातुर्मास का विशेष महत्व है। विशेषकर वर्षाकालीन चातुर्मास का। हमारे यहां मुख्य रूप से तीन ऋतुएँ होती हैं- ग्रीष्म, वर्षा और शरद। वर्ष के बारह महीनों को इनमें बाँट दें, तो प्रत्येक ऋतु चार-चार महीने की हो जाती है। वर्षा ऋतु के चार महीनों के लिए ह्यचातुर्मासह्न शब्द का प्रयोग होता है। चार माह की यह अवधि साधना-काल होता है, जिसमें आत्मावलोकन एवं आत्मशुद्धि की एक ही स्थान पर रहकर साधना की जाती है। हिन्दू धर्म और विशेषतः जैन धर्म में इन चार महीने सावन, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक में उपवास, व्रत और जप-तप का विशेष महत्व होता है। हिन्दू धर्म में देवशयनी एकादशी से ही चातुर्मास की शुरूआत होती है जो कार्तिक के देव प्रबोधिनी एकादशी तक चलती है, जबकि जैन धर्म में आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक चलता है। इस समय में श्री हरि विष्णु योगनिद्रा में लीन रहते हैं इसलिए किसी भी शुभ कार्य को करने की मनाही होती है। इसी अवधि में ही आषाढ़ के महीने में भगवान विष्णु ने वामन रूप में अवतार लिया था और राजा बलि से तीन पग में सारी सृष्टी दान में ले ली थी। उन्होंने राजा बलि को उसके पाताल लोक की रक्षा करने का वचन दिया था। फलस्वरूप श्री हरि अपने समस्त स्वरूपों से राजा बलि के राज्य की पहरेदारी करते हैं। इस अवस्था में कहा जाता है कि भगवान विष्णु निद्रा में चले जाते हैं।

वास्तव में पुराने समय में वर्षाकाल पूरे समाज के लिए विश्राम काल बन जाता था किन्तु संन्यासियों, श्रावकों, भिक्षुओं आदि के संगठित संप्रदायों ने इसे साधना काल के रूप में विकसित किया। इसलिए वे निर्धारित नियमानुसार एक निश्चित तिथि को अपना वर्षावास या चातुर्मास शुरू करते थे और उसी तरह एक निश्चित तिथि को उसे समाप्त करते थे। जैन परम्परा में आषाढ़ी पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक का समय तथा वैदिक परम्परा में आषाढ़ से आसोज तक का समय चातुर्मास कहलाता है। धन-धान्य की अभिवृद्धि के कारण उपलब्धियों भरा यह समय स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार, आत्म-वैभव को पाने एवं अध्यात्म की फसल उगाने की दृष्टि से भी सर्वोत्तम माना गया है। इसका एक कारण यह है कि निरंतर पदयात्रा करने वाले जैन साधु-संत भी इस समय एक जगह स्थिर प्रवास करते हैं। उनकी प्रेरणा से धर्म जागरणा में वृद्धि होती है। जन-जन को सुखी, शांत और पवित्र जीवन की कला का प्रशिक्षण मिलता है। गृहस्थ को उनके सान्निध्य में आत्म उपासना का भी अपूर्व अवसर उपलब्ध होता है।

यों तो हर व्यक्ति को जीने के लिये तीन सौ पैंसठ दिन हर वर्ष मिलते हैं, लेकिन उनमें वर्षावास की यह अवधि हमें जागते मन से जीने को प्रेरित करती है, इसके लिये जैन धर्म में विशेष आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं उपक्रम किये जाते हैं। यह अवधि चरित्र निर्माण की चौकसी का आव्हान करती है ताकि कहीं कोई कदम गलत न उठ जाये। यह अवधि एक ऐसा मौसम और माहौल देती है जिसमें हम अपने मन को इतना मांज लेने को अग्रसर होते हैं कि समय का हर पल जागृति के साथ जीया जा सके। संतों के लिये यह अवधि ज्ञान-योग, ध्यान-योग और स्वाध्याय-योग के साथ आत्मा में अवस्थित होने का दुर्लभ अवसर है। वे इसका पूरा-पूरा लाभ लेने के लिये तत्पर होते हैं। वे चातुर्मास प्रवास में अध्यात्म की ऊंचाइयों का स्पर्श करते हैं, वे आधि, व्याधि, उपाधि की चिकित्सा कर समाधि तक पहुंचने की साधना करते हैं। वे आत्म-कल्याण ही नहीं पर-कल्याण के लिये भी उत्सुक होते हैं। यही कारण है कि श्रावक समाज भी उनसे नई जीवन दृष्टि प्राप्त करता है। स्वस्थ जीवनशैली का निर्धारण करता है। हम सही अर्थों में जीना सीखें। औरों को समझना और सहना सीखें । जीवन मूल्यों की सुरक्षा के साथ सबका सम्मान करना भी जानें। इसी दृष्टि से वर्षाकाल है प्रशिक्षण का अनूठा अवसर। यह अवसर जहां प्रकृति के अणु-अणु में प्राणवत्ता का संचार करता है, भूगर्भगत उर्वरता की अनंत संभावनाओं को उभार देता है, वहां वह व्यक्ति और समाज की आध्यात्मिक चेतना को जगाने एवं संस्कार बीजों को बोने और उगाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह इंसान को इंसान बनाने एवं स्वस्थ जीवन-शैली की स्थापना का उपक्रम है। जिसमें संतों के साथ-साथ श्रावक भी अपने जीवन को उन्नत बनाने को प्रेरित होता है। संतों के अध्यात्म एवं शुद्धता से अनुप्राणित आभामंडल समूचे वातावरण को शांति, ज्योति और आनंद के परमाणुओं से भर देता है। इससे जीवन-रूपी सारे रास्ते उजालों से भर जाते हैं। लोक चेतना शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनावों से मुक्त हो जाती है। उसे द्वंद्व एवं दुविधाओं से त्राण मिलता है। भावनात्मक स्वास्थ्य उपलब्ध होता है।

संत धरती के कल्पवृक्ष होते हैं। संस्कृति के प्रतीक, परम्परा के संवाहक, जीवन कला के मर्मज्ञ और ज्ञान के रत्नदीप होते हैं। उनके सामीप्य में संस्कृति, परम्परा, इतिहास, धर्म और दर्शन का व्यवस्थित प्रशिक्षण लिया जा सकता है। उनका उपदेश किसी की ज्ञान चेतना को जगाता है तो किसी की विवेक चेतना को विकसित करता है। किसी को आत्महित में प्रवृत्त करता है तो किसी को चित्तगत संक्लेशों से निवृत्त करता है। ठीक इसी तरह श्रावक भी संवेदनाओं एवं करुणाशीलता के फैलाव के लिये जागरूक बनते हैं। यह इस अवधि और इसकी साधना का ही प्रभाव है कि श्रावक की संवेदनशीलता इतनी गहरी और पवित्र हो जाती है कि वह अपने सुख की खोज में किसी को सुख से वंचित नहीं करता। किसी के प्रति अन्याय, अनीति और अत्याचार नहीं होने देता। यहां तक की वह हरे-भरे वृक्षों को भी नहीं काटता और पर्यावरण को दूषित करने से भी वह बचता है।

चातुर्मास का महत्व शांति और सौहार्द की स्थापना के साथ-साथ भौतिक उपलब्धियों के लिये भी महत्वपूर्ण माना गया है। इतिहास में ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जहां चातुर्मास या वर्षावास और उनमें संतों की गहन साधना से अनेक चमत्कार घटित हुए है। यह अवधि जिसमें कुछ व्यक्ति सामूहिक रूप से ध्यान, साधना, तपोयोग या मंत्र अनुष्ठान करना चाहें, उनके लिये उपहार की भांति है। जिस क्षेत्र की स्थिति विषम हो। जनता विग्रह, अशांति, अराजकता या अत्याचारी शासक की क्रूरता की शिकार हो, उस समस्या के समाधान हेतु शांति और समता के प्रतीक साधु-साध्वियों का चातुर्मास वहां करवाया जाकर परिवर्तन को घटित होते हुए देखा गया है। क्योंकि संत वस्तुतः वही होता है जो औरों को शांति प्रदान करे।

2023 में दुनिया में 14.5 मिलियन बच्चों को नहीं मिली डीटीपी की खुराक : संयुक्त राष्ट्र

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र संगठन की सोमवार को जारी एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई कि वैश्विक बाल टीकाकरण का स्तर 2023 में गिरा है। 14.5 मिलियन बच्चों को डिप्थीरिया, टेटनस और पर्टुसिस (डीटीपी) का टीका नहीं मिल सका। डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ की रिपोर्ट में 14 बीमारियों के खिलाफ टीकाकरण के लिए राष्ट्रीय टीकाकरण कवरेज (डब्ल्यूयूईएनआईसी) का अनुमान दिया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2023 में 84 प्रतिशत (108 मिलियन) बच्चों को डीटीपी के विरुद्ध टीके की तीन खुराकें मिलीं। लेकिन 14.5 मिलियन बच्चों को टीके की एक भी खुराक नहीं मिली। 2022 में 13.9 मिलियन इस टीके से वंचित थे। इसके अलावा, 6.5 मिलियन बच्चों ने डीटीपी टीके की अपनी तीसरी खुराक पूरी नहीं की, जो कि शिशु अवस्था और प्रारंभिक बचपन में बीमारी से सुरक्षा प्राप्त करने में अहम भूमिका निभाती है। यूनिसेफ की कार्यकारी निदेशक कैथरीन रसेल ने रिपोर्ट में कहा, "नवीनतम रुझानों में यह बात सामने आई है कि कई देशों के बच्चे इस तरह के टीकाकरण के वंचित रहे हैं। इसके अलावा रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि खसरे की बीमारी के खिलाफ भी टीकाकरण की दर में गिरावट आई है। लगभग 35 मिलियन बच्चों को यह टीका नहीं मिला। 2023 में दुनिया भर में केवल 83 प्रतिशत बच्चों को नियमित स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से खसरे के टीके की पहली खुराक मिली। हालांकि, 2022 से दूसरी खुराक पाने वाले बच्चों की संख्या में मामूली वृद्धि हुई। यह 74 प्रतिशत बच्चों तक पहुंच गई। रिपोर्ट में पिछले पांच सालों में लगभग 103 देशों में खसरे के प्रकोप के लिए खसरे के खिलाफ टीकाकरण की कम दर को भी दोषी ठहराया गया है। दूसरी ओर, खसरे के टीकाकरण की मजबूत कवरेज वाले 91 देशों में इसका प्रकोप नहीं देखा गया। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस ने कहा, "खसरे का प्रकोप कोयला खदान में कैनरी की तरह है, जो टीकाकरण में कमियों को उजागर करता है और सबसे कमजोर लोगों को सबसे पहले प्रभावित करता है।" उन्होंने कहा कि इस समस्या को हल किया जा सकता है।

रिपोर्ट में गावी वैक्सीन अलायंस द्वारा समर्थित 57 देशों में मानव पेपिलोमावायरस (एचपीवी), मेनिन्जाइटिस, न्यूमोकोकल पोलियो और रोटावायरस रोग के लिए बेहतर टीकाकरण कवरेज पर भी प्रकाश डाला गया है। इसमें बताया गया है कि वैश्विक स्तर पर सर्वाइकल कैंसर से सुरक्षा प्रदान करने वाली कम से कम एक खुराक पाने वाली किशोरियों की संख्या 2022 में 20 प्रतिशत से बढ़कर 2023 में 27 प्रतिशत हो गई है।

मोहर्रम को मोहर्रम रहने दीजिये भाईजान

@ राकेश अचल

हिन्दुस्तान में धर्म को धर्म बनाये रखने के लिए शायद कोई तैयार नहीं है। न हिन्दू और न मुसलमान। मोहर्रम के जुलूसों में फिलिस्तीनी राष्ट्रध्वजों को लहराते देख मुझे फिक्र होती है। मै देश के उन लोगों में से हूँ जो हर धर्म का तहेदिल से सम्मान करते हैं लेकिन धर्म को राजनीति से जोड़ने के खिलाफ है, यानि उसकी मुखालफत करते हैं। मोहर्रम का महीना जिस उद्देश्य के लिए निर्धारित है उसमें शायद ये कहीं नहीं लिखा है कि कोई भी धर्मभीरु जमात उसका सियासत के लिए इस्तेमाल करे।

मोहर्रम के जुलूसों में श्रीनगर से लेकर बिहार और उत्तर प्रदेश तक में फिलिस्तीन के झंडे लहराए गए। ये अनुचित है। फिलिस्तीनियों के प्रति हमारी,आपकी सहानुभूति हो सकती है। होना भी चाहिए, लेकिन फिलिस्तीन के समर्थन के लिए अलग से मंचों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। किसी धार्मिक जुलूस का नहीं। फिलिस्तीनियों के संघर्ष का समर्थन उनके मजहब के आधार पर नहीं बल्कि मानवाधिकारों के हनन के आधार पर किया जा सकता है। फिलिस्तीन के मुद्दे पर हमारे देश की विदेश नीति स्पष्ट है। अतीत में और वर्तमान में भी फिलिस्तीन के साथ हमारे सौहार्दपूर्ण रिश्ते रहे है। मौजूदा सरकार हो या पुरानी कांग्रेस की सरकारें , किसी ने फिलिस्तीन पर किसी भी देश के हमले का समर्थन नहीं किया और शायद भविष्य में भी न करे। मोहर्रम कि जुलूसों में भारत का राष्ट्रध्वज तिरंगा भी लहराया गया ,लेकिन इसकी भी शायद कोई जरूरत नहीं थी । धार्मिक जुलूस धार्मिक है। उसे धार्मिक प्रतीकों कि साथ ही सजाया जाना चाहिए।

मोहर्रम के जुलूस में कुछ और नारे लगाए गए जैसे कि -हिंदुस्तान में रहना है तो या हुसैन कहना है ' ये नारा भी गैरजरूरी और भाईचारे के खिलाफ है । हिंदुस्तान में रहने कि लिए न जय श्री राम कहना जरूरी है और न या हुसैन कहन। यहां जरूरी है ' जय हिन्द ' कहना। हिन्दुस्तान गंगा-जमुनी संस्कृति का पैरोकार रहा है। हिन्दुस्तान में रहने वाला कोई भी मुसलमान किसी इस्लामिंक देश का मुसलमान नहीं है। वो ऐसे विभाजनकारी नारों के बारे में सोच भी नहीं सकटा । ऐसे नारे शायद उन कूढ़मगजों की उपज हैं जो भाई से भाई को लड़ाने या हिन्दू मुसलमान के बीच खोदी गयी सियासी और मजहबी खाई को और गहरा करना चाहते हैं। ऐसे लोग दोनों तरफ हैं और ऐसे लोगों का दोनों तरफ से विरोध किया जाना चाहिये। समाज में नफरत फैलाने वाले लोग किसी भी तरफ के हों, मुल्क और कौम के

दुश्मन होते हैं। उनसे सावधान रहने की जरूरत है।

आम तौर पर माना जाता है कि मुहर्रम इस्लामी वर्ष यानी हिजरी वर्ष का पहला महीना है। हिजरी वर्ष का आरंभ इसी महीने से होता है। इस माह को इस्लाम के चार पवित्र महीनों में शुमार किया जाता है। अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद (सल्ल.) ने इस मास को अल्लाह का महीना कहा है। साथ ही इस महीने में रोजा रखने की खास अहमियत बयान की है। मुख्तलिफ हदीसों, यानी हजरत मुहम्मद के कौल व अमल से मुहर्रम की पवित्रता व इसकी अहमियत का पता चलता है। ऐसे ही हजरत मुहम्मद ने एक बार मुहर्रम का जिक्र करते हुए इसे अल्लाह का महीना कहा। इसे जिन चार पवित्र महीनों में रखा गया है। मेरी मान्यता है की हम इस पविर्त महीने की पवित्रता को कायम रखना चाहते हैं तो हमें मोहर्रम को सियासत से अलग रखना चाहि। इसका इस्तेमाल कटटरता कि लिए कदापि नहीं करना चाहिए। ये बात सभी पर आयद है। दुर्भाग्यपूर्ण बात ये है की जिस तरह की गलती मजहब में घुसे कुछ सिरफिरे लोग करते हैं वैसी ही गलती हमारी सरकारें भी करतीं है। उत्तर प्रदेश सरकार ने मोहर्रम कि जुलूसों में सियासत होती देख उन्हें प्रतिबंधित करने कि संकेत दिए हैं। ये मर्ज का सही इलाज नहीं है। इस समस्या को हिकमत-अमली से निबटा जाना चाहिए। इस तरह कि प्रतिबंध या तो समान रूप से सभी मजहबी जुलूसों कि लिए लगाए जाएँ या फिर सभीको इस तरह कि प्रतिबंधों से आजाद रखा जाये। आज मोहर्रम में सियासत हो रही है ,कल कांवर यात्रा में सियासत होगी। यानि ये सिलसिला फिर कभी रुकेगा ही नहीं।

मुझे याद है कि ग्वालियर में एक पुलिस अधीक्षक थे आशिफ इब्राहिम। उन्होंने अपने कार्यकाल में मोहर्रम कि जुलूसों में सभी तरह कि हथियारों का प्रदर्शन सख्ती से रोका था। वे तो पक्के मुलमान थे लेकिन उन्होंने सविधान और कानून और व्यवस्था का सम्मान किया। उन्होंने अपने मजहब का भी सम्मान किया और किसी भी कठमुल्लेपन कि आगे स्मारपन नहीं किया था। आशिफ बाद में देश की शीर्ष संस्था ' रा ' कि प्रमुख भी रहे। आशिफ साहब को किसी राज्य सरकार ने ऐसा करने कि लिए नहीं कहा था। उन्होंने उक्त कार्रवाई अपने हिसाब से की थी और मजे की बात की उनकी इस कार्रवाई का उनके अपने समाज ने सम्मान भी किया। जुलूस में हथियार लेकर निकले लोगों ने अपने तमाम हथियार पुलिस चौकी में जमा करा दिए थे। हाल ही में मैंने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर एक रील देखी जिसमें एक बच्चा एक भगवा ध्वज लिए एक हवाई जहाज में जय श्रीराम के नारे लगाते हुए प्रवेश कर रहा है। आखिर इस तरह की रील बनाने का क्या मकसद हो सकता है। क्या इस तरह की गतिविधियां पाबंदी के लायक नहीं है क्या हवाई जहाजों में ऐसे नाटक करने और उनकी रील बनाकर उन्हें ' वायरल ' करने की ॣot सभी को है शायद नहीं। सरकार में बैठे लोगों को इस तरह की घटनाओं कि प्रति संवेदनशील होकर कार्रवाई करना चाहिए। मोहर्रम कि जुलूसों की पाकीजगी बनाये रखने की जिम्मेदारी मुस्लिम समाज के ही लोगों की है। मुझे उम्मीद है कि हमारे देश कि मुस्लिम समाज में आज भी बड़ी संख्या में समझदार लोग हैं जो मुल्क का और मुल्क कि संविधान का सम्मान करना जानते है। वे जानते हैं कि यदि मुल्क का सम्मान नहीं किया जाएगा तो उनका अपना और मजहब का सम्मान भी कौन करेगा

मैंने कल हिन्दू धर्म कि शीर्ष धमार्चार यानि शंकराचार्यों कि आचरण कि बारे में लिखा था ,तभी मुझे बहुत से लोगों ने उलाहना दिया था कि मै जरा दूसरे धर्मों कि धमार्चार्यों कि बारे में भी लिखूं । मैंने अपने मित्रों को समझाया कि मै उन लोगों में से नहीं हूँ जो सच को सच कहने से बचते हैं या डरते हैं। मै हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो या सिख हो यदि धर्म विरुद्ध और देश विरुद्ध आचरण करेगा तो उसको रेखांकित करूंगा। आज भी मोहर्रम कि जुलूसों में सियासत की मुखालफत कर मै अपना लेखकीय धर्म निभा रहूँ। मुझे इसके लिए किसी सैंगोल की या किसी की टोकाटाकी की जरूरत नहीं है।

हवा को शुद्ध करने के लिए करना होगा देश व्यापी प्रयास

हेमलता म्हस्के
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

हवा हमारे तन में जान डालती है और अब हवा ही जान लेने लगी है, क्योंकि वह शुद्ध नहीं रह गई है दिनोदिन प्रदूषित होने लगी है और इसके कारण लोगों की जान भी जा रही है । अपने देश में अब शुद्ध हवा के लिए अपनी कोशिश तेज करनी होगी क्योंकि देश में वायु प्रदूषण एक बड़ी समस्या बनती जा रही है,। एक ताजा अध्ययन से जो पता चला है, वह बेहद चिंता का विषय है। अगर हम जल्दी नहीं चेते तो वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों की संख्या में बढ़ोतरी होती जायेगी। रुकेगी नहीं। वायु प्रदूषण से न सिर्फ मनुष्य जगत बल्कि पशु पक्षियों और कीट पतंगों की दुनिया भी तबाह होने लगी है। हाल में एक अध्ययन में दावा किया गया है कि देश के 10 शहरों में हर साल 34 हजार लोगों की मौत वायु प्रदूषण के चलते हो रही है। यह अध्ययन द लैंसेट प्लैनेटरी हेल्थ में छपा है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में साफ हवा के मानक, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साफ हवा के मानकों से पहले ही ज्यादा हैं, लेकिन कई शहरों में तय मानकों से भी कई गुना ज्यादा प्रदूषण एक बड़ी समस्या बना हुआ है। इसके चलते लोग कई बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। खासकर महिलाएं बड़ी संख्या में अनीमिया की रोगी बनती जा रही हैं।

भारत में सबसे गंभीर पर्यावरणीय मुद्दों में से एक वायु प्रदूषण है। 20 21 की विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट के अनुसार 100 सबसे प्रदूषित शहरों में से 63 केवल भारत में है। नई दिल्ली को दुनिया में सबसे खराब वायु गुणवत्ता वाली राजधानी का नाम दिया गया है। एक अध्ययन में यह भी पाया गया कि देश के 48% शहरों में पीएम 2.5 गुणवत्ता दिशा निर्देश स्तर से 10 गुना अधिक है। वाहनों से निकलने वाला उत्सर्जन, औद्योगिक कचरा, खाना पकाने से निकलने वाला धुआं, निर्माण क्षेत्र, फसल जलाना और बिजली उत्पादन भारत में वायु प्रदूषण के सबसे बड़े स्त्रोत हैं। बड़े पैमाने पर विद्युतीकरण के कारण देश की कोयला, तेल और गैस पर निर्भरता इसे दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा प्रदूषक देश बनाती है, जो हर साल वायुमंडल में 2.65 बिलियन मिट्रिक टन से अधिक कार्बन का योगदान करती है। नवंबर 2021 में वायु प्रदूषण इतना गंभीर हो गया कि दिल्ली के आसपास के कई बड़े बिजली कारखाने बंद करने पड़े।

अभी हाल के एक रिपोर्ट के अनुसार, देश के 10 शहरों- अहमदाबाद, बंगलूरू, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई, पुणे, शिमला और वाराणसी में साल 2008 से 2019 के बीच किए गए अध्ययन के मुताबिक देश के 10 शहरों - अहमदाबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई, पुणे, शिमला और वाराणसी में, प्रति वर्ष लगभग 34000 मौतें वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर के कारण होती हैं, जो डब्ल्यूएचओ के दिशा-निर्देशों से अधिक है। सबसे प्रदूषित शहरों में औसतन हर दिन होने वाली म्यूट में से 7.2 फीसदी का संबंध हवा में मौजूद धूलकण पीएम 2.5 से है। राजधानी दिल्ली, मुंबई, बंगलूरू, कोलकाता और चेन्नई में बड़ी संख्या में मौतें हुई हैं, लेकिन राजधानी दिल्ली में हालात सबसे ज्यादा खराब हैं। रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली में वायु प्रदूषण से जनित बीमारियों से हर साल 11964 लोगों की मौत हुई है, जो देश में हुई कुल मौतों का 11.5 प्रतिशत है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में अपने स्वच्छ वायु मानदंडों को विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा निर्देशों के अनुरूप लाने के लिए काफी काम करने की जरूरत है और वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के प्रयास दोगुने रफ्तार से करने की जरूरत है। दिल्ली के बाद सबसे ज्यादा मौतें वाराणसी में हुई हैं, जहां हर साल 831 लोगों की जान गई है, जो कुल मौतों की संख्या का 10.2 प्रतिशत है। वहीं बंगलूरू में 2,102 चेन्नई में 2870 कोलकाता में 4678 और मुंबई में करीब 5091 लोगों की मौत हर साल वायु प्रदूषण के चलते हुई है। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में सबसे कम वायु प्रदूषण पाया गया है। हालांकि अभी भी पहाड़ी शहर में वायु प्रदूषण का स्तर एक जोखिम बना हुआ है। शिमला में हर साल 59 मौतें हुई हैं, जो कुल मौतों का 3.7 प्रतिशत है। यह रिपोर्ट सस्टेनेबल फ्यूचर्स कोलैबोरेटिव, अशोका यूनिवर्सिटी, सेंटर फॉर क्रोनिक डिजीज कंट्रोल, स्वीडन के कारोलिंस्का इंस्टीट्यूट, हार्वर्ड और बोस्टन यूनिवर्सिटी के शोधकताओं ने तैयार की है। वायु प्रदूषण मानव जगत के साथ पशु पक्षी और कीट पतंगों की दुनिया को भी प्रभावित कर रहा है। जहरीली गैसों का पूरा असर पूरी जैव विविधता को खत्म करने पर तुला है। इस कड़ी में वे सूक्ष्म किट भी शामिल हैं जो हमें अक्सर हवा में उड़ते हुए दिखते हैं। यह सूक्ष्म कीट कचरे का विघटन, मानव जीवन और फसलों के चक्रीकरण के लिए बेहद जरूरी हैं। इनकी अहमियत मानव जीवन में प्रत्यक्ष तो नहीं दिखती लेकिन ये कीट अप्रत्यक्ष रूप से इंसान को हर स्तर पर मदद करते हैं। वायुमंडल में बढ़ते प्रदूषण की मोटी परत ने इन कीटों की जिंदगी तबाह कर दी है। कीटों के भोजन तलाशने से लेकर साथी से मिलन, संतति निर्माण और उनके विकास की प्रक्रिया नष्ट हो चुकी है।

धार्मिक कार्यक्रम में होने वाले हादसे रोकने होंगे

अशोक मधुप
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

अभी हाथरस के धार्मिक आयोजन में मरने वालों के खून के छींटे साफ भी नही हुए थे कि जगन्नाथ पुरी में निकलने वाली भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा में एक श्रद्धालू की मौत हुई। चार सौ घायल हुए। मुख्यमंत्री ने मरने वाले के परिवार को चार लाख रुपए की सहायता देने की घोषणा की। तो घायलों को मुफ्त इलाज के निर्देश दिए। घटना की जांच के आदेश भी दिये गए हैं। देश में हम धार्मिक आयोजनों को रोक नही सकते। ये हमारी आस्थाओं से जुड़े हैं। धार्मिक आयोजन रोज होतें हैं। गली- गली होते हैं। मुहल्ले-मुहल्ले होते हैं। देश काफी बड़ा है। कहीं न कही से बड़े आयोजन की खबरें आती रहती है। इन आयोजनों पर नजर रखनी होंगी, ऐसी व्यवस्था बनानी होंगी कि इनमें भगदड़ न मचें। अव्यवस्था न फैले। भगदड़ और अव्यवस्था फैलने की हालत में ऐसी व्यवस्था बनी हो कि दर्शक आराम में आयोजन स्थल से सुरक्षित निकल सके। हम धार्मिक कार्यक्रम के आयोजन नही रोक सकते किंतु उन्हें हादसों रहित जरूर बना सकते हैं। इसी दिशा में कार्य होना चाहिए।

धार्मिक कार्यक्रमों में हादसे

- दो जुलाई को हाथरस में प्रवचन के दौरान भगदड़ में 121 मरे।गवाह का दावा कि गुरू जी के सेवक ने कहा चरण रज लेकर जाना, तब भगदड़ मची।
- इंदौर में राम नवमी के अवसर पर एक मंदिर में हो रहे हवन में पुरानी बावडी कास्लेब टूटने से 36 मरे।
- 2022 में माता वैष्णो देवी मंदिर में हुई भगदड़ में 22 श्रद्धालू मरे।
- 2015 में आंध्रप्रदेश के गोदावरी नदी के घाट पर भागदड़ में 27 मरे।
- 15 अक्टूबर 2016 को वाराणसी में भीड़भाड़ वाले राजघाट गंगा पुल पर मची भगदड़ में 25 लोगों की मौत हो गई।
- तीन अक्तूबर 2014 को पटना के गांधी मैदान में दशहरा समारोह के समाप्त होने के बाद भगड़ में 32 जानें गई थीं।
- चार मार्च 2010 को यूपी के प्रतापगढ़ जिले में स्थित मनगढ़ में कृपालु महाराज के राम जानकी मंदिर में मची भगदड़ में 63 लोगों की जान चली गई थी।
- 10 फरवरी, 2013 को प्रयागराज में रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मच गई थी, जिसमें 40 से ज्यादा लोग मारे गए।
- पटना में गंगा के तट पर 19 नवंबर 2012 को छठ पूजा के दौरान अचानक अस्थायी पुल ढहने से भगदड़ मच गई थी। इसमें 20 लोगों की मौत हो गई थी। इससे पहले आठ नवंबर 2011 को हरिद्वार में गंगा किनारे हरकी पैड़ी पर मची भगदड़ में कम से कम 20 लोगों की जान चली गई थी।
- 2008 में राजस्थान के जयपुर के चामुंडा मंदिर में बम की अफवाह के बाद मची भगदड़ में 250 लोग मरे।
- 2003 में महाराष्ट्र के नासिक के कुंभमेले में मची भगदड़ में 39 मरे।
- महाराष्ट्र के सतारा में साल 2005 की 25 जनवरी को मंधारदेवी मंदिर में सालाना तीर्थयात्रा के दौरान मची भगदड़ में 340 से अधिक श्रद्धालुओं की कुचलने से मौत हो गई थी।

यूपी के हाथरस स्थित सिकंदराराऊ थाना क्षेत्र के फुलरई में आयोजित भोले बाबा के सत्संग में मची भगदड़ से 121 लोगों की मौत के बाद कई तरह के सवाल खड़े हो रहे हैं। मृतकों में ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं। ऐसा नहीं है, पहले भी भीड़भाड़ वाले स्थलों खासकर धार्मिक आयोजनों या धार्मिक स्थलों पर ऐसे हादसे होते रहे हैं। जिसके बाद जांच और कार्रवाई तो होती है पर कोई जिम्मेदार सबक लेते नहीं दिखाई देते।

सनातन धर्म में 33 करोड देवी देवता हैं। हिंदू समाज की मान्यता है कि कण - कण में भगवान हैं। हम इतने आस्थावान है कण- कण में भगवान खोजते हैं। स्टोव तक हमारे देवता बन गए।दरअस्ल हमार यहां हर गली मुहल्ले में ओझा हैं। भगत है। साधु हैं। सन्त हैं। ज्ञानी हैं। ओलिया हैं। फकीर है। जिसका जितना बड़ा मायाजाल और प्रचार तंत्र है, उसके उतने ज्यादा भक्त और शिष्य हैं। बड़ी बात यह है कि हिंदू समाज में पुरूषों से ज्यादा महिलाएं आस्थावान है। वे ही इन हादसों की शिकार होती है।हाथरस के धार्मिक कार्यक्रम में मची भगदड़ में मरने वालो में महिलाओं की ही संख्या ज्यादा है। इस कार्यक्रम के भक्त गुरू जी के प्रति इतने आस्थावान दिखाई दिए कि उन्हें हादसे का कोई मलाल नही। कुछ महिलाएं तो मीडिया से बात करते कहती नजर आंई कि वे भी मर जाती तो अच्छा होता। सीधे स्वर्ग मिलता। जहां भक्तों की इतनी श्रद्धा हो, वहां सरकार की सख्ती से ही इन हादसों को रोका जा सकता है।

आमतौर पर धार्मिक आयोजनों या धर्मस्थलों पर भारी भीड़ उमड़ती है। गहरी आस्था के चलते लोग अपने आराध्य के दर्शन करने या उनके बारे में सत्संग-प्रवचन सुनने के लिए बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। एक जनवरी 2022 को माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालु उमड़ पड़े थे, जिससे भगदड़ मच गई थी। इस हादसे में 12 लोगों की जान चली गई थी, जबकि एक दर्जन घायल हुए। अपनी-अपनी आस्था के कारण धार्मिक स्थलों या आयोजन में शामिल होना चाहते हैं । इसके लिए वे किसी बात की परवाह नहीं करते। जरा सी भी ऊंच-नीच अफवाह भगदड़ का कारण बन जाती है। भारी भीड़ के बीच छोटी सी अफवाह भी बड़ा रूप ले लेती है। साल 2011 की 14 जनवरी को केरल के इडुक्की जिले में एक जीप सबरीमाला मंदिर में दर्शन कर रहे श्रद्धालुओं से टकरा गई थी। इसके बाद अफवाह फैली अफवाह से ऐसी भगदड़ मच गई कि इसमें 104 श्रद्धालुओं की जान चली गई थी। इसी तरह से बताया जा रहा है कि हाथरस में सत्संग स्थल पर सवा लाख लोग मौजूद थे। इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने का अंदाजा न तो आयोजकों को था और न ही जिला प्रशासन को। इसलिए इस संख्या के हिसाब से मौके पर व्यवस्था ही नहीं की गई थी, जबकि सत्संग स्थल के अंदर की व्यवस्था आयोजकों को संभालनी थी और बाहर कानून-व्यवस्था पर प्रशासन और पुलिस को नजर रखनी थी। इस आयोजन के लिए जिला प्रशासन से बाकायदा अनुमति ली गई थी, इसके बावजूद सत्संग स्थल पर न तो श्रद्धालुओं के प्रवेश और निकासी के लिए अलग-अलग द्वार थे और न ही वीआईपी यानी भोले बाबा को भीड़ से सुरक्षित अलग रास्ते से निकालने के इंतजाम किए गए थे। ऐसे में बाबा जब सामने दिखे तो भीड़ उनके पैरे छूने के लिए आगे बढ़ने लगी और बेकाबू हो गई। चश्मदीदों के हवाले से यह भी बताया जा रहा है कि सत्संग स्थल पर जमीन ऊबड़-खाबड़ थी। इसे समतल करने तक की जहमत नहीं उठाई गई थी। ऐसे में जब भीड़ निकलने लगी तो पैर ऊपर-नीचे होने से लोग गिरने लगे। इससे भगदड़ की स्थिति और भी गंभीर हो गई।देश के कई धार्मिक स्थलों के परिसर तो काफी बड़े हैं पर मुख्य दर्शन या पूजा स्थल काफी छोटे हैं। इसमें एक साथ भीड़ का रेला आता है तो धक्के के कारण लोग एक-दूसरे के ऊपर चढ़ने लगते हैं। इस दौरान लोग खुद के शरीर को ही नियंत्रित नहीं कर पाते हैं। अगर एक व्यक्ति भी भीड़ में गिर जाता है तो लोग चाहते हुए भी खुद को रोक नहीं पाते हैं और उस पर चढ़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि भीड़ में किसी के गिरने, बेहोश होने या मौत की अफवाह फैलती है और बचने के लिए लोग भागने लगते हैं। भीड़ में शामिल लोग, खासकर बुजुर्ग, बच्चे और महिलाएं इस भगदड़ का सबसे ज्यादा शिकार होते हैं। इसके लिए स्थानीय प्रशासन भी कहीं न कहीं जिम्मेदार होता है, जो आस्था के आगे हाथ खड़े कर देता है। छोटे स्थल पर अधिक लोगों की भीड़ बढ़ने पर भी वह लोगों को रोकता नहीं है। हाथरस के मामले में भी ऐसा ही देखने को मिला । कहा जा रहा है कि हाथरस में अनुमति और आकलन से कहीं ज्यादा भीड़ पहुंच गई थी। इसके बावजूद प्रशासन तमाशबीन बना रहा और न तो आयोजन निरस्त किया और न ही लोगों को रोकने की कोशिश की।

(प्रमोद त्रिपाठी)

अंशू के अंतिम संस्कार में छावनी में तब्दील रहा कस्बा

जगह-जगह-गली-मोहल्ले में तैनात रही पुलिस

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। कस्बे के आर्यनगर मोहल्ले के अंशू (28) पुत्र स्व नत्थू की संदिग्ध मौत पर सोमवार देर रात तक पुलिस की भारी सुरक्षा के बीच मर्चरी से शव के पोस्टमार्टम बाद पैतृक घर आने पर सवेरे दस बजे तक मानिकपुर कस्बा पुलिस छावनी में तब्दील रहा। पुलिस को आशंका रही कि फिर कहीं आन्दोलन तेज न हो जाये।

ज्ञात है कि रविवार की शाम पांच बजे मोहर्रम जुलूस दौरान अंशू को पुलिस ने मानिकपुर थाने में बैठाया था। इसकी सूचना देर रात परिजनों को हुई तो पुलिस से छोड़ने बाबत अनुरोध किया। पुलिस ने सवेरे छोड़ने का भरोसा देकर परिजनों को शांत कर दिया। परिजन भी सवेरे होने का इंतजार कर रहे थे। सोमवार को सवेरे सोशल मीडिया ग्रुपो में रेलवे ट्रैक पर एक लावारिश शव की पहचान करने को पुलिस ने खबर डाली। परिजनों को जानकारी हुई तो होश उड़ गये। परिजनों में रोष उभर आया। गुस्साये परिजनों व मोहल्लेवासियों ने पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करते हुए विरोध-प्रदर्शन करने लगे। मामले की भनक उच्चाधिकारियों को हुई तो आनन-फानन में प्रदर्शन कर रहे पीड़ितों से मिलने को डीएम-एसपी खुद पहुंचे। गुस्साये प्रदर्शनकारियों को समझा-बुझाकर उनकी मांग अनुसार रिपोर्ट दर्ज कर ली।

मंगलवार को सवेरे मानिकपुर नगर के हर चैराहा, तिराहा, गली, मोहल्ला को पुलिस ने छावनी में तब्दील कर दिया। एसडीएम पंकज कुमार वर्मा व सीओ जयकरण सिंह की अगुवाई में पुलिस बल मृतक के घर से शवदाह स्थल तक मौजूद रहा। परिजनों ने शांतिपूर्ण माहौल में रीत-रिवाज अनुसार साढे दस बजे शव का अंतिम संस्कार किया। तब जाकर प्रशासन ने राहत की सांस ली।

दोषियों को भेजें जेलः पंकज मिश्र

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। कांग्रेस के एआईसीसी सदस्य/पूर्व जिलाध्यक्ष पंकज मिश्र ने मानिकपुर के युवक अंशू की पुलिस हिरासत में मौत को सरकार व व्यवस्था को निशाने पर लिया है। उन्होंने तीखा आक्रोश जताते हुए कहा कि पुलिस की ये कार्यवाही नाकाफी है। दोषियों को जल्द गिरफ्तार कर जेल भेजा जाये। उन्होंने बाबा राज में इसे पुलिस की घोर निरंकुशता करार दिया है। पूरे मामले की न्यायिक जांच की मांग उठाते हुए कहा कि पुलिस-प्रशासन मामले में लीपापोती का प्रयास करेंगे। पीडित परिवार को 25 लाख की सरकार मदद दे। ऐसा न करने पर 18 जुलाई को कांग्रेस का प्रान्तीय प्रतिनिधि मंडल पीडित परिजनों से मिलेगा।

जगह-जगह तैनात पुलिस बल।

किसने दे दिया पुलिस को हत्या का अधिकार?

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने अंशू हत्याकांड में मानिकपुर थाने में पूरे थाना पुलिस पर रिपोर्ट दर्ज होने के बाद थाना प्रभारी विनोद शुक्ला, दीवान वीर सिंह व पकडकर लाने वाले सिपाही प्रमोद पासवान व सिपाही अंकित राजपूत को निलम्बित कर दिया है। सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष अनुज सिंह यादव व जिला उपाध्यक्ष नरेन्द्र यादव ने निलम्बन की कार्यवाही को नाकाफी बताते हुए अंशू हत्याकांड में सभी दोषियों की गिरफ्तारी की मांग करते हुए जेल भेजने की मांग की है। कहा है कि पुलिस को किसी निर्दोष की हत्या का अधिकार किसने दे दिया। पुलिस रक्षक की बजाय भक्षक बनती जा रही है। संविधान में सभी को न्याय पाने का अधिकार है।

विभिन्न तिथियों में दिव्यांगों को उपकरण देने को लगेंगे शिविर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने बताया कि 2024-25 में दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग से संचालित कृत्रिम अंग/सहायक उपकरण योजना से विभिन्न अनुमन्य सहायक उपकरण ट्राईसाइकिल, व्हीलचेयर, बैशाखी, कान की मशीन, स्मार्टकेन देने को जिनके हाथ- पैर नहीं है, उनके कृत्रिम अंग लगवाने को पात्र दिव्यांगों का चिन्हांकन शिविर में चयन होना है। पात्र मिलने पर योजना से दिव्यांगों को लाभान्वित किया जायेगा। मंगलवार को उन्होंने बताया कि चिन्हांकन शिविर राजापुर तहसील परिसर में 20 जुलाई को सवेरे दस से चार बजे तक, मानिकपुर ब्लाक परिसर में 22 जुलाई को सवेरे दस बजे से चार बजे तक, रामनगर ब्लाक परिसर में 23 जुलाई को सवेरे दस से चार बजे तक, मऊ ब्लाक परिसर में 24 जुलाई को सवेरे दस से चार बजे तक, कर्वी ब्लाक परिसर में 25 जुलाई को सवेरे दस से चार बजे तक, पहाड़ी ब्लाक परिसर में 26 जुलाई को सवेरे दस से चार बजे तक, तहसील कर्वी परिसर में 27 जुलाई को सवेरे दस से चार बजे शिविर लगेंगे।

जिलाधिकारी ने शिविर के मद्देनजर एसडीएम कर्वी, राजापुर व सभी बीडीओ को निर्देश दिये कि शिविर में सभी व्यवस्था की जाये। दिव्यांगों को पीने को पानी, बैठने को कुर्सी आदि के साथ प्रचार-प्रसार भी करायें, ताकि पात्र दिव्यांगों का चयन कर लाभान्वित किया जा सके।

चार पर मिनी गुण्डा एक्ट से मची हलचल

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही में प्रभारी निरीक्षक राजापुर मनोज कुमार ने भोली-भाली जनता में भय आतंक फैलाकर गुंडागर्दी करने वाले चार लोगों पर मिनी गुण्डा एक्ट लगाया है। मंगलवार को थानाध्यक्ष मनोज कुमार ने रामसुख पुत्र रामसनेही, उमाशंकर पुत्र रामसुख उत्तमपुर, राममुलाम पुत्र देशराज रीठी व सोनू सोनकर पुत्र उमाशंकर कस्बा राजापुर के खिलाफ 110जी सीआरपीसी के तहत कार्यवाही की है। इस कार्यवाही से अराजकतत्वों में हलचल मची है।

अंश विभाजन में न हो कोई गलतीः विधायक

अखंड भारत संदेश

सदर विधायक अनिल प्रधान।

चित्रकूट। सपा से सदर विधायक अनिल प्रधान ने जिलाधिकरी को लिखे पत्र में कहा कि गांवों में खतौनी में अंश विभाजन कार्य हो रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि जल्दबाजी में उनके खाते भूलवश व त्रुटिवश जानबूझकर छोडे जा रहे हैं। खतौनी में किसी खाताधारक का नाम गलती से गलत होने पर नाम सही कराने में तीन से चार वर्ष मुकदमा लडना पडेगा। इस कार्य को पारदर्शिता से कराया जाये, ताकि किसी किसान का खाता व नाम गलत न होने पाये।

मंगलवार को सदर विधायक अनिल प्रधान ने जिलाधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि इस कार्य में भले ही थोडा अधिक समय लग जाये, लेकिन किसी की भूलवश खतौनी संशोधन में गलती न होने पाये। गलती होने पर किसान को बिना मुकदमा लडे खतौनी में त्रुटि सुधार की व्यवस्था नहीं है। इसलिए प्रत्येक खतौनी व खसरा में एक-एक किसान का अंश अथवा रकबा व खाता नम्बर पूरी तरह से सही रखने की व्यवस्था की जाये। इस कार्य में गलती की गुंजाइश न रहे।

उन्होंने सभी मातहत अधिकारियों व कर्मचारियों को साफतौर पर आदेश जारी करने की मांग करते हुए अंश विभाजन में किसी भी किसान के खाता व रकबा तथा नाम गलत न होने पाये।

सीएम को अधिकारियों का बताया रवैया

अखंड भारत संदेश

मुख्यमंत्री से भेंट करते जिलाध्यक्ष व पंकज अग्रवाल।

चित्रकूट। भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी व जिला कोआपरेटिव बैंक चेयरमैन पंकज अग्रवाल ने सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से 5 कालीदास मार्ग स्थित आवास पर भेंट की।

भेंट में उन्हें जिले की समस्यायें व अधिकारियों के रवैये से अवगत कराया। मंगलवार को भाजपा जिलाध्यक्ष व कोआपरेटिव बैंक चेयरमैन पंकज अग्रवाल ने बताया कि सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शिष्टाचार भेंट की है। भेंट में जिले की समस्याओं को बताकर मुख्यमंत्री को जिले में आगमन को आमंत्रित किया है। मुख्यमंत्री ने जिले में पर्यटन की दृष्टि से और क्या हो सकता है- इस बाबत दोनों नेताओं से चर्चाकर सुझाव मांगे। दोनों नेताओं ने पर्यटन बाबत कार्यों के क्रियान्वयन पर जोर दिया। विकास कार्यों को जल्द पूरा कराने को कहा। उन्होंने जल्द चित्रकूट आने का भरोसा दिया।

दाल तो पहले ही हो चुकी गायब

अखंड भारत संदेश

राजापुर/चित्रकूट। सूबे की सरकार अरहर की दाल के बढ़ते मूल्यों पर नियंत्रण करने को कदम उठा रही है। फिर भी महंगाई में लगाम नहीं लग रही। जमाखोरों व मुनाफाखोरों के हौसले बुलंद हैं। अरहर की दाल आम जनता व गरीबों की थाली से दूर हो गई हैं। बाजार में सब्जियों के दाम भी आसमान चूम रहे हैं। मजदूर, गरीब, असहाय सब्जी व दाल देखने को तरस रहे हैं।

दाल दुकान में पसरा सन्नाटा।

मंगलवार को अरहर की दाल 180 रुपये प्रति किलो, मूंग-उड़द व चना की दाल का मूल्य अधिक होने से मजदूर व गरीब तबके के लोग बाजार से नहीं खरीद पा रहे। उनकी थाली से दाल गायब होती जा रही है। दूसरी ओर बाजार में सब्जियों के दामों में भारी वृद्धि होने से गरीब परिवार के लोग सब्जी खाने को तरस रहे हैं। बाजार में प्रतिदिन टमाटर के भाव बढ़ते जा रहे हैं। सोमवार को 80 रुपये किलो तक टमाटर बिक रहा है। भिंडी, नेनुआ, लौकी सब्जियां भी महंगी बिक रही हैं। प्याज, आलू के भाव भी आसमान छू रहे हैं। राजापुर के किसान रामनरेश द्विवेदी, रगौली के हर प्रकाश मिश्रा, खटवारा के मनोज द्विवेदी, सतीश मिश्रा आदि ने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार मोटे अनाजों के उत्पादन में जोर दे रही है। जिले में अन्ना गौवंशों से खरीफ फसलें किसान नहीं बो पाता। मोटे अनाजों का उत्पादन क्षेत्र से गायब होता जा रहा है। प्रदेश सरकार अन्ना गौवंशों पर नियंत्रण व गौशालाओं में संरक्षित गौवंशों के भरण-पोषण की समुचित व्यवस्था नहीं करेगी, तब तक अरहर, ज्वार, बाजरा, मूंग, उड़द आदि मोटे अनाजों की पैदावार होना असम्भव है। सरकार ने अन्ना गौवंशों को संरक्षित करने को प्रधान व सचिव को कड़े निर्देश दिये हैं, निर्देशों का अनुपालन नहीं होता। अन्ना गौवंशों को संरक्षित किया जाये तो मोटे अनाजों का उत्पादन बढ़ सकता है। महंगाई पर नियंत्रण भी हो सकता है। बाजार में बड़े कारोबारी जमाखोरी, मुनाफाखोरी के चक्कर में दालों का भारी स्टाक कर लेने से दालों की कीमतें आसमान छू रही हैं। गरीबों की रसोई से दाल गायब होती जा रही है। दैनिक मजदूरी करने वाले मजदूरों को तो टमाटर की चटनी भी नसीब नहीं हो रही है।

निजी अस्पतालों में डेंगू में प्लेटे कम होना बताकर मरीजों का होता शोषण

इन दिनों जुकाम-बुखार से लोग परेशान

अखंड भारत संदेश

राजापुर/चित्रकूट। राजापुर कस्बे व ग्रामीण क्षेत्रों में सर्दी, जुकाम, बुखार इन दिनों पैर पसार रहा है। खासतौर से छोटे-छोटे बच्चे बुखार की चपेट में हैं। राजापुर कस्बे के प्राइवेट अस्पतालों में डेंगू व प्लेटे कम होने की बात कहकर अंधाधुंध मरीजों का शोषण किया जा रहा है। मंगलवार को जुलाई व अगस्त महीने में कस्बा समेत ग्रामीण क्षेत्रों में बुखार से लोगों का जीना दूभर हो रहा है।

निजी अस्पताल में मरीजों की भीड।

निजी अस्पतालों में लोगों की लम्बी-लम्बी लाइनें देखने को मिल रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के झोलाछाप डॉक्टरों की इन दिनों पौ-बारह है। छोटे-छोटे बच्चों से लेकर युवाओं व वृद्ध भी बुखार की चपेट में आ रहे हैं। राजकीय अस्पतालों में इलाज कराने नहीं जा रहे। प्राइवेट अस्पतालों के डॉक्टरों के शिकार बनकर आर्थिक शोषण को मजबूर हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के झोलाछाप डॉक्टरों के गलत इलाज से कोई गंभीर अवस्था में होता है तो उसे चुपके से प्रयागराज रेफर कर देते हैं। कुकुरमुत्ता की भांति बिना मानक के अस्पतालों का संचालन जोर पकड़ रहा है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ दिनेश कुमार व ओपीडी देख रहे चिकित्सक डॉ प्रमोद कुमार ने बताया कि ओपीडी में 250 से लेकर 300 तक मरीज प्रतिदिन देखे जा रहे हैं। उन्हें हिदायत दी कि घर में साफ-सफाई व जलभराव वाले गड्ढों से पानी हटा दें। डेंगू एडिस मच्छर के काटने से होता है। एडिस मच्छर दिन में काटता है। बचाव को शरीर ढकने वाले कपड़े पहनें। डेंगू के लक्षण अचानक सिरदर्द के साथ तेज बुखार के साथ मांसपेशियों व हड्डियों में दर्द तथा जी मिचलाना व उल्टी होना पाया जाता है। बचाव को पानी ढककर रखें। कूलर-फ्रिज के पानी को बदलते रहें। संक्रामक बीमारियों से बचने को प्रदूषित पानी का प्रयोग न करें। मच्छरों से बचने को मच्छरदानी लगायें।

उन्होने बताया कि वायरल फीवर के मरीजों के खून की जांच में डेंगू, चिकनगुनिया जैसे बुखार के लक्षण नहीं मिले। अधिक समय से आ रहे बुखार से टाइफाइड के कुछ मरीजों में लक्षण मिले हैं। वायरल फीवर बारिश के बाद उमस भरी गर्मी से बीमारियां फैल रही हैं।

बाइक पर चढाया चारपहिया, एक की मौत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर थाने के चिल्लीराकस गांव के मौला (45) व उमेश (25) बड़े भाई की ससुराल मटियार गांव निमंत्रण में गये थे। वहां बड़े भाई के साले अवधेश व बहनोई बाबूलाल से कहा-सुनी हो गई। उन्होंने रास्ते में देख लेने की धमकी दी।

मंगलवार को जब दोनों वहां से निकले तो चारपहिया वाहन से ये उनका पीछा कर लिया। बरुआ मोड के पास चारपहिया वाहन से मोटरबाइक पर चढ़ा दिया। इससे बाइक में बैठे मौला की घटना स्थल पर मृत्यु हो गई। उमेश गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल ने बताया कि बड़े भाई के साले ने जरा सी नोंक-झोक में ये घायल अंजाम दी है। उसने साले व बहनोई पर हत्या का आरोप लगाया।

अर्दली रूम करती सीओ।

सीओ ने विवेचना निस्तारण के दिये निर्देश

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय ने प्रभारी निरीक्षक सरधुवा आशुतोष तिवारी की मौजूदगी में थाना सरधुवा के विवेचकों का अर्दली रूम किया। मंगलवार को सीओ ने अर्दली रूम में विवेचकों से लम्बित विवेचनाओं बाबत चर्चा की। विवेचना लम्बित रखने के कारण पूंछे। जल्द निस्तारण के निर्देश दिये। विवेचकों से कहा कि शिकायती पत्र व आईजीआरएस पत्रों की जांच समय से कर आख्या भेजते रहें। अकारण कोई पत्र लम्बित न रखे।

फलदार पौधों को ले सकते हैं किसानः डीएचओ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला उद्यान अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पांडेय ने जिले के किसानों से कहा है कि वृक्षारोपण के तहत जिला उद्यान विभाग से संचालित राजकीय पौधशाला सपहा में अमरूद, आंवला, नीबू, कटहल, शरीफा, बेल, करौंदा, जामुन आदि फलदार बीजू पौधे निःशुल्क उपलब्ध हैं। इच्छुक किसान अपना आधार कार्ड व खतौनी लेकर राजकीय पौधशाला सपहा से फलदार पौध 20 जुलाई तक ले सकते हैं। मंगलवार को जिला उद्यान अधिकारी ने बताया कि इसी तरह से बागवानी विकास मिशन 2024-25 में मशाला क्षेत्र विस्तार के तहत खरीफ प्याज का बीज कार्यालय में है। इच्छुक किसान आधार कार्ड, खतौनी, बैंक पासबुक की छायाप्रति, फोटो, मोबाइल नंबर व विभाग की पंजीयन जिसमें प्याज की मांग हो- देकर उन्नत किस्म के बीज ले सकते हैं।

एक अगस्त को कमिश्नर लगायेंगे पेंशन अदालत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। चित्रकूटधाम मंडल बांदा आयुक्त बालकृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में एक अगस्त को पूर्वाहन 11 बजे आयुक्त कार्यालय बांदा में मंडलीय पेंशन अदालत व सेवा निवृत्त अध्यापकों-कर्मचारियों के लम्बित देयकों बाबत जनसुनवाई होगी। मंगलवार को पेंशन अदालत बाबत वाद/प्रत्यावेदन निर्धारित प्रारूप में तीन प्रतियों व जनसुनवाई में शिकायती पत्र दो प्रतियों में कार्यालय अपर निदेशक कोषागार व पेंशन चित्रकूटधाम मंडल बांदा में पंजीकृत डाक या व्यक्तिगत 18 जुलाई शाम चार बजे तक भेज सकते हैं। पेंशन अदालत बाबत वाद तथा जनसुनवाई सम्बन्धित शिकायती पत्र की एक प्रति कर्मचारी मूल कार्यालय को देंगे।

अभियान चलाकर टापटेन ऋण धारकों से करायें वसूली

डीएम ने बैठक कर अधिकारियों के कसे पेंच

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने सीएम डैशबोर्ड कर-करेत्तर राजस्व वसूली व चकबंदी कार्यों तथा बाढ़ राहत कार्यों की समीक्षा बैठक में स्टाम्प, वन, आबकारी, खनिज, राजस्व वसूली, नगर निकाय, कृषि, लोनिवि, वाणिज्य कर, मंडी, बांट माप, विद्युत आदि विभागों के लक्ष्य के सापेक्ष वसूली की समीक्षा कर कहा कि शासन से निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष सभी विभाग प्रगति करायें।

मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने उप जिलाधिकारियों से कहा कि विद्युत, बैंक, खनन आदि विभागों की वसूली को बढ़ावा दें। तहसीलदार वसूली पर खास ध्यान दें। संबंधित विभागों के अधिकारियों से कहा कि तहसीलों पर आरसी वसूली को ऑनलाइन करायें। जमा का मिलान करायें। अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक से कहा कि एसडीएम से संपर्क कर बैंक देय वसूली अभियान चलाकर टापटेन ऋण धारकों से वसूली करायें। एसडीएम से कहा कि खनिज अधिकारी व पुलिस क्षेत्राधिकारी तथा एआरटीओ के साथ जांच कर अवैध खनन, ओवरलोडिंग के खिलाफ कार्यवाही करें। उन्होंने चकबंदी कार्यों की समीक्षा कर बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी को निर्देश दिये कि चकबंदी प्रक्रिया जिन गांवों में हो रही है, शासन की मंशानुसार करायें। किसी प्रकार की लापरवाही न करें। सभी

बैठक में निर्देश देते डीएम।

अधिकारियों से कहा कि सीएम डैशबोर्ड में जिन विभागों की रैंकिंग जिन बिन्दुओं पर कम है, वे सभी बिंदुओं पर फोकस कर कार्य करें, ताकि जिले की रैंकिंग अच्छी रहे। राजस्व बाबत लक्ष्य के सापेक्ष शत-प्रतिशत वसूली करें।

जिलाधिकारी ने आईजीआरएस निस्तारण पर सभी विभागों के अधिकारियों से कहा कि शासन की मंशानुसार गुणवत्तापूर्ण समयबद्ध ढंग से करायें। शासन स्तर से भी निस्तारण का फीडबैक लिया जाता है। गलत निस्तारण मिलने पर कार्यवाही होती है। तहसीलों में खतौनियां गलत होने की शिकायत पर कार्यवाही करें। बैठक में सीडीओ अमृतपाल कौर, एडीएम एफआर उमेश चन्द्र निगम, एडीएम न्यायिक राजेश प्रसाद, एसडीएम कर्वी सौरभ यादव, मानिकपुर पंकज वर्मा, राजापुर प्रमोद कुमार झा, मऊ राकेश कुमार पाठक, एसडीएम मोहम्मद जसीम, आलोक सिंह, सतीश चन्द्र, बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी एमएल धर्मान, डीसी राज्य कर विजय कुमार सोनी, एआरटीओ विवेक शुक्ला, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक अनुराग शर्मा, एक्सईएन विद्युत दीपक सिंह, एक्सईएन जल संस्थान डीके सत्संगी, खनिज अधिकारी सुधाकर सिंह, ईओ नगर पालिका लालजी यादव, नगर पंचायत मानिकपुर भारत सिंह, राजापुर बीएन कुशवाहा, मऊ बीके गौतम आदि मौजूद रहे।

22 जुलाई को होंगे बीडीसी उपचुनाव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राज्य निर्वाचन आयोग के क्षेत्र पंचायत सदस्यों के उप चुनाव की अधिसूचना 15 जुलाई के क्रम में जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) शिवशरणप्पा जीएन ने क्षेत्र पंचायत सदस्य के वैधानिक रूप से रिक्त पदों में न्यायालय के स्थगनादेश से बाधित न हो- पर उप चुनाव निर्धारित समय सारणी अनुसार कराने के निर्देश जारी किये हैं।

मंगलवार को उन्होंने बताया कि नाम निर्देशन पत्रों को जमा करने की अन्तिम तिथि 22 जुलाई को सवेरे दस बजे से शाम चार बजे तक, पत्रों की जांच 23 जुलाई को सवेरे दस बजे से कार्य समाप्ति तक, उम्मीदवारी वापसी 24 जुलाई को सवेरे दस बजे से अपरान्ह तीन बजे तक, प्रतीक आवंटन 24 जुलाई को अपरान्ह तीन बजे से कार्य समाप्ति तक, मतदान छह अगस्त को सवेरे सात बजे से शाम पांच बजे तक, मतगणना आठ अगस्त को सवेरे आठ बजे से कार्य समाप्ति तक होगी।जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि रिक्त क्षेत्र पंचायत सदस्यों में रामनगर ब्लाक वार्ड 37 नांदिन कुर्मियान में सदस्य क्षेत्र पंचायत अनुसूचित जाति महिला का चुनाव होना है। क्षेत्र पंचायत सदस्य के रिक्त स्थान में उपचुनाव को प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र का पूर्ण विवरण देते हुए 18 जुलाई को सार्वजनिक सूचना जारी की जायेगी।

नेपाल में नदी में गिरी दो बसों के 65 यात्रियों में से 11 के शव बरामद

काठमांडू। पिछले हफ्ते शुक्रवार को उफनाई त्रिवेणी नदी में गिरी दो बसों के 65 यात्रियों की तलाश में जुटी रेस्क्यू टीम अब तक 11 शव बरामद कर चुकी है। अधिकारियों का कहना है कि यह नारायणी और गण्डकी नदी के आसपास बरामद हुए हैं। रेस्क्यू टीम सोमवार तक 11 शव खोज पाई है।

रेस्क्यू टीम की मॉनिटरिंग कर रहे चितवन के जिलाधिकारी इन्द्रदेव यादव ने कहा कि सोमवार अपराह्न तीन बजे तक 11 शव बरामद किए गए। इनमें से अधिकांश की पहचान हो चुकी है। पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों को शव सौंपे जा रहे हैं। रेस्क्यू ऑपरेशन का नेतृत्व सशस्त्र प्रहरी बल के डीआईजी पुरुषोत्तम थापा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वाटर ड्रोन कैमरे, सोनार कैमरे और बड़े आकार के चुंबकों की की सहायता से गोताखोर बाकी लापता यात्रियों की तलाश कर रहे हैं।

थाईवान को अमेरिकी हथियारों की बिक्री के खिलाफ चीन ने जवाबी कदम उठाए

बीजिंग। थाईवान को अमेरिकी हथियारों की बिक्री से संबंधित हालिया रुझानों के जवाब में चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने सोमवार को आयोजित नियमित संवाददाता सम्मेलन में अपनी बातें रखी।

प्रवक्ता ने कहा कि चीन ने थाईवान को अमेरिकी हथियारों की बिक्री के मुख्य ठेकेदारों और उनके वरिष्ठ प्रबंधकों के साथ-साथ उन सैन्य उद्योग उद्यमों के खिलाफ कानून के अनुसार जवाबी कदम उठाए हैं, जिन्होंने हाल के वर्षों में थाईवान को अमेरिकी हथियारों की बिक्री में भाग लिया है और "थाईवान-अमेरिका रक्षा उद्योग मंच" में भाग लेने के लिए थाईवान गए हैं।

चीनी विदेश मंत्रालय द्वारा 12 जुलाई को जारी सूचना के अनुसार चीन ने थाईवान को हथियारों की बिक्री में शामिल छह अमेरिकी सैन्य-औद्योगिक कंपनियों और पांच वरिष्ठ प्रबंधकों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई की है।

चीनी प्रवक्ता ने कहा कि अमेरिका द्वारा चीन के थाईवान क्षेत्र को हथियारों की बिक्री एक-चीन सिद्धांत और तीन चीन-अमेरिका संयुक्त विज्ञप्तियों, विशेष रूप से "17 अगस्त" विज्ञप्ति का गंभीर उल्लंघन करती है, जो चीन के आंतरिक मामलों में गंभीरता से हस्तक्षेप करती है और चीन की प्रभुसत्ता व प्रादेशिक अखंडता को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाती है।

ट्रंप के 'रनिंग मेट' जेडी वेंस का भारत से जबरदस्त कनेक्शन, हिंदू रीति-रिवाज से रचायी थी शादी

वाशिंगटन: रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के दावेदार पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जेडी वेंस को अपना उपराष्ट्रपति घोषित किया है. जेडी वेंस का जबरदस्त भारत कनेक्शन है. उनकी पत्नी उषा चिलुकुरी वेंस भारतीय मूल की हैं. वह भारतीय मूल्य एवं संस्कृति के गहरायी से जुड़ी हुई हैं. पेशे से वकील उषा भारतीय अप्रवासियों की बेटी हैं. उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि प्रभावशाली है. न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, उनके पास येल विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातक की डिग्री और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री है.

उषा चिलुकुरी ने कानून के क्षेत्र में एक विशिष्ट करियर बनाया है. कवानुघ के न्यायालय में नामांकन से पहले सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जॉन रॉबर्ट्स और ब्रेट कवनुघ के लिए क्लर्क की भूमिका भी निभा चुकी हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, उषा की प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा सैन डिएगो, कैलिफोर्निया के एक उपनगर में हुई. शिक्षा और कड़ी मेहनत पर जोर देने वाली उषा की शैक्षणिक उपलब्धियों में येल जर्नल ऑफ लॉ एंड टेक्नोलॉजी के प्रबंध संपादक और येल लॉ जर्नल के कार्यकारी विकास संपादक के रूप में कार्य करना शामिल है.

येल में चार साल की गहन पाठ्येतर गतिविधि के बाद, उन्होंने कैम्ब्रिज में गेट्स फेलो के रूप में अपनी पढ़ाई जारी रखी. जहां वह वामपंथी और उदारवादी समूहों के साथ जुड़ी रहीं. वह 2014 में एक पंजीकृत डेमोक्रेट थीं. न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, उषा और जेडी वेंस की पहली मुलाकात येल लॉ स्कूल में हुई थी. 2014 में केंटुकी में एक हिंदू पुजारी की उपस्थिति में दोनों ने हिंदू रीति रिवाज ने एक अलग समारोह की अध्यक्षता की थी. उषा और जेडी के तीन बच्चे हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

डोनाल्ड ट्रंप आधिकारिक तौर पर राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार घोषित

न्यूयार्क। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को रिपब्लिकन पार्टी ने एक बार फिर से राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार घोषित किया है। मिल्बाउकी में हुए रिपब्लिकन पार्टी के अधिवेशन में एक के बाद एक राज्य ने ट्रंप के नाम का समर्थन किया। अधिकांश डेलीगेट्स ट्रंप के नाम की तख्ती लेकर उनके नाम का समर्थन कर रहे थे और पूरा सभागार ट्रंप-ट्रंप से गूज रहा था। इसके साथ ही पार्टी में ट्रंप के प्रतिद्वंदी ओहियो के सीनेटर और राष्ट्रपति पद के लिए कोशिश कर रहे जेडी वैंन्स को उप राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार भी घोषित किया गया है।

डोनाल्ड ट्रंप 2016 में हुए राष्ट्रपति पद के चुनाव में जीत दर्ज की थी। वह 20 जनवरी 2017 से 20 जनवरी 2021 तक अमेरिका के राष्ट्रपति रहे थे। अगले चुनाव में वे डेमोक्रेट पार्टी के जो बाइडेन के मुकाबले हार गए थे। हांलाकि तब भी उन्होंने हार स्वीकार नहीं की थी और व्हाइट हाउस खाली करने से पहले वहां जुटे ट्रंप समर्थकों ने हिंसक उपद्रव भी कर दिया था। राष्ट्रपति पद से हटने के बाद पिछले 4 सालों में उनके ऊपर अनेक प्रकार के मुकदमे भी दर्ज हुए, जिसमें सीक्रेट पेपर्स की चोरी से लेकर अवैध संबंधों के चलते एक महिला को पैसे देने का मामला भी चला और सजा भी हुई। इन सबके बावजूद ट्रंप को उम्मीदवारी से रोका न जा सका। दो दिन पूर्व ही ट्रंप पर जानलेवा हमला हुआ और एक गोली उनके कान को छेदते हुए निकल गई।

इस सबके बावजूद अमेरिका में ट्रंप की लोकप्रियता तेजी से बढ़ती जा रही है। इस साल नवंबर माह में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव में रिपब्लिकन ट्रंप का मुकाबला एक बार फिर से डेमोक्रेट पार्टी के जो बाइडेन से हो सकता है। हांलाकि बढ़ती उम्र और उससे जनित लक्षणों के चलते जो बाइडेन की उम्मीदवारी पर संशय बना हुआ है और चर्चा यह भी है कि वर्तमान उप राष्ट्रपति कमला हैरिस भी डेमोक्रेट पार्टी की ओर से उम्मीदवार हो सकती हैं।

जहां तक डोनाल्ड ट्रंप का सवाल है तो पिछले तीन सालों में लगातार संकटों और नकारात्मक चचाओं के केन्द्र में बने रहने के बावजूद उन्होंने संघर्ष जारी रखा और राष्ट्रपति चुनाव आने तक वातावरण उनके अनुकूल बनता दिख रहा है। सोमवार को मिल्बाउकी में उनके उम्मीदवारी पर मुहर लगने से पूर्व ही उनके लिए एक और अच्छी खबर आयी। फेडरेल कोर्ट के एक जज ने उन्हें सीक्रेट पेपर्स की चोरी के मामले में दी गई सजा को रद्द कर दिया।

नेपाल: बस दुर्घटना के मृतक और लापता व्यक्ति के परिवार को 10-10 लाख मुआवजे की घोषणा

काठमांडू। नेपाल में गत शुक्रवार को दो यात्रीवाहक बसों के नदी में गिरकर बह जाने से उनमें सवार जिन यात्रियों की मौत हुई है, सरकार ने उन सभी के लिए मुआवजे की घोषणा की है।

ओली सरकार की पहली कैबिनेट बैठक में मृतकों और लापता व्यक्तियों के परिवार के लिए मुआवजे का निर्णय लिया गया, जिसकी विधिवत घोषणा की गई है। ओली सरकार के प्रवक्ता सूचना तथा संचार मंत्री पृथ्वी सुब्बा गुरूंग ने कहा कि कैबिनेट की बैठक में शुक्रवार को हुई बस दुर्घटना में मृतक और लापता सभी 65 यात्रियों को 10-10 लाख रुपये मुआवजा दिए जाने का फैसला किया गया है। गुरूंग ने बताया कि दुर्घटना के पांच दिन बीत जाने के बाद अब किसी के भी जिन्दा बचने की उम्मीद नहीं है, इसलिए सरकार ने अब तक मिले शवों के अलावा लापता रहे व्यक्ति को भी मृतक व्यक्ति की तरह मुआवजा देने की बात तय की है। सरकार ने दुर्घटनाग्रस्त बस के मलबे को ढूंढने और लापता शव बरामद करने के लिए भारत सरकार से औपचारिक आग्रह करने का भी फैसला किया है। जल्द ही भारत से एक टीम आकर नदी में लापता बस और शवों को ढूंढने में मदद करेगी। नेपाल में उपलब्ध सभी तकनीक का प्रयोग कर पिछले पांच दिनों से शवों को ढूंढने का काम चल रहा है। पानी की गहराइयों में साउंड वाइब्रेशन भेज कर भीतर रहे शवों को ढूंढने का काम भी किया जा रहा है पर कोई खास सफलता नहीं मिल पा रही है। इसी बीच सरकार ने दुर्घटनाग्रस्त बसों में रहे चालक दल सहित सभी यात्रियों का विवरण नाम सहित सार्वजनिक कर दिया है। मृतकों में 7 भारतीय नागरिक भी हैं, जो कि बिहार के मोतिहारी और बेतिया के बताए गए हैं।

पाकिस्तान में सिर्फ इमरान ही नहीं चढ़े बलि, पहले भी कई पार्टियां हुई हैं प्रतिबंधित, जानें पूरा इतिहास

हैदराबाद: पाकिस्तान की राजनीति में एक बार फिर उथल-पुथल देखने को मिल रही है. देश की मौजूदा शहबाज शरीफ सरकार पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी तहरीक-ए-इंसाफ पर प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर रही है. गौरतलब है कि इमरान खान पहले ही जेल में बंद हैं और अब उनकी पार्टी पर राज्य विरोधी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में प्रतिबंध लगाने की तैयारी चल रही है. लेकिन ऐसा नहीं है कि पाकिस्तान में पहली बार किसी राजनीतिक पार्टी पर प्रतिबंध लग रहा हो. इससे पहले भी कई पार्टियों पर प्रतिबंध लग चुका है.

1954 में पाकिस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबंधः पाकिस्तान की पहली कम्युनिस्ट पार्टी वास्तव में भारत के कोलकाता में बनी थी और फिर सीमा के इस तरफ स्थानांतरित हो गई. जुलाई 1954 में, लियाकत अली खान की सरकार को उखाड़ फेंकने के प्रयास के आरोप में पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था.

ऐसा कहा गया कि सीपीपी ने मेजर जनरल अकबर खान द्वारा सैन्य तख्तापलट की महत्वाकांक्षी योजना में अनजाने में शामिल होकर पाकिस्तान में क्रांतिकारी प्रक्रिया को तेज करने की कोशिश की. मेजर जनरल अकबर खान, उनकी पत्नी, कवि फैज अहमद फैज, कई सैन्य अधिकारी और कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं सज्जाद जहीर को हिरासत में लिया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया.

1971 में आवामी लीग पर प्रतिबंधः साल 1970 के चुनावों के दौरान, आवामी लीग ने दो को छोड़कर पूर्वी बंगाल की सभी सीटों पर कब्जा कर लिया. लेकिन मुजीब और भुट्टो के बीच बातचीत ठप हो जाने के कारण निर्वाचित विधानसभा की बैठक नहीं हो सकी. इसके बाद मार्च 1971 में, आवामी लीग पर प्रतिबंध लगा दिया गया.

इसके 160 निर्वाचित सदस्यों में से 76 को देशद्रोही होने के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया. राष्ट्र के नाम एक प्रसारण में, राष्ट्रपति याह्या खान ने कहा कि 'जहां तक?आवामी लीग का सवाल है, यह एक राजनीतिक पार्टी के रूप में पूरी तरह से प्रतिबंधित है.' इसके घोषणा के बाद कई विरोध प्रदर्शन और सैन्य कार्रवाई हुईं.

1971 और 1975 में नेशनल अवामी पार्टीः वली खान के नेतृत्व वाले नेशनल अवामी पार्टी (ठअढ) गुट पर आठ साल में दो बार प्रतिबंध लगाया गया, पहली बार 1971 में याह्या खान की सरकार के दौरान और दूसरी बार 1975 में जुल्फिकार अली भुट्टो की सरकार के दौरान. 1967 में मौलाना भशानी और अब्दुल वली खान के बीच मूल ठअढ में विभाजन के बाद नेशनल अवामी पार्टी का गठन किया गया था.

बांग्लादेश (पूर्व पूर्वी पाकिस्तान) की स्वतंत्रता के बाद वली खान गुट का नाम बाद में नेशनल अवामी पार्टी रखा गया. इसके बाद इसे नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी के नाम से फिर से सामने लाया गया, जिससे इसका नाम बदलकर अवामी नेशनल पार्टी कर दिया गया.

2020 में जय सिंध कौमी महाज-अरिसरः मई 2020 में, आंतरिक मंत्रालय ने सिंध में स्थित एक पार्टी जय सिंध कौमी महाज-अरिसर (खरदट-अ) को दो कथित उग्रवादी समूहों - सिंधुदेश लिबरेशन आर्मी और सिंधुदेश रिवोल्यूशनरी आर्मी के साथ गैरकानूनी घोषित कर दिया था. इस प्रतिबंध यह कहते हुए लगाया गया कि ये संगठन आतंकवाद में शामिल थे. खरदट-अ चीन की बेल्ट एंड रोड पहल की आलोचना करने के लिए प्रसिद्ध था.

2021 के तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तानः 15 अप्रैल, 2021 को पंजाब सरकार ने हिंसक विरोध प्रदर्शनों के बाद टीएलपी पर प्रतिबंध लगा दिया, जिसके परिणामस्वरूप कई पुलिसकर्मियों की मौत हो गई. प्रांतीय सरकार ने प्रतिबंध का अनुरोध किया, जिसे संघीय कैबिनेट ने आतंकवाद विरोधी अधिनियम 1997 के तहत लागू करते हुए मंजूरी दे दी.

अमेरिका का भारत से आग्रह, यूक्रेन युद्ध समाप्त कराने में रूस से अपने संबंधों का उपयोग करे

वाशिंगटन: अमेरिका ने भारत से रूस के साथ अपने दीर्घकालिक संबंधों का उपयोग करने और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से यूक्रेन में अपने 'अवैध युद्ध' को समाप्त करने के लिए कहने का आग्रह किया है. अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने सोमवार को एक प्रेस वार्ता में न केवल भारत-रूस के मजबूत संबंधों का उल्लेख किया, बल्कि भारत से पुतिन से संयुक्त राष्ट्र चार्टर का सम्मान करने के लिए कहने का भी आग्रह किया.

मिलर ने कहा, 'भारत का रूस के साथ दीर्घकालिक संबंध है. मुझे लगता है कि यह सर्वविदित है. हमने-अमेरिका की ओर से बोलते हुए - भारत को रूस के साथ अपने संबंधों, दीर्घकालिक संबंधों और अपनी विशिष्ट स्थिति का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया है. जिससे राष्ट्रपति पुतिन से उनके अवैध युद्ध को समाप्त करने और इस संघर्ष में एक न्यायपूर्ण शांति, एक स्थायी शांति स्थापित करने का आग्रह किया जा सके. व्लादिमीर पुतिन से कहा जा सके कि वे संयुक्त राष्ट्र चार्टर का सम्मान करें, यूक्रेन की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान करें। उन्होंने आगे कहा, 'यही बात हम भारत सरकार पर लगातार थोपते रहेंगे, जो रूस के साथ संबंधों के मामले में हमारा एक महत्वपूर्ण साझेदार है.' मिलर की टिप्पणी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हाल की रूस यात्रा पर मीडिया के एक प्रश्न के जवाब में आई, जिसे यूक्रेनी राष्ट्रपति ने शांति प्रयासों के लिए विनाशकारी झटका बताया था. हाल ही में मास्को की आधिकारिक यात्रा पर गए प्रधानमंत्री मोदी ने वहां रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की और गैर-टैरिफ व्यापार बाधाओं को खत्म करने तथा 2030 तक 100 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का आपसी व्यापार हासिल करने के अपने लक्ष्यों को रेखांकित किया. बैठक के बाद जारी नेताओं के संयुक्त वक्तव्य के अनुसार दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय व्यापार के उदारीकरण पर बातचीत जारी रखने का भी निर्णय लिया। इसमें ईएईयू (एअएव) -भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र की स्थापना की संभावना भी शामिल है. उन्होंने राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग करते हुए द्विपक्षीय निपटान प्रणाली विकसित करने तथा पारस्परिक निपटान के लिए डिजिटल वित्तीय साधनों को लगातार लागू करने पर भी काम करने का निर्णय लिया. रूस में प्रधानमंत्री मोदी को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा रूस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टल द फर्स्ट-कॉल्ड से औपचारिक रूप से सम्मानित किया गया।

नेपाल-भारत सीमा विवाद कूटनयिक तरीके से सुलझाना ओली सरकार की प्राथमिकता: देउवा

काठमांडू। नेपाल की नवनियुक्त विदेश मंत्री डा. आरजू राणा देउवा ने भारत के साथ सीमा विवाद को कूटनयिक तरीके से सुलझाने की बात कही है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा जैसे सीमा विवाद का राजनीतिकरण नहीं किया जाना चाहिए।

विदेश मंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के बाद पत्रकारों को संक्षिप्त प्रतिक्रिया देते हुए डा देउवा ने कहा कि भारत के साथ सीमा समस्या को बिना किसी विवाद के कूटनीतिक तरीके से सुलझाना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि भारत के साथ कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा जैसे सीमा विवाद को दोनों देशों के इतिहास, भूगोल और नई तकनीक जीपीएस के माध्यम से सुलझाने का प्रयास किया जाएगा।

विदेश मंत्री डा आरजू देउवा ने कहा कि पहले की तरह दोनों देशों के सीमा विवाद का पहले की तरह राजनीतिकरण नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत के साथ कूटनीतिक वार्ता के जरिए ही किसी भी विवाद को सुलझाया जाएगा। डा देउवा ने कहा कि नई तकनीक के जरिए अब जीपीएस के जरिए सीमा पर बॉर्डर पिलर रखा जाएगा ताकि भविष्य में किसी प्रकार का विवाद ना हो।

नेपाल ने नदी में गिरी दो बसों और शव ढूंढने के लिए भारत से की मदद की गुहार

काठमांडू। नेपाल ने पिछले सप्ताह नदी में गिरी दो बसों और यात्रियों को खोजने के लिए भारत से मदद करने की गुहार लगाई है। नेपाल सरकार ने भारत सरकार को पत्र लिख कर तकनीकी रूप से सहयोग का आग्रह किया है। नेपाल में नई सरकार की पहली कैबिनेट बैठक में त्रिवेणी बस दुर्घटना पर चिंता व्यक्त की गई। बैठक में भारत सरकार से औपचारिक आग्रह पत्र भेजने का फैसला किया गया। देश के गृहमंत्री रमेश लेखक ने बताया कि भारत से डिजास्टर मैनेजमेंट टीम को नेपाल भेजने का आग्रह किया जाएगा। काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास की सूचना अधिकारी गीतांजलि ने कहा है कि दुर्घटना के बाद से ही दूतावास नियमित रूप से नेपाल सरकार के संबंधित मंत्रालय और अधिकारियों से संपर्क में हैं। उन्होंने कहा कि नेपाल सरकार के मौखिक आग्रह के बाद से ही दिल्ली की डिजास्टर मैनेजमेंट की टीम को स्टैंडबाई पर रखा गया है। नेपाल सरकार ने निर्णय किया है तो जल्द ही भारत की टेक्निकल रेस्क्यू टीम यहां पहुंच कर अपना काम शुरू कर देगी। उल्लेखनीय है कि शुक्रवार को भू-स्खलन की चपेट में आकर दो बसें त्रिवेणी नदी में गिर गई थीं। रेस्क्यू टीम अब तक 11 शव खोज पाई है।

एससीओ अंतर्राष्ट्रीय हरित कृषि उत्पाद एक्सपो और ट्रेडिंग सेंटर का पहला चरण खुला

बीजिंग। एससीओ अंतर्राष्ट्रीय हरित कृषि उत्पाद एक्सपो और ट्रेडिंग सेंटर का पहला चरण चीन के शानतोंग प्रांत के च्याओचो शहर में खोला गया। यह परियोजना एससीओ (शांगहाई सहयोग संगठन) के प्रदर्शन क्षेत्र की श्रेष्ठता का लाभ उठाकर एक कृषि उत्पाद उद्योग पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करेगी, जो कमोडिटी व्यापार, प्रदर्शन विपणन, भंडारण और रसद, प्रौद्योगिकी अनुसंधान और विकास आदि को एकीकृत करता है।

बताया गया है कि एससीओ अंतर्राष्ट्रीय हरित कृषि उत्पाद एक्सपो और ट्रेडिंग सेंटर परियोजना का निर्माण तीन चरणों में किया जाएगा। कुल क्षेत्रफल 16 लाख वर्ग मीटर है।

इसमें ऑनलाइन ट्रेडिंग क्षेत्र, ऑफलाइन ट्रेडिंग मार्केट, कोल्ड चेन स्टोरेज क्षेत्र और व्यापक सहायक क्षेत्र सहित चार कार्यात्मक क्षेत्र शामिल हैं।

परियोजना पूरी तरह से पूरी होने के बाद, वह "इंटरनेट + प्लेटफॉर्म" ऑपरेटिंग मॉडल पर निर्भर करते हुए कृषि उत्पाद उद्योग के लिए एक इंटरनेट मंच, स्पाइसेस का बड़ा डेटा प्लेटफॉर्म और उत्पाद भंडार पर्यवेक्षण डेटाबेस स्थापित करेगी, स्पाइसेस से संबंधित जानकारी की निगरानी, विश्लेषण और प्रकाशन करेगी, साथ ही समय पर उत्पादकों और ऑपरेटरों को व्यापक और विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा।